गीताञ्जली धारा = 5

प्रकृति (पर्यावरण) गीताञ्जली (पुष्प-V)

(प्रकृति-आत्मकथा का वैश्विक रूप)

''पुण्य स्मरण में प्रकाशित''

मातुश्री स्व.-मणिदेवी धूलचन्द जी जैन (रजावत) के पुण्य स्मरण तथा स्व-द्वारा निर्मित दो मञ्जिल के विशाल भवन (मणिदीप) में प.पू. आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव ससंघ के पावन वर्षायोग के मंगल कलश की स्थापना तथा निवास की पुण्य-स्मृति में प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन स्वेच्छा से समर्पित- भक्ति भाव से स्व-द्रव्य से किया।

सौजन्य - सुपुत्र श्री महेन्द्र कुमार जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती शर्मिलादेवी जैन, निवासी सेमारी (राज.)

प्रवासी- ठाणे, मुम्बई मो. **9823442111**

ग्रंथाङ्क - **203** संस्करण - **2011**

प्रतियाँ - **1000** मूल्य - **51/-रु.**

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा,

चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर (राज.) - **313001** मो. **9783216418**

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)

55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) - **313001**

फोन नं. **(0294) 2491422**, मो. **9214460622**

E-mail : nlkachhara@yahoo.com

हृदयोद्‌गार

(विभिन्न कवियों के स्वरुप एवं विभिन्न कविताएँ)

आचार्य कनकनन्दी

भाव को अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा हैं। भाषायें विभिन्न होने पर भी उन सब की दो प्रमुख विधायें होती हैं। यथा (1) गद्यात्मक (2) पद्यात्मक। गद्यात्मक विधा से पद्यात्मक विधा से लिखना तथा गाना कठिन होते हुए भी यह विधा लालित्य, कर्णप्रिय, मनमुग्धकारी, प्रभावउत्पादक, चिरस्मरणीय, लय-ताल-संगीतमय हैं। इस विधा के लेखक को कवि कहते हैं और बोलने/गाने वालो को गायक कहते हैं। सच्चे कवि में विषयज्ञान, भाषाज्ञान, कल्पनाशीलता, भावप्रवणता, प्रेरणा, स्व-परविश्वकल्याण की भावना के साथ-साथ भक्ति /पीड़ा /उत्साह/उत्कंठा आदि विशेष गुण भी होते हैं। आध्यात्मिक सन्त कवि में यह भक्तिआदि स्व-आराध्य के प्रति होती हैं तो प्रकृति प्रेमी कवि मे प्रकृति के प्रति राष्ट्रप्रेमी कवि में राष्ट्र प्रति होती हैं। ऐसा ही अन्यान्य विषयों के कवि के बारे मे जान लेना चाहिए। आध्यात्मिक सन्त कवि/भक्त कवि द्धारा लिखित पद्य को प्रार्थना, स्तुति, भजन, आरती, पूजा, आराधना, कीर्तन आदि कहते हैं। भक्त कवि स्वयं को स्व-आराध्य तथा स्व-आराध्य धर्म के समक्ष क्षुद्र/अल्पज्ञ/असमर्थ मानते जानते हुए भी स्व-आराध्य तथा स्व-आराध्य धर्म के प्रति उनमें जो उत्कृष्ट भक्तिआदि होती हैं उससे वे प्रेरित होकर पद्य आदि की रचना करते हैं। यथा -

स्तुति पुण्य गुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवां स्तुत्यः फल नैश्रेयसं सुखम्।। (99) सहस्त्रनाम

पुण्यमय आदर्श गुणों के कीर्तन/प्रशंसा/गुणगान को स्तुति, अर्चना, स्तुति करने वाला पूजक होता हैं। जिसने कृतकृत्य होकर परम पुरुषार्थ रूप अमृत स्वरूप पूर्णावस्था को प्राप्त कर लिया हैं ऐसे परम ब्रह्मस्वरूप शुद्धात्मा स्तुत्य/पूजनीय हैं। स्तुति, पुजा, प्रार्थना का फल नैश्रेयस सुख है।

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे।
तथापि ते पुण्यगुण स्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरितांजनेम्यः।। (57)

(स्वयंभू स्तोत्र)

हे जिनेन्द्र भगवान् ! आप वीतरागी होने के कारण आपको पूजा से कोई प्रयोजन नही हैं तथा निन्दा करने वालो से आपका किसी प्रकार का वैरत्व नहीं हैं तथापि आपके पुण्यश्लोक, गुणों के स्मरण मात्र से चित्त पवित्र हो जाता है एवं पाप रूपी कलंक दूर हो जाते हैं।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।(14)

वे केवलज्ञानी जिनेन्द्र भगवान् पूजा करने वाले के लिए चैत्य, चैत्यालय और धर्म की रक्षा करने वालों के लिए आचार्य,उपाध्याय और साधुओं के लिए, शैक्ष्य आदि सामान्य तपस्वियों के लिए, देश के लिए, राष्ट्र के लिए, नगर के लिए, प्रजा के लिए, शान्ति प्रदान करें।

यः संस्तुतः सकल वाङ्मय तत्त्व बोधा
दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः
स्तोत्रेर्जगत् त्रितय चित्त हरै रुदारैः,
स्तोष्ये किलाह मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।। (2) भक्तामर स्तोत्र

द्वादशांग वाणी व तत्त्वज्ञान में जो चतुर हैं, ऐसे बृहस्पति द्वारा मनमोहक स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की गई है, अतः मै भी उन आदि प्रभु की निश्चय से स्तुति करूंगा।

बुध्द्या् विनापि विबुधार्चित पाद पीठ,
स्तोतुं समुद्यत मतिर्विगत त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल संस्थितमिन्दुबिम्ब,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।। (3)

हे स्वामी! आपकी सेवा देवों द्वारा की गई है अतः हम भी मन्दबुद्धि होते हुए भी आपकी भक्ति करते हैं। मेरा यह प्रयास वैसा है जैसे - कोई बालक जल में पड़े चन्द्रबिम्ब को अल्पबुद्धि के कारण शीघ्र पकड़ने को दौड़ता है।

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश,

कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृतः।

प्रीत्यात्म वीर्यं मविचार मृगी मृगेन्द्रम्,

नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थम्।। (5)

हे मुनीश ! जिस प्रकार कमजोर हिरणी पुत्र स्नेह के कारण अपने शिशु को बचाने के लिए शक्ति का ख्याल न रखते हुए शेर से लड़ती है, उसी प्रकार मैं भी शक्तिरहित होते हुए भी आपकी स्तुति में प्रवृत्त हो रहा हूँ।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम,

त्वद्भक्ति रेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।

यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,

तच्चाम्र चारु कलिका निकरैक हेतु।। (6)

आपकी स्तुति करने मे मै अल्पज्ञानी हूँ, विद्वानों द्वारा हास्य का पात्र हूँ, लेकिन आपकी भक्ति मुझे बलात् वाचाल बना रही है। जैसे वसन्त ऋतु में कोयल से गुञ्जन कराने के लिए निश्चय से सुन्दर आम्रमञ्जरी ही मुख्य कारण है।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,

मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात्।

चेतो हरिष्यति सतां नलिनी दलेषु,

मुक्ताफल द्युति मुपैति ननूद बिन्दूः।। (8)

जिस प्रकार कमल के पत्ते के प्रभाव के कारण पत्ते पर पड़ी जल की बून्द मोती सी लगती है वैसे ही मुझ अल्पज्ञ के द्वारा किया गया यह स्तवन सज्जनों

के मन को आकर्षित करेगा तो इसमें आपका ही प्रभाव है।

आस्तां तव स्तवनमस्त समस्त दोषं,

त्वत् संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।

दूरे सहस्त्र किरणः कुरुते प्रभैव,

पद्मा करेषु जलजानि विकास भाञ्जि।। (9)

सूर्य की तो बात ही क्या जब उसकी प्रभा से ही सरोवर में कमल खिल जाते हैं, ठीक वैसे ही आपकी स्तुति तो दूर आपकी पवित्र कथा से ही प्राणियों के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

नात्यद् भूतं भुवन भूषण भूतनाथ,

भतैर्गुणेर्भुवि भवन्तमभिष्ठुवन्तः।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,

भूत्याश्रितं य इह नात्म समं करोतिं।। (10)

हे जगभूषण ! प्राणियों के स्वामी ! आपके यथार्थ गुणों की भक्ति करने वाले इस पृथ्वी पर आप जैसे ही हो जाते हैं, इसमें कोई अचरज नहीं। सच्चा मालिक वही हैं, जो अपने आश्रित को स्वयं अपने जैसा बना ले।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणै र्निबद्धा,

भक्त्या मया विविध वर्ण विचित्र पुष्पाम्।

धत्ते जनो य इह कंठगता - मजस्त्रं,

तं 'मानतुंग' मवशा समुपैति लक्ष्मीः।। (48)

हे जिनदेव! नाना रुचि, अलंकार, पुष्पों से गूँथा गया आपका यह पावन स्तोत्र जो व्यक्ति हमेशा भक्ति पूर्वक पढ़ता है, गाता है, याद करता है, उसे नियम से भविष्य में मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त होती है।

बाल्मीकि ने भी मैथुनरत क्रोंच पक्षी की जोड़ी की अवस्था/ व्यथा से द्रवीभूत होकर रामायण की रचना की। यथा-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम शाश्वती समा।

यत्क्राँच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम्।।

48 कोठों के मध्य में राजा द्धारा बन्दी किये गये आचार्य मानतुंग स्वामी ने भक्तामर स्त्रोत, भस्मक रोग से पीड़ित आचार्य समन्तभद्र स्वामी (छद्मवेश में) ने स्वयम्भू स्तोत्र, सर्पदंश से पीड़ित स्व-पुत्र की सूचना प्राप्त करके धनञ्जय कवि ने विषापहार स्तोत्र, कुष्ठरोग से आक्रान्त आचार्य वादीराज स्वामी ने एकीभाव स्तोत्र आदि की रचनाएँ की हैं। उपरोक्त कवियों के द्धारा उत्कट भक्ति पूर्वक स्तुति की रचना एवं स्मरण-गान से उनके स्व-स्व संकट आदि दूर हुए।

मन्त्र विज्ञान, संगीत चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा आदि से भी उपर्युक्त प्रकरण को बल मिलता है। विशेष परिज्ञान के लिए जिज्ञासु मेरी (आ. कनकनन्दी) 1. मन्त्र विज्ञान 2. शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विविध आयाम आदि का अध्ययन करें। निम्न में कुछ संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है।

संगीत- हर व्यक्ति को अलग-अलग स्तर पर सुकून पहुँचाता हैं। ये हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व भावनात्मक पहलुओं में मदद करता है। विज्ञान के अनुसार संगीत हमारे मूड़ को तरोताजा करने में मदद करता है। संगीत थैरेपी किस तरह काम करती है और क्या-क्या फायदा पहुँचाती है, आइए जानते हैं-

अपनाएँ संगीत- जब आप परेशान हों और अच्छा महसूस नही कर रहे होते, तो उदास हो जाते हैं और यह उदासी आपको नकारात्मक सोचने पर मजबूर कर देती है। नकारात्मकता की अवस्था तक पहुँचने से पहले ही आप कोई ऐसा कदम उठाएँ, जो आपको अच्छा महसूस कराने में सक्षम हो। आप संगीत के ज़रिए मन को बहला सकते हैं। जिंदगी को खुशनुमा बनाने में आप खुद सक्षम हैं, ये बात गांठ बांध लें। संगीत सुनने से मन शांत होगा, बशर्ते! आप मन मुताबिक संगीत सुनें। संगीत के साथ-साथ आप कोई वाद्य यंत्र की

सहायता भी ले सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप गिटार बजाना जानते हैं तो तनाव के समय गिटार बजाएँ, आप अच्छा महसूस करेंगे।

संगीत मन को सुकून, शांति और आनन्द देता है। यही सुकून स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक होता है।

बडे काम की थैरेपी-

संगीत हमारे मूड को बदलकर बहुत ही कम समय में तनाव-स्तर (स्ट्रैस लेवल) को घटा देता है। डाक्टरों के मुताबिक संगीत के जरिए हमारी मांसपेशियों को आराम मिलता है और इसी आराम के कारण हम तरोताज़ा महसूस करने लगते हैं। कई परिस्थितियों में संगीत दवा का काम करता है जैसे-

- तनाव, चिंता और बेचैनी कम करने में मददगार होता है।
- यह थैरेपी हर उम्र के व्यक्ति के लिए उपयोगी है।
- मनपसंद संगीत सुनने से हृदय सम्बंधी बीमारियों में सुधार होता है।
- वैज्ञानिक अध्ययनों के मुताबिक संगीत सुनने से डिप्रेशन दूर होता है और बेचैनी दूर होती है।
- संगीत के जरिए ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता बढ़ती है, जो अन्य कार्यों के लिए उपयोगी है।
- संगीत चिकित्सा का प्रयोग सिरदर्द, सर्दी, जुकाम आदि जैसी रोजमर्रा की तकलीफों को दूर करने के लिए भी किया जा सकता है।
- मानसिक रोगियों के लिए भी संगीत काफी चमत्कारी साबित होता है।
- संगीत मैटाबालिज़म को तेज करता है, मांसपेशियों की ऊर्जा बढ़ाता है, श्वास प्रक्रिया पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।
- संगीत के ज़रिए छोटे बच्चों को कोई भी चीज आसानी से याद कराई जा सकती है। आजकल स्कूलों में भी बच्चों को संगीत के ज़रिए पाठ याद कराए जाते हैं।

जब आप कहें हाँ, मन कहे न...

यदि आप चाहते हुए भी संगीत को अपने दैनिक जीवन में शामिल न कर पाएँ, तो एक प्रशिक्षित संगीत चिकित्सक की सहायता भी ले सकते हैं। धीरे-2 आपकी रूचि इस ओर बढ़ती जाएगी। चिकित्सक आपकी परेशानी के अनुसार विभिन्न पहलुओं जैसे शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, सामाजिक, सौंदर्य और आध्यात्म आदि पर कार्य करते हैं। ये आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने और सुधारने में आपकी मदद करेगा। यह प्रक्रिया संगीत थैरेपी की बारीकियों को समझने में सहायक होगी।

कई बार डॉक्टर मरीज़ का दर्द से ध्यान हटाने के लिए संगीत का प्रयोग करते हैं। पश्चिमी देशों में संगीत का इस्तेमाल पार्किंसन व अलजाइमर्स जैसी खतरनाक बीमारियों के इलाज़ में भी होता है।

मदद करे संगीत – विभिन्न प्रकार के संगीत हम पर अलग-अलग तरह से प्रभाव डालते हैं। जब भी हम संगीत या कोई आवाज़ सुनते हैं तो हमारा मस्तिष्क काम करने लगता है। संगीत की कुछ अहम अवस्थाओं को पढ़िए, आप खुद-ब-खुद समझने लगेंगे...

पहला, पैदल चलते समय यदि हम संगीत सुनते हुए चलते हैं, तो हमारी चाल पहले के मुकाबले तेज हो जाती है। इसे मनोरंजन संगीत की श्रेणी में रखा जाएगा।

दूसरा, इसी तरह जब हम उदास या खुश होते हैं, तो अपने मूड के अनुसार संगीत सुनते हैं। खुशी जाहिर करने व दुःख दोनों ही स्थितियों में ये हमारी मदद करता है।

तीसरा, संगीत ध्यान केन्द्रित करने में भी हमारी मदद करता है। इसे एक उदाहरण के जरिये समझिये। एक बार दो बच्चियाँ अपनी दादी के साथ खेल रही थी। उन्होंने जैसे ही एक आदमी के गुनगुनाने की आवाज़ सुनी, वे उसकी ओर देखने लगीं। पहले भी ध्वनि यंत्रों के जरिये लोगों के समूह को संदेश दिये जाते थे।

चौथा, गंध के बाद संगीत ही है, जो हमारी यादों को लौटाकर लाने में सक्षम

है। (मधुरिमा)

कहा जाता है कि भगवान् श्रीकृष्ण की मुरली की मधुर तान सुनकर सारा मधुवन झूम उठता था। गोपिकाओं को अपने काम-धाम एवं तन-मन का ध्यान ही नहीं रहता था। वे अनायास ही उस ओर आकर्षित हो जाती थी, जिधर से मुरली की मधुर स्वरलहरियाँ आ रही होती थीं। तानसेन के दीपक राग गाने से दीपक जल उठते थे और मेघ मल्हार से वर्षा होने लगती थी। उनकी स्वरलहरियों में ऐसा जादू था कि उसके प्रभाव से पौधों में वासंती बहार आ जाती थी। और वे पल्लवित-पुष्पित होने को उत्प्रेरित हो उठते थे। तमिल साहित्य में वर्णन मिलता है कि सुमधुर राग रागिनियों के प्रभाव से गन्ने की न केवल उपज बढ़ जाती है, वरन उसकी मिठास में अभिवृद्धि हो जाती है।

दक्षिण मद्रास के अन्नामलई विश्वविद्यालय के मूर्धन्य वनस्पतिशास्त्री डॉ.टी.सी. ने इस संदर्भ में गहन-अध्ययन-अनुसंधान किया है। संगीत का, विभिन्न राग-रागिनियों का पेड़-पौधों पर क्या प्रभाव पडता है, इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम हाइड्रिला नामक जलीय पौधे का चयन किया। इस पर उन्होंने विद्युत् द्धारा संचालित एक ट्यूनिंग फॉर्क-स्वरित्र की पड़ने वाली लयात्मक ध्वनि के प्रभावों का मापन किया। देखा गया कि इससे पौधे की कोशिकाओं में विद्यमान प्रोटोप्लाज्म-जीवद्रव्य की सक्रियता बढ़ जाती है। यही प्रयोग पौधों की अपेक्षा व पौधे अपेक्षाकृत अधिक बड़े और मजबूत थे, जो वायलिन द्धारा छेड़ी गई मधुर स्वरलहरियों के संपर्क में थे।

उक्त प्रयोग-परीक्षणों से प्रोत्साहित होकर उन्होंने गुलमेहंदी के पौधों पर वायलिन की मधुर संगीत ध्वनि के प्रभाव का व्यापक अध्ययन किया। अपने निर्धारित सुबह के समय पच्चीस मिनट तक नित्य नियमित रूप से यह प्रयोग वे हवादार कमरे में रखे गये गमलों में लगे पौधों पर एक महीने तक करते रहे। तदुपरांत उन गमलों को नियंत्रित गमलों से, जिनमें लगे पौधों को वायलिन की स्वरलहरियों से दूर रखा गया था, एक साथ कमरे से बाहर रख दिया गया। सभी पौधों के समानरूप से पानी तो दिया गया, पर खाद नहीं दी गई। एक माह बाद देखा गया कि दोनों प्रकार के पौधों के पल्लवित, पुष्पित एवं विकसित

होने की दर में बहुत अंतर था। प्रयोग वाले पौधे सामान्य पौधों की तुलना में 62% अधिक हरे-भरे एवं 20% अधिक ऊँचे थे।

इसके बाद उन्होंने अलग-अलग जाति के पौधों पर संगीत के प्रभाव का अध्ययन किया। सूर्योदय से पूर्व ही यह प्रयोग आरंभ होता था और आधे घंटे तक चलता था। इस प्रयोग में विभिन्न रागों एवं वाद्य यंत्रों, जैसे वंशी, वायलिन, हारमोनियम, वीणा आदि का चयन किया गया था और प्रतिदिन सुबह आधे घंटे तक अलग-अलग जाति के पौधों पर भिन्न-भिन्न रागों एवं वाद्य यंत्रों को प्रयुक्त किया गया था। ऊँची फ्रिक्वेंसी वाले 100 से 600 आवृत्ति प्रतिसेकंड वाली चार-पाँच ध्वनि तरंगों को इन प्रयोगों में विशेष रूप से प्रयोग किया गया। गहन अध्ययन अनुसंधानों के उपरान्त उन्होंने अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुये कहा है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि मधुर ध्वनि-तरंगों का प्रभाव पेड़-पौधों की वृद्धि, पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होने, बीज उत्पन्न करने की गति को कई गुना अधिक बढ़ा देता है।

'दि सिक्रेट लाइफ ऑफ प्लांट्स' नामक अपनी कृति में पीटर टोमकिन्स एवं क्रिस्टोफर बर्ड ने पेड़-पौधों पर पड़ने वाले संगीत के प्रभावों का अनुसंधानपूर्ण विवरण प्रकाशित किया है। उसके अनुसार डॉ. सिंह ने सन् 1960 से सन् 1963 तक मद्रास एवं पुड्डुचेरी में धान की पैदावार बढ़ाने के लिए संगीत के प्रभाव का उपयोग किया। पाया गया कि उस अवधि में 25 से 60% तक उपज अधिक हुई। इसी तरह मूँगफली की कृषि की पैदावार सामान्य से 50% अधिक हुई। संगीत के साथ भरतनाट्यम जैसे नृत्य का समावेश करने पर यह अभिवृद्धि और भी अधिक आंकी गई। इन प्रयोगों से प्रभावित होकर इलिनोडस के सुप्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानी एवं कृषि अनुसंधानकर्त्ता जॉर्ज ई. स्मिथ ने मस्का एवं सोयाबीन के पौधों पर संगीत का अध्ययन किया।

दो विभिन्न पादपगृहों में इन पौधों को उगाया गया, जिनके तापमान एवं नमी समान स्तर के थे। एक पादपगृह में एक छोटा टेपरिकॉर्डर रख दिया गया, जिसमें चौबीस घंटे मधुर संगीत बजता रहे। दूसरे पादपगृह को इससे वंचित

रखा गया। इस अध्ययन में पाया गया कि जिस पादपगृह में संगीत की स्वरलहरियाँ हिलोरे मारती रहीं, उसके पौधे जल्दी उगे, बढ़े। उनके तने भी अपेक्षाकृत अधिक मोटे और मजबूत रहे। पत्तियाँ भी चौड़ी थी। इस प्रयोग को कई बार दोहराया गया और हर बार एक समान ही परिणाम निकला। यह भी देखा गया कि उच्च आवृत्ति वाली ध्वनि-तरंगों के प्रयोग से गेहूँ में लगने वाले कृमि-कीटकों से न केवल छुटकारा पाया जा सकता है, वरन् इस तरह से बीज उगते भी जल्दी हैं और बढ़ते भी अधिक हैं। कनाडा के कृषि विभाग में अनुसंधानरत प्रमुख वैज्ञानिक पीटर वैल्टन ने भी अपने विभिन्न प्रयोगों के आधार पर इस तथ्य की पुष्टि की कि अल्ट्रासोनिक ध्वनि-तरंगों के प्रयोग से फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों से बचाया जा सकता है। संगीत की मधुर स्वरलहरियों में प्राणदायिनी क्षमता विद्यमान है। सही ढंग से उसका समुचित प्रयोग करके वांछित सफलता प्राप्त की जा सकती है।

(पृ. 23 अखण्ड ज्योति अगस्त-2011)

किए जाने वाले नये शोध भी यह बताते हैं कि संगीत से कई तरह के रोगों को दूर किया जा सकता है। जैसे भूपाली और माखा राग से आँतों के रोगों में फायदा होता है। रामकली, सारंग, मुलतानी रागों से क्षय रोग दूर होता है। वसंत और सोरठी राग से नपुंसकता दूर होती है और आसावरी राग से सिर के रोग दूर होते हैं। अब इस बात को चिकित्सक भी स्वीकारने लगे हैं कि रोगों के उपचार में संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

छोटे बच्चे को जब माँ अपने सीने से लगा लेती है तो उसका रोना बंद हो जाता है और वह चैन की नींद सो जाता है। माँ की लोरी सुनकर उसे जल्दी नींद आ जाती है। धीरे-धीरे बड़ा होने पर प्रार्थना, पूजा, गीत आदि के माध्यम से वह संगीत से जुड़ा रहता है। संगीत हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जो किसी न किसी रूप में हमें आकर्षित करता है, हमें सुकून व शांति देता है। इसके द्वारा जीवन में आने वाले तनाव को भी दूर किया जा सकता है, किंतु शर्त केवल इतनी है संगीत मद्धम एवं आनंददायक होना चाहिये। सन् 1985 में प्रकाशित शोधपत्र 'जनरल ऑफ म्यूजिक थेरेपी' में मार्क राइजर और फलायट

ने लिखा है- ''संगीत तनाव के लिए जिम्मेदार हॉर्मोन कार्टिसोल की मात्रा को कम करता है, जिससे शरीर तनावमुक्त और शांत होता है।'' इसी तरह डॉ. जॉन डायमंड ने अपनी कृति 'दि लाइफ इनर्जी इन म्यूजिक' में उल्लेख किया है कि सुगम और शास्त्रीय संगीत से मानसिक और भावनात्मक विकार दूर होते हैं। दूसरी ओर आजकल के तेज स्वर में बजने वाला संगीत, जिसे हम सब जॉज एवं पॉप संगीत के नाम से जानते हैं, वह इना अधिक तेज और आक्रामक होता है कि उससे मानसिक तनाव एवं रक्तचाप बढ़ जाता है इसके बाद भी आज इस तरह के शोर बढ़ाने वाले संगीत का बोलबाला है।

संगीत रोगों को दूर करने में सहायक है, लेकिन यदि संगीत रोगी के मूड के मुताबिक न हो तो उसका विपरीत असर भी होता हैं, जैसे दुखी मनुष्य को दुःख भरा गीत सुनाने से उसका दुःख और बढ़ जाता है, उच्च रक्तचाप से ग्रसित व्यक्ति को उच्च स्वर का तेज संगीत तकलीफदेह होता है। आजकल हाइवे पर कई तरह की दुर्घटनाएँ हो रही हैं। इनके कारणों को यदि तलाशा जाए तो स्पष्ट होगा कि हाइवे पर ट्रैफिक, प्रदूषण शोर-शराबा अधिक होता है। तेज आवाज में वाहनचालक धीरे-धीरे इतना तनावग्रस्त हो जाता है कि उसका रक्तचाप बढ़ जाता है, वाहन की गति उसके नियंत्रण में नहीं रहती और दुर्घटनाएँ हो जाती है।

संगीत के विपरीत असर के संबंध में ओलम्पिया म्यूजिकल हॉल पेरिस की एक घटना है। इस हॉल में एक संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें काफी संख्या में संगीतप्रेमी उपस्थित थे। हॉल में हलका-हलका संगीत बज रहा था, जिसके साथ लोग कदमताल कर रहे थे। इस संगीत में वे सभी धीरे-धीरे डूब रहे थे। संगीत मानों उन पर जादू डाल रहा था। अचानक धुन बदल दी गई। यह धुन इतनी आक्रामक थी कि लोगों ने अपना आपा खो दिया और पागलों की तरह इधर-उधर भागने-दौड़ने लगे। धीरे-धीरे मारपीट का सिलसिला शुरू हो गया। थोड़ी देर बाद धुन बंद कर दी गई और वहाँ उपस्थित लोगों से माफी माँगी गई। लोगों को इस बात का आश्चर्य हुआ कि आयोजक श्रोताओं से माफी माँग रहा है। बाद में पता चला कि धुन को एक

प्रयोग की तरह बदला गया और उसका असर देखा गया। यह आक्रामक धुन खासकर इसलिये ही बजाई गई थी, ताकि लोगों पर इसका असर देखा जाए।

पॉप संगीत मानव मस्तिष्क को उत्तेजित करता है और पाचनतंत्र को भी प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त यह संगीत मानव की ऊर्जा को क्षीण करने में भी सहायक होता है। पॉप संगीत में गायक चीखता है, चिल्लाता है, यहाँ तक कि बुरी तरह से रोता भी है और आश्चर्य की बात यह है कि कोई-कोई श्रोतागण तो उसे सुनकर बेहोश तक हो जाते हैं। दूसरी ओर संगीत हृदय के तारों को झंकृत करता है, हलका सा सुकुन देता है और मन को विश्रांत करता है। तानाशाह मुसोलिनी एक बार अनिद्रा के रोग से पीड़ित था। लोगों ने उसे संगीत से इसका उपचार करने की सलाह दी, परंतु वह इस चिकित्सा पर विश्वास न कर सका, किंतु पीडित ओंकारनाथ ठाकुर के शिष्यों ने एक बार उससे इस चिकित्सा का प्रयोग करने का आग्रह किया। बाद में इसी संगीत चिकित्सा से मुसोलिनी का अनिद्रा रोग दूर हुआ। संगीत का जिक्र होने पर बैजूबावरा और तानसेन का नाम सहज ही याद आता है; क्योंकि उनके गाये गये गीतों का असर होता था। मल्हार राग से बारिश का होना और दीपक राग से दीयों का जल जाना, यह किंवदंती आज भी लोगों की जुबान पर है।

भारतीय संगीत विविध विकारों का शमन करता है; क्योंकि यह पूर्ण रूप से मनोनुकूल है और इसका आधार सप्त स्वर है। हमारे संगीत में विविध राग विभिन्न जड़ी-बूटियों के समान असरदार होते हैं, जैसे बुखार दूर करने के लिये मालकौस राग, चर्म रोग ठीक करने के लिए देस एवं मल्हार राग, एसिडिटी दूर करने के लिए, कलावती राग, मधुमेह के उपचार में जयवंती एवं जौनपुरी राग, मानसिक तनाव दूर करने के लिये ललित एवं नंद राग, घबराहट दूर करने के लिये अहीर-भैरव राग, हृदय रोग के उपचार में भैरवी व शिवरंजनी राग, अस्थमा के उपचार में यमन नेत्र रोग के उपचार में वसंत बहार राग सहायक है।

भारतीय संगीत हृदय को परमात्मा के साथ जोड़ता है। इसे सुनकर व्यक्ति ध्यानमग्न होता है, उसका मन शांत हो जाता है। वैज्ञानिक के अनुसार

संगीत सृजनात्मक प्रवृत्ति है और सुनने वाला यदि ध्यान से सुने, तो ही उस पर उसका असर होता है। संगीत को श्रोता ही जीवन्त बनाते हैं। इसके संसर्ग से श्वसन क्रिया में परिवर्तन आता है। ब्रेन स्केन के द्धारा बताया गया है कि संगीत रीढ़ की हड्डी में भी कम्पन्न पैदा करता है। प्रसूति और सर्जरी की पीड़ा कम करने और स्मृति को ताजा रखने के लिए संगीत का उपयोग समय-समय पर किया जाता है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के प्रारम्भ में यूरोप में संगीत से उपचार की शुरूआत की गई और वहाँ मानसिक रोगियों को संगीत की लहरियों से ठीक किया जाने लगा। सन् 1926 में डिप्रेशन और टेंशनजनित रोगों के लिए म्यूजिक थेरेपी का सहारा लिया गया। द्धितीय विश्वयुद्ध की विभिषिका से प्रभावित रोगियों के उपचार के लिए अमेरिका के कई वेटरन एडमिनिस्ट्रेशन हॉस्पिटल में म्यूजिक थेरेपी का सहारा लिया गया।

'दि हीलिंग फोर्स ऑफ म्यूजिक' के लेखक आर.मैकलीन ने यह दावा किया है कि भारतीय संगीत दिव्य औषधि का काम कर तन, मन और मस्तिष्क में जागृति भर देता है। यह श्रद्धा के उन भावों को जागृत करता है, जिनकी तरंगे अन्तरिक्ष में स्थित देव शक्तियों को कृपा बरसाने के लिए आकर्षित करती हैं।

बायोकेमिकल सिद्धांतों के अनुसार संगीत मानव शरीर क्रिया विज्ञान पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। यह प्रभाव मस्तिष्क के सेरिब्रल कॉर्टेक्स और ऑटोनॉमिक नर्वस सिस्टम के माध्यम से पड़ता है। संगीत की लहरियाँ कान में प्रवेश करने के बाद इलेक्ट्रिकल नर्व इंपल्स के रूप में तब्दील होकर न्यूरल नेटवर्किंग के माध्यम से सेरिब्रल कॉर्ट्रेक्स में पहुँचती हैं। स्वरलहरियों की यह यात्रा सबकॉर्टेक्स से होकर लिबिक सिस्टम और ऑटोनॉमिक नर्वस सिस्टम के माध्यम से सारे शरीर में प्रसारित होती है। न्यूरोसाइकोलॉजिस्ट एवं संगीत विशेषज्ञ डॉ. मेनप्रेड क्लिनीस के अनुसार संगीत ध्वनि न्यूरोपेप्टाइड्स और मेटाबॉलिक प्रक्रिया को प्रभावित करती है। इससे हृदय की मांसपेशियों की हरकतों में गुणात्मक परिवर्तन होता है और इसीलिए संगीत हृदय को स्वस्थ

रखने की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

उपचार करने के साथ-साथ एकाग्रता बढ़ाने में भी संगीत प्रभावशाली है। इस संदर्भ में यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन ने एक शोध किया, जिसमें 25 हजार से अधिक स्कूली छात्रों को शामिल किया गया। उन्होंने पाया कि जिन छात्रों ने पढ़ाई के अलावा संगीत सुना या कोई साज बजाया, उनमें सवाल हल करने की क्षमता उन छात्रों की अपेक्षा कहीं अधिक थी, जिन्होंने ऐसा बिल्कुल नहीं किया।

आज अधिकतर किशोर इस बात में यकीन नहीं करते कि म्यूजिक पढ़ाई से ध्यान हटाता है। वास्तव में ज्यादातर किशोरों की आदतों में शुमार है। आज के समय में यह कहना बिलकुल गलत होगा कि पढ़ाई के दौरान छात्र यदि संगीत सुनते हैं तो वे पढ़ाई नहीं कर पाते। अतः यदि वे पढ़ाई के दौरान ब्रेक लेते हैं और कोई म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेन्ट्स बजाते हैं या फिर लाइट म्यूजिक सुनते हुए पढ़ने की आदत डालते हैं तो इससे वे काफी तरोताजा हो सकते हैं, क्योंकि संगीत हमारे शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य में अभिवृद्धि करता है। इसका प्रयोग करके हम अपने विकारों से छुटकारा पा सकते हैं तथा स्मरण शक्ति को बढ़ा सकते हैं। भारतीय सुगम एवं संगीतलहरियों का आनंद हम सभी को उठाना चाहिये।

इन रचनाओं की आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा

मैं (आचार्य कनकनन्दी) बाल्य विद्यार्थी अवस्था से ही विभिन्न भाषाओं की देश-विदेशों की प्राचीन से लेकर आधुनिक आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, प्राकृतिक, क्रान्तिकारी कविताओं को पढ़ता-सुनता आ रहा हूँ जिसमें से श्रेष्ठ कविताओं का प्रभाव मेरे जीवन में प्रेरणास्पद है। कुछ वर्षों से हिन्दी सिनेमा के कुप्रभाव तथा कुछ कुकवियों के कारण विशेषतः हिन्दी कविता के स्तर में गिरावट हुई है और हो रही है। ऐसा ही प्रादेशिक भाषाओं की कविताओं में भी कुछ गिरावट हो रही है। जिसका कुप्रभाव भारतीयों के ऊपर पड़ रहा है, इससे भी मुझे पीड़ा हो रही है और श्रेष्ठ कविताओं की

आवश्यकता को अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो मैं विद्यार्थी जीवन से ही विदेशी साहित्य आदि का अध्ययन कर रहा हूँ परन्तु 2000 से विदेशी वैज्ञानिक चैनलों का विशेष अध्ययन कर रहा हूँ। इससे विदेशी वैज्ञानिकों की उदारता, व्यापकता, प्रगतिशीलता, अहिंसा, शान्ति, पर्यावरण सुरक्षा, निष्पक्षता, निडरता, नम्रता, जिज्ञासा, सहज-सरलता आदि से मुझे प्रेरणा मिल रही है। 2010 को हमारा ससंघ का चातुर्मास सीपुर अतिशय क्षेत्र में हुआ। वहाँ के एकान्त, शान्त, स्वच्छ, शुद्ध वातावरण में मेरी उपरोक्त आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा ने मूर्तरूप लेकर इन कविताओं को रचा है। कविताओं के रागों को सही रूप देने में संघस्थ साधु-साध्वी, ब्रह्मचारिणियों का महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है। इन सबको, अर्थसहयोगियों के मेरा यथायोग्य प्रतिनमोऽस्तु, आशीर्वाद है। प्रस्तुत कृति में कुछ कविताओं का प्रकाशन हो रहा है। शेष कविताओं का प्रकाशन आगामी कृतियों में शीघ्र होगा। इन सब कविताओं के माध्यम से स्व-पर-विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति-शान्ति हो, ऐसी शुभ मंगल कामनाओं के साथ-

विशेष सूचनाः- किसी भी कविता में राग सम्बन्धी तृटियाँ हो तो सदाशयता से राग विशेषज्ञ उसे संशोधित करते हुए गायेंगे एवं हमें सूचित करेंगे।

-आचार्य कनकनन्दी

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव की विशेषता

वन्द्य चरण जिनके...

प्रस्तुति - मुनि सुविज्ञसागर

(तर्जः ज्योति कलश छलके...)

वन्द्य चरण जिन के... 2
जिनके सन्मुख विश्व हुआ है, नतमस्तक मन से...
वन्द्य चरण जिनके... 2
अध्यातम की ज्योति जलाएँ, धर्म-दर्श-विज्ञान मिलाएँ
घट-घट में सबके... 2 वन्द्य चरण जिनके...

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, दिक्-श्वेताम्बर जैनी भाई
आकर शोध करें...2 वन्द्य चरण जिनके...

देश-विदेश में जाकर प्रतिनिधि, गुरुवर का अभियान प्रचारें
भावे तन-मन से...2 वन्द्य चरण जिनके...

वैश्विक दृष्टि सब अपनाएँ, ऐसी भावना है गुरुवर की
'सुविज्ञ' कहे मन से...2 वन्द्य चरण जिनके...

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय एवं गीत क्रमाँक	पृ.क्र.

परिच्छेद - I

प्रकृति की हर इकाई हमें सिखाती है!

1.	छोटी बातों को तुच्छ न मानो (श्रेष्ठ व्यक्ति बनने के मन्त्र) (1)	22
2.	कमल हमें सिखाता है (2)	22
3.	प्रकृति से सीखता है मानव भी ज्ञान! (3)	23
4.	प्रकृति का शोषण किया न करो (4)	25
5.	छहों ऋतु की महिमा (कविता व श्लोगन रूप में- प्रकृति गीत) (5)	26
6.	जनसंख्या वृद्धि शहरीकरण की आपदाएँ तथा मुक्ति के उपाय (पर्यावरण सुरक्षा गीत) (6)	27
7.	प्रकाश हमें सिखाता (7)	29
8.	अणु हमें शिक्षा देता! (अनन्त शक्ति सम्पन्न परमाणु से परमात्मा तक) (8)	30
9.	आकाश हमें सिखाता है (9)	31
10.	वायु हमें शिक्षा देती (10)	32
11.	हे कृतघ्नी मानव! कृतज्ञी बन (वृक्षादि के मानव के प्रति उपकार) (पर्यावरण सुरक्षा गान) (11)	32
12.	प्रकृति के सम हम भी सेवा करें (शिक्षा सम्बन्धी कविता) (12)	34
13.	वनस्पति (वृक्षों की महिमा) (13)	35
14.	धरती तेरा उपकार अपार (14)	36
15.	नदी हमें सिखाती है! (प्रकृति की कविता) (15)	36

16. अग्नि हमें सिखाती है! (प्रकृति की कविता) (16) 38
17. अमृत पानी का सदुपयोग करो (17) 38
18. प्रतीकों से शिक्षा लेकर सत्य की प्रतीति करो (18) 39
19. पोषक प्रकृति का शोषण न करो (19) 41
20. प्राकृतिक जीवनचर्या से विश्व मानव सुखी
बने (सर्व जागरण प्रभावी गीत) ऑल मिक्स साँग (20) 42
21. प्राकृतिक संगीत एवं नृत्य (विभिन्न भाषा युक्त प्रकृतिगान) (21) 43
22. अति ही ही विचित्र कर्म (22) 45
23. मानव अनावश्यक पापकार्य अधिक करता! (23) 46
24. धार्मिक बनो किन्तु कट्टर नहीं (24) 48
25. कार्य है भाव का प्रतिबिम्ब (व्यावहारिक लेश्यामनोविज्ञान)(25) 48

परिच्छेद - II

आत्मकथा (आत्मकथा के रहस्य एवं प्राप्त शिक्षाएँ)

26. जीव मेरा नाम है! (जीव की आत्मकथा) (1) 51
27. शिल्पी मेरा नाम है (शिल्पी की आत्मकथा)
(शिल्पी का काम, योगदान एवं दुर्दशा) (2) 52
28. साहित्य मेरा नाम है (साहित्य की आत्मकथा) (3) 54
29. कन्या भ्रूण हत्या की आत्मकथा (4) 55
30. गो माता की व्यथा गाथा (गो माता की आत्मकथा) (5) 58
31. कृषक की आत्मकथा तथा आत्महत्या!
(अन्नदाता कृषक आत्महत्या न करे तो कैसे?) (6) 60
32. छोटी तुच्छ घास हूँ!(घास की आत्मकथा)
(प्रकृतिवादी-रहस्यवादी कविता) (7) 61
33. वर्षा मेरा नाम है (वर्षा की आत्मकथा) (8) 63

34. तम्बाकू की आत्मकथा (व्यंगात्मक पद्धति से) (विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 31 मई के उपलक्ष्य में) (9) 65

35. मिट्टी के बर्तन की आत्मकथा (अहिंसक, स्वास्थ्यप्रद, पर्यावरण के अनुकूल मिट्टी के बर्तन) (10) 66

36. मधुप मेरा नाम है (मधुमक्खी की आत्मकथा) (11) 68

37. कोयल मेरा नाम है (कोयल की आत्मकथा)(Eco friendly song) (पक्षी एवं प्रकृति प्रेम की कविता) (12) 70

38. मैं हूँ अकाजकारी गृहिणी (गृहिणी की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा) (13) 71

39. बरगद (वटवृक्ष) की आत्मकथा (14) 73

40. अर्थ (धन) की आत्मकथा (अर्थ अनर्थ एवं अर्थ भी है) (15) 74

41. लेखक की आत्मकथा (सुलेखक-कुलेखक का स्वरूप) (16) 76

42. अनुशासन की आत्मकथा (अनुशासन के विविध रूप, पालन से लाभ तथा भंग से हानि) (17) 77

43. डॉक्टर (वैद्य) की आत्मकथा (ईश्वरीय डॉक्टर एवं डाकू सम डॉक्टर) (डॉक्टर्स डे 1 जुलाई के उपलक्ष्य में) (18) 78

44. सेवक की आत्मकथा (सेवाधर्म की महत्ता एवं उसका फल) (19) 79

45. मछली की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा (20) 81

46. विद्यार्थी की आत्मकथा (आध्यात्मिक विद्यार्थी से लेकर लौकिक विद्यार्थी तक) (21) 83

47. भोला की आत्मकथा (सरल स्वभावी का स्वरूप एवं फल) (सम्यक्त्व प्राप्ति हेतु भद्रपरिणामी स्वरूप) (22) 84

48. कुम्भकार की आत्मकथा (प्राकृतिक स्वदेशी उपकरण की उपयोगिता)(23) 86

49. शिक्षक की आत्मकथा (प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षक से

लेकर वर्तमान के लौकिक शिक्षक तक) (24) 88
50. पुष्प की आत्मकथा (पुष्प के विविध गुणधर्म) (25) 89
51. रूपये की आत्मकथा (अर्थ से अनर्थ एवं सार्थक काम) (26) 90
52. नेता की आत्मकथा (विविध प्रकार के नेता का स्वरूप) (27) 92
53. मृत्यु की आत्मकथा (मृत्यु की विभिन्न अवस्थाऍं
तथा अमृत अवस्था)(28) 93
54. आत्मानुभवी की आत्मकथा (आत्मानुभव की महिमा)
(मेरा लक्ष्य एवं अनुभव एवं संसार की प्रवृत्ति) (29) 95
55. भूख की आत्मकथा (भूख का स्वरूप एवं
उसकी शान्ति के सत्-असत् उपाय) (30) 97
56. न्यायाधीश की आत्मकथा (योग्य न्यायमूर्ति एवं
अयोग्य न्यायमूर्ति का स्वरूप) (31) 98
57. स्व माता-पिता से बच्चों की करुण प्रार्थना 100
वर्तमान के बच्चों की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा (32) 100

परिशिष्ट

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव के संघ की नियमावली 102
आचार्य श्री कनकनन्दी-साहित्य कक्ष की सूची 106

राग संशोधन के सहयोगीः-

1. मुनि सुविज्ञसागर
2. मुनि आध्यात्मनन्दी
3. आर्यिका क्षमाश्री माताजी
4. ब्र. फाल्गुनी दीदी
5. ब्र. विधि दीदी
6. कनकप्रभा
7. वन्दना
8. अर्चना/जयपुर तथा सहयोगी
9. ब्रजलालजी चन्दावत, मु. सेमारी

मो. 9460446108, 9636098559

परिच्छेद - 1

प्रकृति की हर ईकाई हमें सिखाती है!

छोटी बातों को तुच्छ न मानो (1)

(श्रेष्ठ व्यक्ति बनने के मन्त्र)

(तर्ज - इक परदेशी मेरा दिल ले गया... नदी के किनारे श्याम...)

छोटी छोटी बातों को तुच्छ न मानो, छोटे छोटे काम को हेय न मानो
छोटे छोटे समयों से युग बन जाते हैं, छोटी छोटी बून्द से सिन्धु बन जाता है
छोटे छोटे अणु से ब्रह्माण्ड भी बना है, छोटे छोटे कर्मरज जीव को बान्धे हैं...।।टेक।।

छोटे छोटे भी अच्छे काम किया ही करो, छोटे छोटे बुरे काम किया न करो
छोटे छोटे अनाज से भूख शान्त होती है, विष की छोटी बून्द से मृत्यु हो जाती
छोटे छोटे पद से ग्रन्थ बन जाता है, छोटी छोटी बातों से युद्ध हो जाता है... (1)

अक्षर अक्षर से ज्ञानी बन जाते हैं, छोटी छोटी रेत से तट बन जाते है
रेशा रेशा मिलकर वस्त्र बन जाता है, ईंट ईंट मिलकर घर बन जाता है
कदम कदम से लक्ष्य प्राप्त होता है, रेशा की रस्सी से हाथी बान्धा जाता है... (2)

क्षण क्षण से दीर्घ आयु बनी होती है, क्षण क्षण क्षय से मृत्यु (क्षय) भी होती है
छोटे छोटे गुणों से गुणी बन जाते हैं, छोटे भी दुर्गुण से दुर्दशा होती है
छोटा भी है बीज बड़ा वृक्ष बन जाता है, छोटा भी भ्रूण महानर बन जाता है... (3)

छोटे छोटे गुणों को जो ग्रहण किया रे, छोटी छोटी बातों से शिक्षा जो लिया रे
छोटे छोटे क्षणों का उपयोग किया रे, छोटे छोटे दोषों को दूर जो किया रे
संसार में श्रेष्ठ व्यक्ति (महामानव) वह ही हुआ रे, 'कनकनन्दी' को यह ही भाया रे...(4)

कमल हमें सिखाता है (2)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

कमल हमें सिखाता है निर्लिप्त बन,
पापियों के मध्य में भी पावन बन।

देह में रहते भी विदेही बनता चल,
दुःख के मध्य में भी सुखी बनता चल।।...(धत्ता/स्थायी)
कष्ट की प्रखर/(तीक्ष्ण) रश्मि में खिलखिलाता चल,
दुष्टों के वाक् बाण से अभेद्य (अछेद्य) बन।
गुण रूपी भ्रमर को आकर्षित कर,
शान्ति रूपी सुगन्धी को फैलाते चल।। (1)
दिल में कोमलता को धरता चल,
कोमलता से दूसरों को जीतता चल।
स्निग्ध व्यवहार से स्नेह विस्तारो,
स्नेह में भी अनासक्ति भाव को धरो।। (2)
कमल के कन्द से गुण सञ्चय सीखो,
गुप्त रहकर भी गुण विस्तार करो।
मृणाल से सीखो गुण वृद्धि करना,
जनता (भीड़) जल से आगे ही रहना/(बढ़ना)।। (3)
कमलदल से यह गुण सीखो,
संसार जल में तैरता चलो।
'कनकनन्दी' यह शिक्षा लेता है,
जल से कमल भिन्न मुझे भाता है।। (4)

प्रकृति से सीखता है मानव भी ज्ञान! (3)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया तूने...)

प्रकृति से सीखता है मानव भी ज्ञान,
आसन गाना नृत्य कला व विज्ञान (राग/नृत्यगाना)
इसलिए प्रकृति भी मानव के गुरु हैं
भरण-पोषण कर्त्ता भी औषधि के गुरु है...(स्थायी/टेक)

पद्मासन गवासन सर्पासन आदि,
सारेगामापाधानिसा संगीत आदि।

मयूर घोड़ा के नृत्य सर्प व सर्पिणी
ड्रेगन पाराडाइज मार्शल नृत्य/(आर्ट) आदि।।...प्रकृति।।...(1)

विभिन्न कलाकृतियाँ प्रकृति से सीखा है,
झोपड़ी के चित्र/(कला) से पिरामिड की कला है।
कागज के चित्र से ताजमहल की कला है,
पशु-पक्षी पतंग पुष्पलता की कला है।।...प्रकृति।।...(2)

प्राचीन आयुर्वेद के शल्य यन्त्र आदि,
राइट ब्रदर के विमान रोबर्ट है आदि।
प्रकृति से शिक्षा ले बने हैं यन्त्रादि,
विज्ञान के मूल में प्रकृति है आदि।।...प्रकृति।।...(3)

प्रकृति के कवि तो प्रकृति से सीखते,
शब्द की रचना वे कविता में लिखते
कलाकार संगीतज्ञ प्रकृति से सीखते,
अपनी रचना में उसे समावेश करते।।...प्रकृति।।...(4)

इसीलिए प्रकृति प्रेमी होते हैं महाजन,
प्रकृति की प्रवृत्ति से करते है ज्ञानार्जन।
इसीलिए तीर्थंकर बुद्ध कवि ऋषि,
प्रकृति प्रेमी वैज्ञानिक प्रकृति निवासी।।...प्रकृति।।...(5)

भूकम्प सुनामी अतिवृष्टि अनावृष्टि,
इनके पूर्वाभास देते पशु-पक्षी आदि।
इनसे ज्ञान करते भविष्य के ज्ञानी,
इनके सम विज्ञानी नहीं आधुनिक ज्ञानी।।...प्रकृति।।...(6)

तथापि कृतघ्न मानव उसका करता है हनन,
सेवा व शिक्षा बदले करता है शोषण।
इसलिए प्राकृतिक प्रकोप आते हैं,

धन जन मकान के नाश भी होते हैं।।...प्रकृति।।...(7)

कृतघ्न न बनो मानव कृतज्ञ बनो है,
उपकार के बदले सेवा ही करो है।
सेवा का फल तुम्हें मिलेगा है मेवा,
क्रिया की प्रतिक्रिया सदा ही सर्वदा।।...प्रकृति।।...(8)

'कनकनन्दी' भी सीखता है प्रकृति से ज्ञान,
नैतिक शिक्षा से वैज्ञानिक ज्ञान।
इसलिए प्रकृति गुरु को हनन न करो,
प्रकृति की रक्षा से तुम्हारी सुरक्षा है।।...प्रकृति।।...(9)

प्रकृति का शोषण किया न करो (4)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया तूने...)

प्रकृति का शोषण किया न करो
पर्यावरण प्रदूषण फैलाया न करो।।
वृक्ष पशु-पक्षी की हत्या जब होती है,
खान की खुदाई से प्रकृति की हत्या है।
मछली की हत्या से प्रकृति रोती है,
यान वाहन फैक्ट्री से प्रदूषण होता है।।(टेक)
इन्हीं कारणों से विविध प्रदूषण होते हैं,
वायु शब्द मृदाजल रेडियेशन होते हैं।
प्रदूषणों से विभिन्न रोग भी होते हैं,
दमा,श्वास, पीलिया, कैंसर होते हैं।।
प्राकृतिक असन्तुलन जब भी होता है,
भूकम्प सुनामी ग्लेशियर क्षय होते हैं। (1) प्रकृति...
अतिवृष्टि अनावृष्टि ताप वृद्धि होती है,
हिमपात भूस्खलन अन्नाभाव होते हैं।

प्रकृति शोषण की प्रतिक्रिया होती है,
पाप के फल से पतन ही होता है।।
जैसा बोया वैसा पाया प्रकृति की नीति है,
मानव कुकृत्य की प्रतिक्रिया नीति है। (2) प्रकृति...
प्रकृति माता का स्तनपान तो योग्य है,
प्रकृति माता को शोषण अयोग्य है।
पोषण के अनुसार दोहन योग्य है,
शक्ति के अनुसार वहन योग्य हैं।।
''कनकनन्दी'' की भावना सदा है,
प्रकृति का शोषण न होवे कदा है।। (3) प्रकृति...
सेमारी 10-4-2011, रात्रि- 12:25

''छहों ऋतु की महिमा''(5)

(तर्ज - हे गुरूवर धन्य हो...) (कविता व श्लोगन रूप में प्रकृति गीत)

बसन्त ऋतु आई है, पुष्पों की बहार लाई है।
नई कोपल आई है, पुरानी पत्तियाँ गई है।।
कोयल गाना सुनाती है, आम मंजरी महकती है।
मन्द बयार चलती है, मन में प्रसन्नता होती है।।

ग्रीष्म ऋतु आई है, रसदार फल लाई है।
ताप में प्रखरता आई है, तन को खूब सताती है।।
लस्सी थंडाई आती है, शीतल छाया सुहाती है।
बादल निर्माण करती है, आशा की किरण जगाती है।।

वर्षा ऋतु आई है, सर्वत्र वर्षा हुई है।
प्रकृति प्रसन्न होती है, गरमी शान्त होती है।।
सर्वत्र हरियाली छाई है, मोर की आवाज आती है।
खेत में किसान भाई है, घंटा की ध्वनि आई है।।

शिशिर ऋतु आई है, पानी में स्वच्छता आई है।
कुमुदीनी मुस्कराई है, शिशिर बिन्दु छाई है।।
हेमन्त ऋतु आई है, आकाशे स्वच्छता लाई है।
धान में पक्वता आई है, प्रसन्न कृषक भाई है।।

शीत ऋतु आई है, शीतल पवन लाई है।
क्षुधा की वृद्धि हुई है, शारीरिक स्वरथता आई है।।
सूर्य किरण सुहाती है, रात्रि छोटी हो जाती है।
तिलहन खेत में पकती है, घर में मिठाई बनती है।।

ऋतु की उत्पत्ति गति से, सूर्य ग्रहादि स्थिति से।
हर ऋतु उपकारी है, सबकी महिमा न्यारी है।।
ऋतु है जीवन चक्र का, प्रकृति वर्तन पर्व का।
भारत भाग्यशाली है, छह ऋतुओं की बहाली है।।

ऋतु से प्रभावित प्रकृति, सभ्यता तथा संस्कृति।
ऋतु से प्रभावित पर्व भी, उत्सव पर्व त्यौहार भी।।
भोजन स्वास्थ्य व्यायाम भी, पर्यावरण सुरक्षा भी।
ऋतु प्रकृति की सहेली है, जीवन एक पहेली है।।

सेमारी 24-4-2011 मध्याह्न- 3.51

जनसंख्या वृद्धि शहरीकरण की आपदाएँ तथा मुक्ति के उपाय (6)... (पर्यावरण सुरक्षा की कविता)

सुनो सुनो हे दुनियाँ वाले! निजी दुर्दशा की सच्ची कहानी।
तुमने अपने कुकृत्य से किया ऐसी दुर्दशा की पक्की कहानी।।
जनसंख्या वृद्धि तृष्णा वृद्धि से होती है शहरीकरण की वृद्धि।
इससे ही होता प्रकृति शोषण प्रदूषणकारी आपत्ति वृद्धि।।... स्थायी...
जनसंख्या वृद्धि शहरीकरण ने अनेक आपदायें लाये हैं
शब्द प्रदूषण वायु प्रदूषण जल प्रदूषण भी बढ़ाये हैं

ग्लोबल वार्मिंग ओजोन परतक्षय अतिवृष्टि अनावृष्टि लाये हैं
दो प्रतिशत नगरों के कारण सत्तर प्रतिशत प्रदूषण बढ़े हैं... (1)

भोग-धनतृष्णा के कारण तुमने ही ये अनर्थ किये
भोग तृष्णा से जनसंख्या बढ़ी भोगोपभोग सामग्री बढ़ाये
धनतृष्णा से प्रकृति शोषण कर उद्योग व्यापार तुमने बढ़ाये
इसी हेतु है कल कारखाना यान वाहनों की संख्या बढ़ाये... (2)

इसके कारण जल थल नभ में यातायात की संख्या बढ़ी
सड़क रेलमार्ग बस स्टेण्ड एयरपोर्ट की संख्या भी बढ़ी
इससे भी पुनः प्रकृति हनन प्रदूषणों की मात्रा भी बढ़ी
तृष्णा के कारण तुम्हारी उन्नति भस्मासुर की प्रवृत्ति बढ़ी... (3)

नगर में सदा भीड़ ही भीड़ समाज का कोई काम नहीं
निशिदिन ही जागते रहो सुख स्वास्थ्य शान्ति कुछ भी नहीं
धन के कारण पगले हुए मृगमरीचिका का करो है पीछा
तृष्णा कभी शान्त न होती तनाव अशान्ति करते पीछा... (4)

निवास हेतु स्थान भी नहीं भोजन पानी प्रदूषित सब हैं
वायु तो मानो विष के सम इससे होते रोग विषम हैं
शरीर मन आत्मा अस्वस्थ स्वार्थ की भीड़ न देती साथ
लाखों के मध्ये एकला विवश नारकी यथा नरक में वास... (5)

नरक में यथा नारकी लड़े क्रोध ईर्ष्या से परस्पर हने
कोई किसी के दर्द न जाने निशिदिन मोहतम में पड़े
ऐसा ही कार्य नगर में होते शान्ति समन्वय समता छोड़े
ईंट कंकरीट फ्लेट के बिल में परस्पर न सहयोग करते... (6)

अभी तो जागो तृष्णा को त्यागो नगर रूपी नरक त्यागो
मानव जीवन अति अनमोल दुःखरूपी गरल नहीं घोलो
आत्मकल्याण के मार्ग तू खोल शान्ति अमृत जीवन में घोलो
सादा जीवन उच्च विचार से समस्त आपदा से मुक्ति पालो... (7)

महावीर के अहिंसा अपरिग्रह तृष्णा त्याग है बुद्धदेव के
महात्मा गाँधी के सादा जीवन पर्यावरण रक्षा विज्ञान के
धर्म अर्थ काम मोक्ष मार्ग के कबीरदास के फकीरपन के
'कनकनन्दी' के सुझाव मान के अनुयायी बनो विकास पथ के... (8)

प्रकाश हमें सिखाता (7)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

प्रकाश हमें सिखाता है ज्योतिर्मय बन,
अज्ञानरूपी अन्धेरे का विनाशक बन
विशाल अन्धेरे से प्रकाश नहीं डरता
वैसा ही सत् साहसी तुम भी बन।।... (टेक)...
तीन लाख कि.मी. प्रति सेकण्ड गति है,
विज्ञान के अनुसार प्रकाश की गति है।
हमारी शुद्धावस्था की गति भी अति है,
प्रत्येक समय में चौदह राजू की गति है। (1)...
अन्धेरे में न दिखता विशाल पर्वत है,
अज्ञान से न दिखता विराट भी सत्य है।
प्रकाश से दिखते दृश्यमान वस्तु है,
ज्ञान से ही दिखते समस्त वस्तु है।। (2)...
सहजभाव से अन्धेरा नाशे है प्रकाश,
ज्ञानी बनकर अज्ञान का कर विनाश।
अन्धेरा न नाश होता सत्ता-धन से
अज्ञान न नाश होता सत्ता-धन से।। (3)...
प्रकाश से वृक्ष बनाते हैं भोजन,
ज्ञानामृत से तृप्त होते हैं बुधजन/(आत्मजन)।
'कनकनन्दी' तो है ज्ञानामृत का प्यासा,
अन्य किसी वस्तु की नहीं मम आशा।। (4)...

अणु हमें शिक्षा देता (8)

(अनन्तशक्ति सम्पन्न परमाणु से परमात्मा तक)

(तर्ज - 1. हो दीनबन्धु श्रीपति... 2. छोटी छोटी गैया...)

अणु हमें शिक्षा देता बनो है शुद्धात्मा,
निर्बन्ध बनकर बनो है सिद्धात्मा...(टेक)...
बन्ध से आत्मवीर्य तो क्षीण होता है,
निर्बन्ध से आत्मवीर्य (तो) विस्फोट होता है
एकला ही अणु में गुण है अनन्त,
एकला भी तुम बनो प्रगटे गुण अनन्त
एकला के निमित्ते तुम बनो है शुद्ध,
शुद्ध बनने के लिए तुम बनो है सिद्ध
सिद्ध होने पर अणु समगति भी होगी
प्रति समय में चौदह राजू गति भी होगी
एक समय में लोकाग्र (का) निवास होगा,
सच्चिदानन्द स्वरूप ध्रुव भी होगा
अछेद्य अभेद्य अखण्डित अदृश्य होगा,
अमूर्तिक ज्ञानानन्द रूप भी होगा
अव्याबाध स्वयंपूर्ण गुण सूक्ष्मत्व होगा,
अनन्त शक्ति का अखण्ड पिण्ड भी होगा
अणु सम अणु ही यथा जो होता है,
सिद्ध सम सिद्ध भी तथा ही होता है
अनुपम अद्धितीय अतुलनीय भी होगा,
'कनकनन्दी' का लक्ष्य पूर्ण तब ही होगा

सेमारी, दि= 2/4/2011 रात्रि प्रायः 2.30 बजे

आकाश हमें सिखाता है (9)

(तर्ज- 1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...
3. दुनियाँ में रहना है तो...)

नभ हमें सिखाता है व्यापक बनते चल,
निर्लिप्त भाव से सदा कर्त्तव्य कर।
अबाधक गुण हमें आकाश सिखाता
विराट बनो पर को बाधा दिये बिना।।... (टेक/स्थायी)...

नीला रंग आकाश का जो आभास होता है,
संसार में कर्मयुक्त अमूर्तिक आत्मा है।
ब्रह्माण्ड को स्थान दे अकम्प होता है,
गुणों के सद्भाव में बनो अदम्भ है।।... (1)...

बादल बिजली से अप्रभावित नभ है,
सम्पत्ति विपत्ति से अप्रभावी बनो है।
लोक-अलोक में आकाश व्याप्त है,
ज्ञान में स्व-पर-विश्व व्याप्त बनो है।।... (2)...

सर्वत्र आकाश व्याप्त किसी के न आधीन,
उदार पुरुष बनो किसी के न आधीन।
अनन्त आकाश हमें शिक्षा देता है,
क्षुद्रता को त्याग कर अनन्त बनो है।।... (3)...

उदारता भाव से ही व्यापक बनो रे,
घमण्ड की संकीर्णता सर्वथा छोड़ रे।
अनन्त चतुष्टय तो तेरा स्वरूप है,
'कनकनन्दी' तुम विभाव छोड़ है।।... (4)...

''वायु हमें शिक्षा देती'' (10)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

वायु हमें शिक्षा देती गतिशील बन, अदृश्य से सबकी सेवा करते चल।
मृदुता से सबको सहलाते चल, विश्वमैत्री का पाठ पढ़ाते चल।।

गुणग्राही बनकर सुगुणी बन, व्यापक बनकर उपकारी बन।
लघुता से प्रभुता को बढ़ाते चल, निष्पृह भाव से आत्मध्यान कर।।

जियो और जीने दो शिक्षा लेते चल, भेद-भाव रहित साम्यभावी बन।
प्राणवायु सम प्राणदायी बन, संकीर्ण भाव को छोड़ता ही चल।।

दोष उखाड़ने हेतु तूफान बन, सुगुण फैलाने हेतु मन्द वायु बन।
शान्ति के प्रसार हेतु क्रान्तिकारी बन, वसन्त समीर/(बयार) सम श्रमहर बन।।

ध्यानाग्नि हेतु तू ऑक्सीजन बन, कर्म रूपी रज को उड़ाता चल।
चरवैति-चरवैति मोक्ष तक चल, लक्ष्य प्राप्ति के बाद आगमन टल।।

''कनकनन्दी'' हो चलता ही चल, समस्त बाधाओं को कुचलता चल।
अदृश्य होकर तू बढ़ता ही चल, कोलाहल से तू बचता ही चल।।

हे कृतघ्नी मानव! कृतज्ञी बन! (11)

(वृक्षादि के मानव के प्रति उपकार)

(तर्ज - धरती बाँटी, अम्बर बाँटा, बाँट दिया इन्सान को...)

युगों-युगों से उपकृत है मानव, पशु-पक्षी वृक्ष कीटों से।
किन्तु कृतघ्न बना है मानव, पशु-पक्षी वृक्ष कीटों से।। (1)

उनसे खाया उनका खाया, उन्हें मारकर शव को खाया।
उनसे पीया उनका पीया, उन्हें मारकर खून भी पीया।। (2)

वसन भूषण घर बनाया, यान-वाहन व रथ बनाया।
उनसे रक्षण पोषण पाया, औषधि सुगन्धी उनसे पाया।। (3)

जीवन में हर काम भी लिया, कृषि वाणिज्य शिल्प भी किया।
युद्ध क्षेत्र में काम भी लिया, संगीत नृत्य आसन पाया।। (4)

पतंगों से धान्य फल पाया, कृमि केंचुआ से भूमि उर्वरा।
पशु-पक्षी से वन विस्तारा, दुधारू मादा से जो दूध पीया।। (5)

तोता-मैना से संगीत सुना, कबूतर मोर नृत्य दिखाया।
कोयल मधुर राग सुनाया, तितली ने मन मुग्ध किया।। (6)

उनसे शकुन ज्ञान भी पाया, जिससे आत्मरक्षण किया।
वैज्ञानिक ज्ञान यन्त्र भी सीखा, सुख-सुविधा के साधन पाया।। (7)

उनसे जो सुख मानव पाया, उसके बदले दुःख ही दिया।
मानव समान महा कृतघ्न, दुनियाँ में नहीं अन्य कृतघ्न।। (8)

वृक्षों को काटा जीवों को मारा, खून भी पीया शव को खाया।
चर्म को ओढ़ा चर्वी लगाया, • वेम्पायर सम क्रूरता किया।। (9)

• वेम्पायर= मानव रक्त पीने वाला मानव

मानव समान दानव नहीं, मनुष्य समान राक्षस नहीं।
नर सम कोई न भस्मासुर, उपकारी का करे संहार।। (10)

हे मानव तुम अभी तो जागो, पशु से नीच तुम न बनो।
तुम्हारा पाप तुम्हें खायेगा, छद्म प्रलय तुम्हें नाशेगा।। (11)

ग्लोबल वार्मिंग तापमान वृद्धि, ओजोन परते छेद जो वृद्धि।
असामान्य वृष्टि, भूकम्प वृद्धि, सुनामी रूप से प्राप्त कुबुद्धि।। (12)

तुम्हें ने मान्य आत्मिक ज्ञान, विज्ञान के भी शोध-बोध-ज्ञान।
कंस दुर्योधन रावण समान, विध्वंसक है सब तेरा ज्ञान।। (13)

शेर भी नहीं है तुम सम क्रूर, हिटलर रूपे करोड़ो संहार।
स्वजाति भक्षक हे नर राक्षस, सर्प से अधिक तेरा दंस।। (14)

गिद्ध पक्षी से अति तू भक्षक, जीवन्त जन्तु के अति भक्षक।

लोमड़ी से भी अति चालाक, उपकारी के भी तुम हो भक्षक।। (15)

तीर्थंकर बुद्ध वैज्ञानिक जन, तेरे हित हेतु करे ज्ञान दान।
उनकी देशना को तू मान, स्व-पर हितार्थे कृतघ्न न बन।। (16)

'कनकनन्दी' की भावना जान, विश्वहितकारी भावना मान।
सोने के अण्डों की प्राप्ति समान, कृतघ्नता से करो विराम।। (17)

पशु-पक्षी से शिक्षा प्राप्त कर, परोपकार के सुकृत्य तू कर।
भक्ष्य भक्षण के संघर्षवाद को, त्याग कर मानो सहयोगवाद।। (18)

प्रकृति के सम हम भी सेवा करें! (12)
(शिक्षा परक कविता)

(तर्ज - आओ बच्चों तुम्हे दिखाए...)

प्रकृति हमारी सेवा करती	हम भी सीखें सेवा करना
सूर्य हमें है प्रकाश देता	हम भी सीखें प्रकाश देना/(ज्ञान फैलाना)
चान्द हमें है चान्दनी देता	हम भी सीखें खुशी ही देना
वायु हमें है प्राण ही देती	हम भी सीखें जीवन देना
बादल हमें है पानी देता	हम भी सीखें त्याग करना/(प्यास बुझाना)
वृक्ष ये देखो फल है देता	हम भी सीखें भूख मिटाना
धरती देती निवास हमें है	हम भी सीखें सहकारी बनना
खेती हमें भी अन्न है देती	हम भी सीखें उपकार करना
गोमाता हमें दूध भी देती	हम भी सीखें पानी पिलाना
पक्षी हमें संगीत सुनाते	हम भी सीखें मीठा बोलना
कुक्कुट हमें सुबह जगाते	हम भी सीखें जागृति लाना
अग्नि हमारे खाना पकाती	हम भी सीखें पावन लाना
पानी हमारी प्यास बुझाता	हम भी सीखें त्रास मिटाना
भ्रमर हमें है गाना सुनाता	हम भी सीखें प्रिय बोलना
हम तो प्रकृति की उन्नत कृति	हम इनसे क्यों पीछे रहें

माता के सम सेवक जन सबके आगे वे ही रहें
सेवा जो करे मेवा ही पावे जो बोये है वह ही पाये
'कनकनन्दी' तो भावना भाये सेवकजन शिवत्व पाये

सेमारी (राज.) दि= 7/4/2011 रात्रि 12.7

(वनस्पति) वृक्षों की महिमा (13)

(तर्ज - जीवन में कुछ करना...)

वृक्ष हे वृक्ष कितने अच्छे, कितने गुण तुमारे अच्छे।
स्वावलम्बी हो सबसे सच्चे, भोजन तुम बनाओ अच्छे।।
पानी खाद व सूर्य रश्मि से, पत्तों में भोजन बनाओ अच्छे।
स्वयं बनाओ स्वयं भी खाओ, कीट से मानव तक भी खायें।।
विभिन्न फल-फूल बीजों से, नर तिर्यंच जीवन जीयें।
औषधि काष्ट छाया गन्ध से, जीव जगत् उपकृत हुए।।
पशु-पक्षी के निवास हो तुम, पर्यावरण के रक्षक तुम।
वर्षा के आमंत्रक भी तुम, मृदारक्षक शोभा तुम।।
रोधक तुम ताप शब्द के, प्राणवायु के प्रदाता तुम।
तुम्हारें बिना प्राणी जगत्, जीयें न पाये दिन पर्यन्त।।
रक्षक पोषक तुम जीवों के, निःस्वार्थ सेवक प्राणी जनों के।
मूक सेवक प्राणी रक्षक, जीव रक्षार्थे विष भक्षक।।
नीलकंठ सम तुम्हारे काम, इन्द्रदेव सम वर्षा के देव।
कल्पवृक्ष के जीवन्त रूप, कामधेनु के तुम हो स्वरूप।।
चिन्तामणि हो जीव-जन्तु के, धन्वन्तरी हो इस भूमि के।
वैद्य कृषक माली के सर्वस्व, इनसे उपकृत जीवों के सस्व।।

दोहा- अज्ञानी स्वार्थी नहीं,
जाने तुम्हारी महिमा।
तुम्हारे नाश से हो रही,
विनाश प्रकृति की गरिमा।। प्रभुजी विनाश-

धरती तेरा उपकार अपार (14)

(तर्ज द्वय- 1. चाँदी सी दीवार न तोड़ी... 2. गंगा तेरा पानी अमृत...)

धरती तेरा उपकार अपार, वचने कहा न जाय
तेरी ही गोदी में खिलते, खेलते वृक्ष पशु नर कोई... (टेक/धत्ता)

युगों युगों से है प्राणी जगत् तुमसे उपकृत होए
तुम तो सबको गले लगाती मानव पशु पक्षी होए
तुम तो सब कुछ सहन करती ताड़न कर्षण होए... धरती...(1)

सबको पिलाती सबको खिलाती भेद भाव बिन कोई
तथापि मानव अनधिकृत से किया खण्ड खण्ड तोही
सभी खण्ड को स्ववश करके परस्पर लड़े ताही... धरती...(2)

तेरी ही सन्तान वृक्ष पशु प्रताड़ित किया सो ही
उनके शोषण भक्षण द्वारा, भस्मासुर बना वो ही
इसके कारण विभिन्न प्रकार तेरी भी विकृति हुई... धरती...(3)

तेरा उपकार भूला है मानव, इससे संत्रस्त सो ही
भूकम्प सुनामी मृदा प्रदूषण स्खलने प्रताड़ित सो ही
ग्लोबल वार्मिंग हिमस्खलन से प्रतिक्रिया तेरी हुई... धरती...(4)

अभी तो चेत रे मानव तुम तो, भस्मासुर वृत्ति त्यागो
तू भी जिये रे अन्य को जीने दो यह नीति अपनाओ
धरती माता के प्रकोप से, तुम सबकी जान बचाओ... धरती...(5)

बड़ावली (उदयपुर) दि=23/3/2011 रात्रि 1.15

नदी हमें सिखाती है! (15)

(तर्ज - छोटी छोटी गैया...)

नदी हमें सिखाती है... गतिशील बन... प्रगति कर...बढ़ते ही चल...
बाधाओं को तोड़ कर... आगे आगे बढ़... आगे बढ़ते चल...
बाधा यदि दूर न हो... उसे छोड़ चल...

	उसे लाँध चल...	
	उसे भेद चल...	नदी हमें सिखाती है...
चलना ही जीवन है...	मरना अचल...	
	जड़ता अचल...	नदी हमें सिखाती है...
हृदये शान्ति धारा...	बहाता ही चल...	
	बढ़ाता ही चल...	नदी हमें सिखाती है...
शान्ति रस पान भी...	करता ही चल...	
	कराता ही चल...	
	सींचता ही चल...	नदी हमें सिखाती है...
सुमधुर हितध्वनि...	करता ही चल...	
	सुनाता ही चल...	नदी हमें सिखाती है...
दिल में सभी को...	स्थान देता चल...	
	सेवा देता चल...	
	प्रेम देता चल...	नदी हमें सिखाती है...
हिम नदी सम तू...	चिर स्त्रोता बन...	
	प्रगतिशील बन...	
	नित्य नूतन बन...	नदी हमें सिखाती है
चरैवेति चरैवेति...	अमृतधारा बन...	
	श्रेणी चढ़ता चल...	
	आत्मशोधी बन...	नदी हमें सिखाती है...
स्वयं चले नौका चले...	तरण तारण बन...	
	चर्या चर्चा कर...	नदी हमें सिखाती है...
सिन्धु में समाहित हो...	एकता गामी बन...	
	समताधारी बन...	
	त्यागवृत्ति धर...	नदी हमें सिखाती है...

अग्नि हमें सिखाती है! (16)

(तर्ज - छोटी छोटी गैया...)

अग्नि हमें सिखाती है... स्वप्रकाशी बन!..
स्वप्रकाशी बन! परप्रकाशी बन!
आत्मदीप बन!
परदीप बन!
तमहर बन!

अग्नि हमें सिखाती है... तेजधारी बन! तेजधारी बन!
ओजधारी बन!
वीर्यधारी बन!
अघहर बन!

अग्नि हमें सिखाती है... पाककारी बन! पाचककारी बन!
पापनाशी बन!
गुणपाचक बन!

अग्नि हमें सिखाती है... प्रज्ज्वलित बन! प्रज्ज्वलित बन!
क्रान्तिकारी बन!
दोषदाही बन!

अग्नि हमें सिखाती है... पावक बन! पावक बन!
गुणग्राही बन!
सत्यग्राही बन!

अग्नि हमें सिखाती है... ऊर्ध्वगामी बन!
गतिशील बन!
मोक्षगामी बन!

अमृत-पानी का सदुपयोग करो! (17)

(तर्ज - 1. गंगा तेरा पानी अमृत... 2. चाँदी की दीवार न तोड़ी...)

पानी तेरा गुण है अमृत झर झर झरता जाए
युगों युगों से हर मानव हर प्राणी तृषा बुझाए... (टेक/धत्ता)

तुझसे से संवर्द्धित वृक्ष व पशु पक्षी कीट पतंग सारे
तेरे से ही बने सरिता सागर जलाशय सारे
तुझसे ही वर्षा होती सब के पोषणहार ऽऽऽ... पानी तेरा...(1)
तेरा उपकार भूलकर मानव बना कृतघ्न
तेरा प्रयोग कर रहा है आज वधशालाओं में
प्रदूषण द्वारा तुझे आज प्रदूषित करता जाए ऽऽऽ... पानी तेरा...(2)
इसलिए तो आज है मानव रोग आपत्ति ग्रस्त
अतिवृष्टि व अनावृष्टि से मानव जन है त्रस्त
भूख प्यास व जलाभाव से कराह रहा इन्सान ऽऽऽ... पानी तेरा... (3)
गाँव नगर प्रान्त राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में
वाद-विवाद युद्ध कलह चल रहा जलाभाव में
अभी भी तेरी महिमा न समझे कृतघ्न मानव जात ऽऽऽ... पानी तेरा... (4)
'पैसा पानी जैसा बहाया' कहता मानव नादान रे
जैसा कि पानी तो मूल्यहीन है अनावश्यक वस्तु निदान
किन्तु पानी बिन न उबरे मोती मानुस चून ऽऽऽ... पानी तेरा... (5)
मानव अपनी नादानी छोड़ बन जा तू सुजान
पानी का तुम मूल्य समझो धन धान्य जो महान्
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो पानी है सबकी जान ऽऽऽ... पानी तेरा... (6)

प्रतीकों से शिक्षा लेकर सत्य की प्रतीती करो (18)

(तर्ज - 1. इक परदेशी मेरा... 2. कर चले हम फ़िदा...)

प्रतीकों का मान-सम्मान करो हे!
प्रतीकों से शिक्षा प्राप्त करो हे!
प्रतीकों की रक्षा किया करो हे!
प्रतीकों के अर्थ समझा करो हे!
प्रतीकों के रहस्य समझा करो हे!

प्रतीकों की उपेक्षा किया न करो हे! ।।(टेक)

भाषा के प्रतीक वर्णमाला होती है,
गणित के प्रतीक संख्या होती है।
राष्ट्र के प्रतीक ध्वज चिन्ह होते हैं,
मार्ग के प्रतीक माइलस्टोन (मील पत्थर) होते हैं।
धर्म के विविध प्रतीक होते हैं,
परिचय हेतु प्रतीक चिन्ह होते हैं।। प्रतीकों... (1)

तथापि प्रतीक यथार्थ नहीं होते हैं,
राष्ट्रीय ध्वजा में राष्ट्र नहीं होते हैं।
मील के पत्थर लक्ष्य नहीं होते हैं,
धार्मिक चिन्ह में धर्म नहीं होते हैं।
कुँआ के चित्र में पानी नहीं होता है,
भोजन के चित्र से भूख नहीं मिटे है।। प्रतीकों... (2)

पर्यावरण रक्षा हेतु वृक्षारोपण करो है,
वृक्षों के चित्र से यह कैसे संभव है।
गोवंश की रक्षा करो बूचड़खानों से,
गोबर की पूजा से रक्षा नहीं होती है
अक्षर रटन्त से (कोई) ज्ञानी नहीं होता,
धन धन रटने से धनी नहीं होता।। प्रतीकों... (3)

धार्मिक प्रतीकों के मान-सम्मान से,
पूजा-पाठ-प्रार्थना व निर्माण से।
सुरक्षा संवर्द्धन व जुलुस मात्र से,
यथार्थ से धर्म नहीं आध्यात्म दृष्टि से।
धार्मिक प्रतीक हेतु बहु युद्ध होते हैं,
रागद्वेष, भेदभाव पाप भी होते हैं।। प्रतीकों... (4)

सत्य, अहिंसा, समता, क्षमा व विवेक,
सहज-सरलता चर्या सम्यक्।

इत्यादि ही यथार्थ धर्म होते हैं,
इसके निमित्त बाह्य हेतु होते हैं।
हेतुभूत प्रतीकों का महत्व जानों,
इसलिए प्रतीकों का महत्व मानों।। प्रतीकों... (5)
केवल प्रतीक होते जड़ निदान,
शिक्षा ग्रहण के बिना व्यर्थ ही जान।
भूत-कालीन अनेक होते हैं प्रतीक,
प्रेरणा निमित्त मात्र होते स्थापित।।
प्रतीक माध्यम से सत्य प्रत्यक्ष करो,
सत्य प्रतीती से आत्मउद्धार करो।। प्रतीकों... (6)

टोकर 18/6/2011 मध्याह्न - 3.20

पोषक प्रकृति का शोषण न करो (19)

(तर्ज - 1. पावन है इस देश... 2. क्या मिलिये ऐसे लोगों से...)

प्रकृति से उपकृत हे! मानव, प्रकृति का तू सन्मान करो[2]
प्रकृति बिन जीवित न रहेगा, विकास करना तो है अतिदूर[2] ।।(टेक)
प्रकृति तुम्हारी माता समान, जो करती है देख-भाल।
खाना-पीना ओढ़ना-बिछौना, दवा श्वास द्वारा हर पल[2]
सूर्य तुम्हारा उपकार करता, प्रकाश ऊर्जा की देन से।
जिससे धरती में जीवन प्रवाह, चलता निर्बाध रूप से[2]।।... (1)
वृक्ष वनस्पति वन-उपवन से, खेत खलिहान सारे
जिसका तू भोग-उपभोग करके, जीवन तू बिताये रे[2]
जीवनदायिनी पानी से तेरी, सेवा करती पावन नदी।
कल-कल नाद से संगीत सुनाती, बहती रहती पवित्र नदी[2]।।... (2)
प्यारी रंग-रंगीली चिड़िया रानी, नृत्य गान से मनमोहती।
बिना प्रशिक्षण बिना पैसा ले, तेरे मनोरंजन करती[2]
विविध रंग-गंध पुष्पों से, लगा गुल्म तेरी सेवा करते।

गुन-गुन की मधुर ध्वनि से, भ्रमर तुझे गाना सुनाते[2]।।... (3)
तथापि मानव कृतघ्न बनकर, न करो तू उन्हें दूषण
उनके दूषण-शोषण द्धारा, तुम्हारा अधिक होता शोषण[2]
''कनकनन्दी'' की भावना सदा, शोषण बदले हो पोषण।
शोषण बदले शोषण मिले, पोषण बदले मिले पोषण[2]।।... (4)

सेमारी- 21/9/2011, रात्रि द्वितीय प्रहर

प्राकृतिक जीवनचर्या से विश्वमानव सुखी बने! (20)

(सर्व जागरण प्रभाती गीत)

(विभिन्न राग-भाव-भाषा-विषयों से युक्त कविता)

(तर्ज - चंदा तूँ ल्यारे चंदनियाँ...)

(राग- रुम झुम करे... उडिया राग, वन्द्य चरण...)

दिवस के पूर्व काळे/(काले), कुक्कुट आह्वान करे।
लालिमा/(अरुण) प्रगट झाले, सूर्याभिनन्दे/(सूर्याभिवन्दे)।।[2]
मन्द वयार सञ्चरे, पुष्प सुगन्ध विस्तारे।
मन्दिर के घण्टी बजे, विहंग गाये।।...[2]
माताएँ भी निद्रा त्यागे, सन्तानों को भी जगाये।
जागो जागो प्राण प्रिये!, प्रभात होले/(झाले)।।...[2]
शीघ्र तुम निद्रा त्यागो, प्रभु स्मरण भी करो।
हाथ-पैर मुँह धोओ, ध्यानादि करो।।...[2]
शौच दन्त धौत करो, प्रातः भ्रमण भी करो।
प्रकृति संगति करो, योगादि करो।।...[2]
प्रकृति को तू निहारो, सहजता बोध करो।
वैश्विक भावना धरो, शुद्धात्मा ध्याओ।।...[2]
स्नान मञ्जन नन्तर, शुद्ध वस्त्र को तू धारो।
देवालय को तू जाओ, पूजादि/(प्रेयर)/(अर्चनादि) करो।।...[2]
ध्यान-अध्ययन करो, मनन-चिन्तन करो।

गुरु उपदेश सुनो, सुज्ञान वरो।।...²
गुरु को आहार आलो, अतिथि सत्कार करो।
शुद्ध भोजन तू करो, स्कूल को जाओ।।...²
प्रार्थना/(प्रेयर)वन्दना करो, अध्ययन शोध करो।
क्रीडा व्यायाम भी करो, मित्रता करो/(वरो)।।...²
राष्ट्रप्रेम विश्वमैत्री, सेवा स्वार्थत्याग प्रीति/(प्रति/नीति)।
सर्वोदय शिक्षा नीति, हृदये धरो।।...²
धर्म अर्थ काम मोक्ष, पुरुषार्थ/(इफेट भी) करो श्रेष्ठ।
फैशन-व्यसन त्यागो, आदर्श बनो।।...²
सूर्य अस्त पूर्व में/(पहले/बिफोर), भोजन के अनन्तर
अरुणिमा के समये/(किरणें), भ्रमण करो।।...²
सन्ध्याक्रिया ध्यान करो, अध्ययन ज्ञान करो।
प्रभु स्मरण सहित, निद्रा को वरो।।...²
एकान्त शान्त निवासे/(निलये), पवित्र व सुवासिते।
गाढ़ निद्रा अनन्तर, जागो हे धीरे।।...²
ओल्ड गोल्ड को भी मानो, अप टू डेटेड भी बनो।
फॉरवर्ड काम करो, मॉडल बनो।।...²
प्रकृति के साथ चलो, आध्यात्मिक भाव धरो।
सहज पवित्र बनो, मोक्ष/(मुक्ति) को वरो।।...²
'कनकनन्दी' भी चले, विश्वमानव भी चले।
सत्य साम्य सुख वरे/(सुखी बने), अमृत पीवे।।...²

सेमारी, दि=22/9/2011, प्रातः 5.24

प्राकृतिक संगीत एवं नृत्य (21)

बंगला राग : झूम झूम करे (विभिन्न भाषायुक्त प्रकृति गान)

प्रकृति संगीत गाये/(गाती)... प्राकृतिक गीत गाये/(गाती)
क्रय-विक्रय के बिना... मधुर/(गाती) स्वरे

प्रातःजागरण गीत... कुक्कुट गाये संगीत
उठो उठो कर्मवीर!... प्रभात हुआ/(होले/झाले)

मन्द बयार भी गाती/(गाते)... रोमांचित तनु होती/(हुए)
प्रगति पाठ पढ़ाती/(पढ़ाये)... कोमल/(मृदु) स्वरे

कळकंठे गीत गाये... झरना झर्झर स्वरे
विघ्न बाधा पार करो... शिक्षा भी आले

कोयल गाये विताने... आम्रतरु उपवने
श्याम अंगे गुप्तस्थाने... निष्पृह भावे

नृत्य सहित संगीत... सप्तरंग विभूषित
मुकुट मण्डित शिरे... मयूर गाये/(नाचे)

भ्रमर गुञ्जन करे... गुनगुन नाद करे
मकरन्द पान करे... मधुप नाचे

गिलहरी नृत्य करे... हरिण कुलांच भरे
वानर छलांग मारे... मयूर नाचे

तितली राजकुमारी... बहुरंगे मनोहारी
पुष्प कानन विहारी... कोमल अंगी

बादल बाजा बजाये... सरिता वीणा बजाये
सिन्धु/(सागर) दुन्दुभी बजाये... विविध ताने

वृषभ शंख बजाये... समीर/(पवन) वंशी बजाये
धरती रंगमंच में... संगीत गूंजे/(बजे)

चिड़िया चहचहाती... बुलबुल गाना गाती
कबूतर नृत्य करे... शेर/(सिंह/बाघ) दहाड़े

मेंढक टरटराये... कौआ/(कागा) काऊँ काऊँ करे
हाथी दादा भी चिंघाडे... बिल्ली (माजर) म्याऊँ म्याऊँ करे

घोटक/(घोड़ा/अश्व) हिनहिनाये... गाय माता रंभाये
गधा ढेंचू ढेंचू करे... कुत्ता/(श्वान) भौं भौं बोले/(पुकारे)

चूहा/(मूषक) चीं चीं करे... गिलहरी चिक चिक करे
झींगुर झंकार करे... उच्च/(सतत) निनादे

बिजली प्रकाश करे... कुसुम सुगन्ध भरे
तरु लता शोभा करे... विविध रंगे/(वर्णे)

पराग रंग/(वर्ण) विखेरे... सर सर पत्र करे
वर्षा रिमझिम करे... समीर/(पवन) चले

मानव आनन्द पाये... तथापि कृतघ्न होय
उनका संहार करे... निर्दय भावे/(मानसे)

'कनकनन्दी' ये भाये... प्रकृति भी सुखी रहे
उपकृत सब होवे... आनन्द पाये

सेमारी, दि=24/9/2011, रात्रि 11.50
तथा दि=25/9/2011, प्रातः 9.54

अति ही विचित्र कर्म (22)

(तर्ज - बड़ा नटखट है ये...)

अति ही विचित्र है कर्म के बीज, क्या करे संसारी जीव... हो...
जैसा बोया बीज इस जीव ने, वैसा फल खाता जीवने... हो... ।।(टेक)

विचित्र भाव से बाँधता है कर्म, इसी में छिपा है कर्म का मर्म
उदय होता जब वही कर्म जीव को मिलता, दुःख व शर्म ।।1।। (सुख)

शुभ से पुण्य तथा संसारी शर्म, अशुभ भाव से पाप का कर्म।
पाप में छिपा है दुःख का मर्म, कर्म के नाश से, मोक्ष का शर्म ।।2।।

जीव न चाहता कभी भी दुःख, कर्म विवश से पाता है दुःख।
नरक निगोद पशु योनी में, जीव न पाता है आत्मिक सुख ।।3।।

अनन्त सुख ज्ञान दर्शन वीर्य, कर्म आबद्ध से विकृत सर्व।
घना बादल से यथा ही सूर्य, प्रकाश न देता दिन के मध्य ।।4।।

कर्म नाश के उपाय करो, समता शुचि व ध्यान भी करो।
राग द्वेष व अज्ञान छोड़ो, ईर्ष्या संग्रह की वृत्ति भी छोडो ।।5।।

(केवल) धन से न होता दुःख का नाश, पढाई डिग्री व तर्क वितर्क।
चतुरता व भौतिक, (लौकिक) ज्ञान, नहीं दे पाते हैं शाश्वत शर्म ।।6।।

तीर्थेश ज्ञानी-ध्यानी द्वारा ये ज्ञात, सर्वज्ञ बिना अन्य से अज्ञात।
कनकनन्दी को भी यह विश्वास, सुख के इच्छुक करो विश्वास ।।7।।

सेमारी- 2/10/2011 मध्याह्न 3.10

मानव अनावश्यक पापकार्य अधिक करता! (23)

(अनर्थदण्ड/अनुत्पादक कार्यों से हानि)

(सुजीवन प्रबन्धन के लिए त्यजनीय अकार्य)

(राग- बड़ा नटखट है ये...)

विचित्र प्रकार की है मानव वृत्ति...
अनर्थ काम में प्रवृत्ति...
तन मन धन का भी करता विनाश
समय व जीवों का नाश...होऽऽ...(स्थायी)

फैशन-व्यसनों या निन्दा चुगली में...
प्रमाद आलस्य वाद-विवादों में...
कलह-झगड़ा क्रोध मान में...
आतंक युद्ध व हिंसाध्वंस में... विचित्र... (1)

शरीर के मल नाखून बाल को...
सजाये संवारे/(धजाये) मृतअंग को...
निर्दोष जीवों के खून चर्बी से...
रंगाती नारियाँ/(मूर्खायें) अपनी त्वचा/(चर्म)को... विचित्र...(2)

तम्बाखू बीड़ी सिगरेट सेवन से...
रोगों को बुलाये मूर्ख धन खर्च से
मांस भक्षण सुरापान नशा से...
हिंसा प्रदूषण रोगों से नशे... विचित्र... (3)

निन्दा चुगली व गप्पबाजी से...
प्रमाद आलस्य वाद-विवादों से...
समय शक्ति व मित्रता नाशे...
वैर-विरोध हुए स्वास्थ्य नाशे... विचित्र... (4)

कलह झगड़ा क्रोध मान से...
शान्ति समता गौरव नशे...
मानसिक रोग तनाव/(टेन्शन) पाये...
केस भी चले, धन भी जाये/(नाशे)... विचित्र... (5)

आतंक युद्ध व हिंसा ध्वंस से...
धन जन व सभ्यता नशे...
ज्ञान विज्ञान व संस्कृति नशे...
मानव जाति राक्षस बने... विचित्र... (6)

इत्यादि मानव अनर्थ करता...
अप्रयोजन कार्य अधिक करता...
महामानव इसे कभी न करते...
अज्ञानी मानव उन्हें न मानता... विचित्र... (7)

अप्रयोजन कार्य जो त्याग करता...
उत्तम कार्य में प्रवृत्त होता...
अनर्थदण्ड को त्यागो सज्जनों...
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो... विचित्र... (8)

सेमारी, दि= 2/10/2011, रात्रि 11.04

धार्मिक बनो किन्तु कट्टर नहीं (24)

(राग - सबसों ऊँची प्रेम सदाई...)

(सबसे)/धार्मिक कट्टरता दुःखदाई
धार्मिक बने धर्म न करें... कुविचार उपजई
संकीर्णता भजे, उदारता त्यागे
क्रूरता भी उपजई... (टेक/स्थायी)...
बुद्धि न विकसे, विकृत हुए... सम्वेदना नष्ट हुई
अन्धविश्वास व अज्ञान जन्में... विवेक... प्रज्ञा नश जाई... (1)
आध्यात्मिकता तो दूर ही रहे... मधुरता भी नश जाई
बगुला भगत सम आचरण करे... सहजता भी नश जाई... (2)
दिखावा व मायाचारी भी उपजे... भेद-भाव उपजई
अन्यधर्मी को शत्रु माने... वैर-भाव उपजई... (3)
उदारभावी व सज्जन धर्मी से/(सहज जन से)... अन्यथा भाव उपजई
स्व-समान कट्टर जन से... प्रेम एकता बढ़ाई... (4)
शान्ति-समता-प्रेम नशे है... कलह विषमता उपजई
बलि प्रथा व आतंक जन्में... हत्या से युद्ध तक होई... (5)
धार्मिक बनो कट्टर न बनो... पावनता सदा सुखदाई
भाव पवित्रता यथार्थ धर्म... 'कनक' को सदा भाई... (6)

सेमारी, दि= 3/10/2011, मध्याह्न 2.51

कार्य है भाव का प्रतिबिम्ब (25)

व्यावहारिक (लेश्या) मनोविज्ञान

(राग - तोरा मन दर्पण कहलाए...) **आचार्य कनकनन्दी**

तेरा कार्य भाव दरशाये रे... तेरा...2
जैसा बिम्ब वैसा प्रतिबिम्ब... भाव दर्पण झलकाये
कार्य से कारण, धूम से अग्नि सम... कार्य भाव दरशाये... (स्थायी/टेक)...
\+ जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि... लेश्या विज्ञान बताये

भाव काला/(कृष्ण) तो काम भी कलंकित...
हिटलर सम जो होय...
दूसरों के समूल नाश करके... कार्य सम्पादन होय... तेरा कार्य... (1)

\+ मूल से काटकर फल खाने सम...
काले/(कृष्ण) के कारज होय...
पाँचों पापयुक्त दुष्ट चित्त युत...
सर्वेन्द्रिय दास जो होय...
रावण कंस जरासन्ध तथा...
दुर्योधन सम जो होय... तेरा कार्य... (2)

\+ स्कन्द से काटकर फल खाने सम...
नील के कारज होय...
हठग्राही ईर्ष्यालु अज्ञानी...
मायावी प्रमादी जो होय...
लज्जा से रहित विषयासक्त है...
द्वेषी व धूर्त्त होय... तेरा कार्य... (3)

\+ कापोत लेश्या जो वक्र परिणामी...
मत्सरी चोर जो होय...
शाखा काट कर फल खाने सम...
अश्लील कथक/(वाचक) होय...
मिथ्यादृष्टि अनार्य होय... कुवचन कहे/(बोले)... तेरा कार्य... (4)

\+ शुभ परिणामी तेजो/(पीत) लेश्या वाला...
विनम्री सरल होय...
उपशाखा को छेदन करके...
फल खाने सम होय...
समाधि सम्पन्न स्वाध्यायी होय...
प्रिय धर्मी दृढ़ होय... तेरा कार्य... (5)

\+ पद्म लेश्या है प्रशान्त चित्त युत...
कषाय मन्द जो होय...
फल तोड़कर खाने के समान...
शुभतर भाव होय...
आत्मदमी योगवान् होय...
मितभाषी उपशान्त... तेरा कार्य... (6)

\+ शुक्ल लेश्या है शुद्धतम भाव...
जितेन्द्रिय शान्त होय...
गिरे पक्व फल खाने के सम...
समतायुक्त जो होय...
कुध्यान त्यागी शुक्लध्यानी होय...
समिति गुप्तिधारी रे... तेरा कार्य... (7)

\+ यथा भाव है तथा ही वचन...
तथा ही कारज होय...
व्यावहारिक यह मनोविज्ञान है...
'कनक' द्वारा लिखा होय...
जैसा बिम्ब वैसा प्रतिबिम्ब
भाव दर्पण झलकाये... तेरा कार्य... (8)

सेमारी, दि= 3/10/2011, रात्रि 2.18

परिच्छेद - 2

आत्मकथा (आत्मकथा के रहस्य एवं प्राप्त शिक्षाएँ)

जीव मेरा नाम है! (जीव की आत्मकथा) (1)

तर्ज :- (1. पूछ मेरा क्या नाम रे... 2. जीना यहाँ...)

जीव मेरा नाम है चेतन मेरा काम है,
जानना देखना सुख दुःख व मुक्ति/(मोक्ष) मेरा काम है।
मेरे ही दो भेद है संसारी व मुक्त है;
कर्मबन्ध से मैं संसारी कर्म से रहित मोक्ष है।।...टेक...

संसार/(बन्ध) व मोक्ष का मैं ही कर्त्ता धर्त्ता हूँ,
रागद्वेष से मैं बन्धा हूँ मोक्ष का भी कर्त्ता हूँ।
मोह रागद्वेष से मैं ही बान्धु मुझको,
मुक्त करूँ वीतरागता से मेरे द्वारा मुझको...(1)...

अति संक्लेश से मैं ही निगोद में रहा हूँ,
क्रम विकास के द्वारा मानव जन्म मैं पाया हूँ।
इस जन्म के पहिले चौराशी लाख योनि में,
पञ्च परिवर्तन के मध्य में अनन्त भव मैं पाया हूँ... (2)...
गति-आगति किया हूँ रागद्वेष किया हूँ,
मरा और मारा हूँ पञ्च पाप किया हूँ।
व्यसन सेवन किया हूँ भक्ष भक्षक बना हूँ,
रूलाया और रोया हूँ जन्माया और जन्मा हूँ।।... (3)...

मानव जन्म अभी मिला वृथा न जायेगा,
पूर्वकृत्य कुकृत्यों को अभी मैं न करूँगा।
पूर्वकृत सब कुछ मेरा ही तो उच्छिष्ट,
उसे फिर कैसे खाऊँ मैं तो जीव विशिष्ट/(श्रेष्ठ)।।... (4)...

अभी संसार वर्द्धन काम न करूँगा,

रागद्वेष मोह को मैं सर्वथा नाशूँगा।
जीव से जिन बनूँगा मोक्ष को पाऊँगा,
सच्चिदानन्द स्वरूप मुझे मैं ही पाऊँगा।।... (5)...
सेमारी (राज.) दि= 5/4/2011 रात्रि 1.20

शिल्पी मेरा नाम है! (शिल्पी की आत्मकथा) (2)
(शिल्पी का काम, योगदान एवं दुर्दशा)

तर्ज :- (1. पूछ मेरा क्या नाम रे...)

शिल्पी मेरा नाम है शिल्प मेरा काम है,
शिल्प द्धारा मानव जाति की, सेवा मेरा काम है ऽऽ... (टेक/स्थायी)...

कर्मभूमि के आदिकाल में, आदिनाथ भगवान् (ने) हैं।
षट्कर्म में शिल्पकला को दिया महत्व स्थान है।।... शिल्पी... (1)
गृह निर्माण गृहोपकरण, कृषि के सरंजाम है।
मेरे द्धारा ही निर्माण होते, बढ़ई मेरा नाम है।।... शिल्पी... (2)
देवालय व महल निर्माण, अट्टलिका का काम है।
इन कामों का शिल्पी हूँ मैं, वास्तुकार मेरा नाम है।।... शिल्पी... (3)
देव दानव मनुष्य पशु की, मूर्ति निर्माण काम है।
धातु पाषाण रत्न काष्ठ को, रूप देना काम है।।... शिल्पी... (4)
देव की प्रतिमा पूजी जाती है, देवालय के मध्य में।
अन्यान्य प्रतिमा शोभा बढ़ाती, देवालय के मध्य में।।... शिल्पी... (5)
विविध वस्त्र निर्माणकर्त्ता, तन्तुवाह मेरा नाम है।
शर्दी गर्मी व लज्जा रक्षण, मेरा वस्त्र का काम है।।... शिल्पी... (6)
मेरी तूलिका से जीवन्त लगे, पशु (पक्षी) प्रकृति चित्र है।
मेरी चित्रकला बोलती मानो, लिपि से ग्रन्थित शास्त्र है।।... शिल्पी... (7)
मिट्टी से विभिन्न पात्र निर्माण, मेरी कला के द्धारा है।
जल रखना भोजन पकाना, मेरे पात्र के द्धारा है।।... शिल्पी... (8)

प्राचीनकाल में मिट्टी पात्र का, होता था प्रयोग भारी।
इसका प्रमाण पुरावशेष व ग्रन्थ में मिलता भारी।।... शिल्पी... (9)
लौहोपकरण निर्माण कारण लोहार मेरा नाम है।
उपकरण है कृषि रक्षा शल्य चिकित्सा के काम है।।... शिल्पी... (10)
सोनार मेरा नाम है अलंकार निर्माण काम है।
सूक्ष्मकला की साधना द्वारा करूँ हूँ मेरा काम है।।... शिल्पी... (11)
कंसारा मेरा नाम है बर्तन बनाना काम है।
पीतल कांसा आदि से थाली आदि बनाना काम है।।... शिल्पी... (12)
कर्मभूमि के आदिकाल से अखण्डित मेरी कला है।
परम्परा से सीखता रहूँ इससे जीवन्त कला है।।... शिल्पी... (13)
कला निमित्त मैं पढ़ता गणित विज्ञान के पाठ है।
तोता के समान रटन्त नहीं, प्रयोग मेरा पाठ है।।... शिल्पी... (14)
इसलिए मुझे मूर्ख माने हैं साक्षर मूढ वाला है
उपेक्षित हूँ आधुनिकता के औद्योगिक करण द्वारा है।।... शिल्पी... (15)
इसलिए तो कुटीर उद्योग का होता जा रहा नाश है।
प्रदूषण से प्राणी जगत् का होता जा रहा विनाश है।।... शिल्पी... (16)
धनी-गरीब, शोषक-शोषित, मालिक-मजदूर भेद है।
दिनों दिन भी बढ़ता जा रहा यह भी अति दुःखद है।।... शिल्पी... (17)
प्राचीनकाल में ऐसी ही, मुझे मिली बहु यन्त्रणा।
अच्छा काम यदि न हो पाया, मिली थी भारी यन्त्रणा।।... शिल्पी...(18)
अच्छा काम होने पर भी, मिलता था बड़ा दण्ड।
ऐसा काम पुनः न हो, मिलता था इसलिए दण्ड।।... शिल्पी... (19)
पिरामिड हो चीन की दीवाल अथवा मन्दिर या मूर्ति।
वस्त्रादि निर्माण अच्छा होता आती थी मुझे विपत्ति।।... शिल्पी... (20)
मेरे हाथ पैर अथवा शिर को काटा जाता था दण्ड में।
अच्छा काम का मुझे पुरस्कार देता था मालिक दण्ड में।।... शिल्पी... (21)
अधिकांश महानिर्माण कार्य है मेरा रक्त से रञ्जित।

सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु जो भी हुआ निर्मित।।... शिल्पी... (22)
ऐसा है यह कृतघ्न मानव सत्ता-सम्पत्ति से अन्धा।
भलाई बदले बुराई करता उल्लू से भी अन्धा।।... शिल्पी... (23)
अभी तो मानव क्रूरता त्यागो करो है शिल्पी आदर।
'कनकनन्दी' के माध्यम द्वारा करता हूँ तुम्हे पुकार।।...शिल्पी...(24)
मेरे द्वारा भी तुम्हारी सभ्यता संस्कृति परम्परा की रक्षा।
इनकी रक्षार्थे मेरी सुरक्षा की, कभी न करो उपेक्षा।।... शिल्पी... (25)

''साहित्य मेरा नाम है'' (साहित्य की आत्मकथा) (3)

तर्ज :- (नदी किनारे गाँव रे...)

साहित्य मेरा नाम है ज्ञान संचय काम है।
अनुभवी ज्ञानी लेखक द्वारा, होता मेरा जन्म रे।...
मेरे द्वारा ही संचय होता ज्ञान, विज्ञान सारा है
सभ्यता संस्कृति परम्परा का संचय मेरे द्वारा है। साहित्य...
तीर्थंकर केवली ज्ञात ज्ञान संचित गणधर द्वारा।
आचार्य द्वारा रचित हुआ, मेरा शरीर प्यारा।। साहित्य...
मुझे कहते हैं जैन आगम, द्वादशांग श्रुत सारा।
प्रथम, करण, चरण द्रव्य मेरा ही रूप सारा।। साहित्य...
बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट ज्ञान संचित त्रिपिटक द्वारा।
धम्मपद व जातक कथा, बुद्ध सम्बन्धित सारा।। साहित्य...
वेद में संचित वैदिक धारा, ऋषि मुनियों के द्वारा।
ऋक, साम्यदु, अथर्ववेद मेरी ही चारों धारा।। साहित्य...
अठारह पुराण उपनिषद भी मेरी ही उपधारा।
विभिन्न दर्शन तर्क आयुर्वेद मेरी ही शतधारा।। साहित्य...
अनेक दर्शन धर्म पंथ द्वारा रचित देह मेरा।
गणित, कला, शिल्प, विज्ञानादि विभिन्न ज्ञान की धारा।। सहित्य...

आधुनिक काले वैज्ञानिक द्धारा रचित विज्ञान धारा।
भौतिक रसायन ब्रह्माण्डीय मनोवैज्ञानिक सारा।।
मैं हूँ अक्षय ज्ञान भण्डार, सरस्वती भी मेरा नाम।
मैं भी पूजित ऋषि मुनि से विद्धान विद्यार्थी द्धारा।।
मैं भी उपेक्षित अज्ञानी दुष्ट से अनाध्ययन नष्ट के द्धारा।
मैं भी वंचित धूर्त पापी द्धारा, दुरूपयोग के द्धारा।।

कन्या भ्रूण हत्या की आत्मकथा (4)

तर्ज :- (चन्दा मामा दूर के...)

मैं ही बड़ी दुःखियारी हूँ, गर्भ मे शंकिता वाली हूँ
गर्भ में ही मेरे स्वजन द्धारा, बलि मैं चढ़ने वाली हूँ
गर्भ में मेरा प्रवेश हुआ, जब कल्लोल के रूप में
कुछ सप्ताह में तीव्रगति से, विकास हुआ भ्रूण रूप में
कुछ महीनों में हाथ पैर शिर का विकास हुआ भ्रूण रूप में
नाक कान आँख तंत्रिका तंत्र भी विकास हुआ मुझ में
देखने सुनने अनुभव की, क्षमता बढ़ी है तीव्र में
सुख दुःख की चेतना शक्ति, बढ़ती गई है मुझ में
लिंग निर्धारण अवयव का विकास जब हुआ मुझ में
मेरे ही स्वजन सोनोग्राफी से परीक्षण किया जब मुझ में
तब ज्ञात हुआ मैं तो कन्या हूँ वज्रपात हुआ उनमें
मेरी हत्या हेतु षड़यंत्र का सूत्रपात हुआ उनमें
दयावन्त समझाया कि क्या अपराध इस कन्या में
स्वजन ने समझाया कि कुलविनाशिनी यह कन्या है
इसके कारण हमारे कुल को लज्जित होना पड़ेगा
दहेज के लिए अकूत धन भी, इसे तो देना पड़ेगा
वृद्ध अवस्था में यह क्या, हमारे काम में आयेगी

केवल पालन पोषण के लिए यह हमारी बोझ बन जायेगी
यौन शोषण घर से भाग जाने या विधवा होने का डर है
इसीलिए इसे गर्भ में ही मारने का उपाय करो है
मुझे मारने के लिए यमरूपी डॉक्टर आया पास जब मेरे
करुणा से पुकारा मेरी रक्षा तुम करो है स्वजन मेरे
मेरी रक्षा हेतु कोई न आया माता पिता भाई बन्धुजन रे
माता हत्यारिनी पिता हत्यारा बन्धु स्वजन भी सब हत्यारे
किसी के हृदय में प्यार न देखा सब के दिल पत्थर सारे
जब स्वजन ही हत्यारे बने रक्षक कहाँ से आवे रे
मानव शरीरधारी डॉक्टर को कहते हैं धरती का भगवान्
वह भी जब बना बर्बर डाकू कौन रक्षा करेगा मेरी जान
मानव के वरदान के लिए जिस विज्ञान का विकास हुआ
उस विज्ञान को मानव ने अभिशाप रूप में प्रयोग किया
कहते हैं मानव प्रकृति का सबसे महान् प्राणी है
परन्तु मेरी नन्हीं जान ने जाना सबसे निकृष्ट प्राणी है
पशु-पक्षी भी स्व-सन्तान हेतु अपनी बलि चढ़ा देते है
मानव पशु से भी नीच बनकर स्व-सन्तान की बलि चढ़ा देते हैं
कातिल डॉक्टर के अस्त्र जब, मुझे मारने आते हैं
डर के मारे मैं सिकुड़कर आत्म रक्षा हेतु सरकती हूँ
जब माता पिता भी मेरे दर्द न समझे निर्जीव अस्त्र क्या समझेगा
जब प्राण रक्षक डॉक्टर बना भक्षक तब जड़ अस्त्र क्या रक्षक होगा
मानो पूर्वजन्म का पाप अस्त्र रूप में मेरे पास आया
मैं भागूँ कहाँ मेरी माता का ही गर्भ जब मेरा जेल बना
जल्लाद बनकर जब स्वजन व डॉक्टर मेरा काल बने
क्रूर अस्त्र के प्रहार से मेरे शरीर के अवयव अलग बने
क्रिया की प्रतिक्रिया होती प्रकृति में मेरे हत्यारों की होगी क्या गति
यह सोचकर क्षमा देकर अगले जन्म के लिए कर ली गति

मेरी व्यथा-कथा सुनकर मानव यदि बदलेगा अपनी मति
अन्य कन्या की हत्या न होगी तब सुधरेगी मानव जाति
जाते जाते विश्व मानव को मैं सुना रही हूँ अपनी बात
जिस नारी से जन्म तू लेता उसी माता को करे तू घात
कन्या नहीं वधू चाहिए कन्या बिन कहाँ से वधु लाओगे
न चाहिये बीज वृक्ष चाहिए बीज बिना कहाँ से वृक्ष पाओगे
कुलदीपक यदि सुपुत्र होता है तो उभयकुल दीपिका सुपुत्री होती
दोनों कुल के संसस्कार द्धारा जो सन्तान को संस्कार देती
सम्पन्न साक्षर प्रदेश नगरे मेरे हत्यारे होते अधिक
बाह्य धर्माचार पालक जन मेरे हत्यारे होते अधिक
द्धापर युग में था एक कंस जो शिशुओं का था हत्यारा
कलियुग में लाखों है कंस स्व शिशुओं का बने हत्यारा
अभी तो मातायें बनी पूतना स्व-सन्तान की करती हत्या
घर घर में बनीं वधशाला जिसमें होती स्वकन्या हत्या
कषायी हत्या करें पशु की स्वजन करें कन्या की हत्या
कषायी से भी बड़ा हत्यारा जो करते हैं स्वभ्रूण की हत्या
भले सन्तान हो कुसन्तान माता न होती कभी कुमाता
यह कथन सत्य नहीं है माता भी कभी होती कुमाता
पाती रक्षति सन्तान की जो उसे कहते हैं यथार्थ पिता
मेरे पिता सन्तान भक्षक राक्षस सम नहीं है पिता
जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है की गाथा होती
कन्या की पूजा तो पर्व में होती गर्भस्थ की हत्या होती
इन्हीं कारणों से लिंगानुपात की विषमता भारत में बढ़ रही
वधु न मिलने की समस्या तो दिनोंदिन ही बढ़ रही
झुककर अभी वरपक्ष को दहेज देना भी पड़ रहा
अज्ञात कुल शील जाति धर्म की कन्या भी लाना पड़ रहा
पाप कभी न किसे भी छोड़ा हो कितना ही होशियार

कर्म के सामने सभी पापी तो होते जैसे हो सियार
अभी मेरी मानो पाप को छोड़ो, निर्दोषी का कर न संहार
'कनकनन्दी' गुरुवर द्धारा मेरा निवेदन तुम करो स्वीकार।।

गो माता की व्यथा गाथा (5)
गो माता की आत्मकथा

तर्ज :- (1. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों... 2. आओ बच्चों...)

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों मेरी अति करुण कहानी
मैं अबला भोली भाली घास खाने वाली की कहानी/(जुबानी) SSS
सुनो सुनो हे दुनियाँ... (टेक)
खाती हूँ मैं घास फूस किन्तु देती अमृत सम दूध रे
अपने बच्चों को थोड़ा पिलाऊँ मानव जाति को ज्यादा दूँ रे
इसीलिए तो माँ पुकारे मुझे भारतीय जाति
मेरे दूध से बने विविध मिष्ठान्न विविध प्रकार जाति
दही पनीर मट्ठ मक्खन घृत मावा मलाई गोरस जाति
पञ्चगव्य से विविध रोग से मुक्त मानव जाति SSS
सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (1)
मेरे बच्चे गाड़ी हल में विविध काम खेतों में करते
तो भी मानव कृतघ्न बनकर हमारी हत्या निशिदिन करते
जिस देश में मुझे पूजते गोमाता भी कहकर
उस देश में मेरा मांस भी बेचा जाता है मारकर
तैंतीस करोड़ देवता भी हैं मेरे देह में मानकर
उस देश में रक्षण मिले बाघ को भी राष्ट्र पशु मानकर
जहाँ पूजा जाता है पत्थर को भगवान् भी मानकर
अहिंसा प्रधान देश भारत में मुझे मारते हैं जानकर
सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (2)

ऐसा कोई देश है जो जिसको पूजे उसको मारे
राष्ट्रीय चिह्न में मेरा सन्मान जीवन्त में मुझे ही मारे
चिह्न को जो अपमान करे उसे तो दण्ड मिले कठोर
मुझे जो मारे सरकार है उसका क्या दण्ड भोगे पामर
लोकानुगतिक लोक ये न लोक है पारमार्थिक
चिह्न में तो मुझे पूजे हैं जीवन्त में मेरा संहार
सत्यमेव जयते जिस देश में होता है राष्ट्रीय वाक्य
उस देश के न्यायालय भी किन्तु नहीं है मेरा सहायक...
सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (3)
जिस देश में हलधर गोपाल पूजे जाते हैं मन्दिर मन्दिर
उस देश में उनकी गाय को मारा जाता है हजारों हर दिन
इसलिए तो इस देश के लोकातन्त्र में है भ्रष्टाचार
स्वसंस्कृति सभ्यता नाशक यह है भारत सरकार
राजनीति के दल सभी है चोर चोर मौसेरे भाई
जिसको जब सत्ता मिले है करते हैं सब खूब कमाई
राष्ट्र धर्म व संस्कृति सब का निचोड़ कर करे कमाई
अभी तक भी भारत माता गुलामी में जकड़ी है भाई
सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (4)
अभी तो तुम आओ गोपाल आओ तुम हो हलधर
हिंसा भ्रष्टाचार स्वरूप कंस जरासन्ध का कर संहार
अभी तो मेरा उद्धार करो मैं करुणा से करूँ पुकार
आओ महावीर आओ बुद्ध है हिंसा का तो करो संहार
आओ नानक अर्जुनसिंह गुरु वधशालाओं का करो संहार
आओ तिलक महात्मा गाँधी मुझको बन्धन से मुक्त करो
मेरी ही जल्लाद सन्तानों से मेरा अब उद्धार करो
तीर्थंकर बुद्ध कृष्ण अल्ला के भक्तों का तुम उद्धार करो
सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (5)

कृषक की आत्मकथा तथा आत्महत्या (6)

(अन्नदाता कृषक आत्महत्या न करे तो कैसे?)

तर्ज :- (पूछ मेरा क्या नाम रे...)

कृषक मेरा नाम रे, कृषि मेरा काम रे
वर्षा गर्मी शर्दी में भी, हाड़तोड़ काम रे...2 (स्थायी)
बैल मेरा साथी रे परिवार मेरा साथ रे
खेती में दिन-रात मैं, करूँ बड़ा काम रे... कृषक... 1.

खेती का पालन-पोषण करूँ यथा बच्चा रे
पशु-पक्षी व कीट-पतंग से, करूँ उसकी रक्षा रे... कृषक... 2.

उसके प्रसन्न-खिन्न में, मैं भी प्रसन्न खिन्न रे
इससे विश्वप्रेम का मैं, पाठ पढ़ता जाऊँ रे... कृषक... 3.

मेरे से ही जन्म लिये हैं, मानव सभ्यता संस्कृति
कृषि से ही ऋषि बने हैं, कर्म प्रधान युग में... कृषक... 4.

मेरे से ही शाकाहार, दूध दही घृत झरें
पशु-पालन वृक्षारोपण, प्रकृति रक्षण काम रे... कृषक... 5.

मैं ही सबका अन्नदाता, राजा प्रजा रंक रे
पशु-पक्षी व कीट पतंङ्ग, वनस्पति वृक्ष (लता) रे... कृषक... 6.

तेल औषधि मसाला फल, वस्त्र का भी दाता हूँ
मेरे बिना व्यापार न उद्योग, राजनीति न नौकरी रे... कृषक... 7.

तो भी मेरा कृतघ्न मानव, करता है शोषण रे
मेरी वस्तु का करे व्यापार, दाम में नहीं हकदार मैं... कृषक... 8.

सबसे शोषित सबसे उपेक्षित, सबसे हूँ मैं गँवार रे
कर्जा में ही जन्म लेता हूँ, कर्जा में ही संहार रे... कृषक... 9.

चतुर्थ श्रेणी के नौकर से, भी मैं हूँ नौकर नीच
चपरासी से भी दीन गरीब, मैं हूँ गँवार पामर... कृषक... 10.

मैं ही पुकारूँ कार्ल मार्क्स को, लाल बहादुर शास्त्री को
अब्राहम लिंकन बनकर, मुक्त करो इस दास को... कृषक... 11.

विश्व में उपेक्षित भारतीय, कृषकगण के तन्त्र में
जिस देश में पूजे जाते हैं गोपाल हलधर भी... कृषक... 12.

इसलिए तो इस देश की, रक्षा न करे भगवान् भी
भक्त में भगवान् बसे हैं, कहें भारतवासी भी... कृषक... 13.

आत्महत्या के अस्त्र से, मारा जाता अन्नदाता रे
आतंकवादी भ्रष्टाचारी भी, पूजे जाये संसद तक में... कृषक... 14.

जिस देश ने विश्व को दिया, वसुधैव कुटुम्ब नारा है
उसी देश में मारा जाता, वसुधैव कुटुम्ब वाला है... कृषक... 15.

'कनकनन्दी' के माध्यम से, मैं अपनी पीड़ा प्रगट करूँ
प्रार्थना करूँ मैं मानव में ही, गोपाल हलधर प्रगट करूँ...
कृषक मेरा नाम रे, कृषि मेरा काम रे
वर्षा गर्मी शर्दी में भी, हाड़तोड़ काम रे ऽऽ
ग्राम-बड़ावली (उदयपुर (राज.)) दि= 22/3/2011 रात्रि 3.41

(प्रकृति-रहस्यवादी कविता)

छोटी तुच्छ घास हूँ! (घास की आत्मकथा) (7)

तर्ज :- (नन्हा मुन्ना राही हूँ...)

छोटी तुच्छ घास हूँ, सबसे मैं नीचे हूँ
शर्दी गर्मी वर्षा सब सहन करूँ हूँ
पैर के नीचे, सबसे तुच्छ हूँ ऽऽऽ सबके पीछे हूँ... (टेक)...

तुच्छ रूपे मिली मुझे छोटी सी उपमा,
तृण सम त्यागा कहे मेरी है तुलना।
पराजित अपराधी आत्म रक्षा हेतु,
मुख में मुझे लिए निवेदन हेतु... पैर के नीचे... (1)

मुझसे ही भोजन की शृंखला का प्रारम्भ,
मुझसे ही कृषि वाणिज्य शिल्प का आरम्भ।
मुझसे ही कर्मभूमि व्यवस्था का प्रारम्भ,
मुझसे ही सभ्यता संस्कृति का प्रारम्भ... पैर के नीचे... (2)

मेरे से ही शाकाहारी ऋषि युग बना है,
शालि गेहूँ बाजरा मक्का मेरा रूप है।
गन्ना बांस कुश द्रुवा मेरा ही रूप है,
विभिन्न भोजन से औषधि रूप है... पैर के नीचे... (3)

कीट पतंग मानव सब मेरे से पले हैं,
पशु-पक्षी गाय भैंस मेरे से जीये हैं।
दुधारू पशु भी मेरे से ही पले हैं,
मानव भी उनसे दूध को पाये हैं... पैर के नीचे... (4)

झोपड़ी का स्वरूप भी मुझसे बना है,
गुरुजी का डण्डा भी मुझसे बना है।
चटाई व उपकरण मुझसे बने हैं,
जन्म से मरण तक मानव के काम हैं... पैर के नीचे... (5)

जन्म व मरण जीवन या रोग में,
मेरा तो उपयोग बहुत काम घने रे।
तो भी मुझे नीच माने मानव अधम/(कृतघ्न),
मेरे बिना जीने का नहीं है माध्यम... पैर के नीचे... (6)

तो भी मैं नम्रता से जीता हूँ जीवन,
इसलिए है मेरा दीर्घ भी जीवन।

सभ्यताएँ मिटी मेरे ही सामने,
मय या बेबीलोन मेरे ही जीवने... पैर के नीचे... (7)

मैं भी साक्षी डायनासोर लोप के काल का,
मैं भी साक्षी कंस व रावण नाश का।
मैं भी साक्षी सिकन्दर हिटलर का नाश,
मुझसे सीखो प्यारे लघुता से प्रभुता राज... पैर के नीचे... (8)

छोटी तुच्छ घास हूँ, सबसे मैं नीचे हूँ
शर्दी गर्मी वर्षा सब सहन करूँ हूँ
पैर के नीचे, सबसे तुच्छ हूँ ऽऽऽ सबके पीछे हूँ।।...

वर्षा मेरा नाम है! (वर्षा की आत्मकथा) (8)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार... 2. छोटू मेरा...)

वर्षा मेरा नाम है, जल वर्षाना काम है।
धनी गरीब व ऊँच-नीच बिन, सबके लिये समान है।। (टेक)
सूर्यताप से वाष्प बने, समुद्र जलाशय का पानी,
आकाश में बादल बने, यहाँ से होता मेरा जन्म रे।। (1) वर्षा...
हवा के सहारे मेरा संचार, होता रहता है आकाश में,
गन्धर्वनगर विभिन्न बने, मेरे शरीर के मध्य में।। (2) वर्षा...
मेरे शरीर के घर्षण से, दामिनी चमके आकाश में,
जिससे शब्द उत्पन्न होता, महाभयंकर गगन में।। (3) वर्षा...
मेरे कारण से उत्पन्न होता, इन्द्रधनुष है सप्तरंग,
सूर्य किरण के परावर्तन से, इन्द्रचाप बने मनोहर।। (4) वर्षा...
मेरे आगमन को देखकर, हर्षाय मानव मयूर,
मेरे निमित्त भविष्य वक्ता, घोषणा करे है बारम्बार।। (5) वर्षा...
मैं हूँ मित्र पशु पक्षी के, मैं हूँ मित्र वनस्पति के,
मैं हूँ मित्र प्रजाजन के, मैं हूँ मित्र कृषिजीवी के।। (6) वर्षा...
मेरी कृपादृष्टि वहाँ होती, जहाँ अधिक वनस्पति,

उनके स्नेह आकर्षण से, अधिक वर्षा वहाँ ही होती।। (7) वर्षा...
ऊँचे पर्वत घने जंगल, जहाँ करे मेरा आह्वानन,
उनके प्रेम आह्वान से, नीर वर्षाये मेरे नयन।। (8) वर्षा...
मेरे कारण तृप्त धरती, शीतल होता वातावरण,
धरती माता श्रृंगार करती, नवांकुर से हरित वदन।। (9) वर्षा...
अन्नदाता धरती पुत्र खेत में, बोये विभिन्न धान्य,
जिससे और श्रृंगारित होती, धरती माता होती धन्य।। (10) वर्षा...
तले तलैया नदी नाले, मेरे जल से पूर्ण भरे,
मेढ़क टर्राये मछली रानी, उछले-मचले और हर्षे।। (11) वर्षा...
बाल-गोपाल को आनन्द आवे, नाचे गाये नहाये जल,
गोपाल भैया गाय चराये, चरागाह मध्ये हर्षित मन।। (12) वर्षा...
मैं हूँ दात्री अन्न फल व, औषधि पानी हरियाली की,
कर्मभूमि के आदिकाल में, मुझसे कृषि आरंभ हुई।। (13) वर्षा...
कृषि काल से महर्षि बने, व धर्म परम्परा शुरु हुई,
तब से ही असि मसि वाणिज्य, शिल्प सेवा आरंभ हुई।। (14) वर्षा...
मुझसे कर्मभूमि संचालित, सुख-दुःख की मैं भी कारण,
जीव हत्या व वृक्ष हनन से, मेरा भी होता है हनन।। (15) वर्षा...
इसलिये तो अतिवृष्टि व, हीनवृष्टि तथा जलप्लावन,
मेरे क्षोभ से होता रहता है, यह न जाने अज्ञानी जन।। (16) वर्षा...
जानकर भी मानव अभी, स्वार्थी बन करे जीव-हनन,
जिसका कुफल भोग रहा है, मेरे कोप का बन भाजन।। (17) वर्षा...
विज्ञान से भी सिद्ध हुआ है, जो कहते थे सन्त महान्,
दूसरों को भी जीने देने से, तू जीयेगा सुखी जीवन।। (18) वर्षा...
''कनकनन्दी'' के माध्यम से, मैंने बताया मम जीवन,
मानव यदि तुम मुझे चाहो, जीओ जीने दो सबको जीवन।। (19) वर्षा...

झाड़ोल 22/5/2011, मध्यान्ह 3.38

तम्बाकू की आत्मकथा(व्यंगात्मक पद्धति से) (9)

(विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 31 मई के उपलक्ष में)

राग :- (1. जय हनुमान... 2. छोटू मेरा नाम है...)

मैं हूँ तम्बाकू...3 सबसे निराली..., सबसे निराली मेरी शान
मैं हूँ सबसे अधिक प्रिय, मानव जाति की मैं हूँ जान.... मैं हूँ...(टेक)...
मेरी चाहत से मानव जाति... प्राण गँवाये पर मुझे चाहती...
इण्डियन के लोग मेरे दीवाने... मेरे लिए धन-जान/(स्वास्थ्य) गँवाये..
तथापि मुझे त्याग न करे... जान देकर मुझे सम्भारे...
प्रतिदिन तीन हजार मौतें... वर्ष में दश लाख भी मौतें...
मेरे प्रेम से मरण वरते... तो भी मेरा नेह निभाते...
इसलिए इण्डिया हुआ प्रसिद्ध... त्याग बलिदान में जग प्रसिद्ध...
सर्वाधिक मेरा आशीष पाते... कैन्सर, मरण वर में पाते...
तीस लाख मेरे आशीष पाते... विश्व में हर वर्ष मृत्यु पाते...
ऐसे हैं मेरे मानव पुजारी... जो है मुझ पर अति बलिहारी...
गधा/(पशु) क्या जाने मेरी महिमा... मेरे सेवन की गुणमय गरिमा...
इसलिए मेरे पास न आवे... रोग मृत्यु आशीष न पावे...
गधा समान जो मानव होता... मेरे भजन से वञ्चित होता...
उसे न मिलता मेरा आशीष... रोग मृत्यु से होता वञ्चित...
शिक्षित इण्डियन अधिक भक्त... मेरी भक्ति में बिताय वक्त...
पाश्चात्य शिक्षित कोरा गँवार... मेरी भक्ति से हो जाय दूर...
मेरे भक्त का जो संगत करे... उसे भी मेरा आशीष मिले...
सौ प्रतिशत भक्त को मिले... तीस प्रतिशत साथी को मिले...
एक सिगरेट जो सेवन करे... छह मिनट मृत्यु का आशीष मिले...
पूर्ण जीवन में पाये आशीष... बुढ़ापा कभी न आवे समीप...
मेरी विभिन्न मूर्ति बनाने वाले, बीड़ी आदि रूप देने वाले...
उन्हें भी मेरा मिले आशीष... दमा खाँसी आदि अनेक रूप...

मेरी पत्ती की रक्षा निमित्त... विष छिड़काय किसान लोग...
हजारों कीटों का होता संहार... मृदा जल वायु दूषण अपार...
उससे थल जल प्राणी भी मरे... खेत में सर्प पशु नहीं सञ्चरे...
मेरी क्रूरता से अभी संत्रस्त... मानव के बिन कोई न भक्त...
मेरा यदि तुम्हें आशीष पाना... 'कनकनन्दी' से दूर ही रहना...
मेरा वह कट्टर शत्रु जान... मेरी महिमा का न करे सन्मान... मैं हूँ...

झाड़ोल (स.) दि= 27/5/2011, मध्याह्न..2.15

मिट्टी के बर्तन की आत्मकथा (10)

(अहिंसक, स्वास्थ्यप्रद, पर्यावरण के अनुकूल मिट्टी के बर्तन)

राग :- (जिया बेकरार है...)

कुम्भ मेरा नाम है जलधारण काम है,
कुम्भकार मेरा निर्माता, प्रकृति मेरी माँ है ऽऽ... (टेक/स्थायी)...
कर्मभूमि के आदिकाल में, मेरा निर्माण प्रथम हुआ
पानी लाना, खाना बनाना, अनाज रखना मुझसे हुआ
दही जमाना, दही मंथना, घी बनाना मुझसे हुआ
भात बनाना, रोटी बनाना, सब्जी बनाना भी हुआ... कुम्भ (1)...

औषध रखना, घी रखना, पानी रखना मुझमें हुआ
इससे भोजन, औषध पानी पौष्टिक व सुरक्षित हुआ
इसका वर्णन जैन बौद्ध व वैदिक ग्रन्थों में अनेक हुआ
आयुर्वेद इतिहास प्राकृतिक चिकित्सा में प्रचुर हुआ... कुम्भ (2)

सिन्धुघाटी हड़प्पा आयड की खुदाई से प्रमाण मिला
नालन्दा विश्वविद्यालय की प्राचीनता में मैं भी मिला
चीन बेबीलोन मेसोपोटामिया में भी मिला
धातु युग के पहले मेरा ही साम्राज्य सर्वत्र फैला... कुम्भ (3)

जैन साधु-साध्वी भी मुझमें बना भोजन करते थे
वृत्तिपरिसंख्यान व्रत में भी मेरा नियम लेते थे
भगवती-आराधना में इसका प्रमाण मिलता है
पुराण ग्रन्थों में भी मेरा वर्णन आज मिलता है... कुम्भ (4)

मेरे बने पात्रों से राम-सिया ने मुनि को आहार दिया
पूर्व मुनियों ने मम पात्रों का वृत्ति परिसंख्यान किया
पूर्वाचार्यों के ग्रन्थों में मेरा निषेध नहीं हुआ
दीपावली के दीप से मंगल कलश तक भी प्रयोग हुआ... कुम्भ (5)

मिट्टी के प्राकृतिक गुण से भोजन-पानी गुणयुक्त होते हैं
रोगरोधी व स्वास्थ्यवृद्धि गुणयुक्त होते हैं
आयुर्वेद व कुदरती इलाज में मेरा प्रयोग बहु होता है
गर्भवती को मुझसे बना भोजन(पानी) दिया जाता है... कुम्भ (6)

मुझमें रखा गरम जल जब शीतलमय हो जाता है
प्यास, दाह, वमन पित्त भी उससे शान्त होते हैं
मैं प्राकृतिक उत्तम फ्रीज सस्ता पर बहु उपकारी
विद्युत फ्रीज व पानी नहीं मुझ सम गुणकारी... कुम्भ (7)

मेरे निमित्त आरम्भ प्रदूषण हिंसा कम होते हैं
लोभ ममत्त्व अहंकार भी मेरे प्रति कम होते हैं
इसलिए तो मेरे कारण चोरी, लूटपाट कम होते हैं
आक्रमण, युद्ध, गुलामी, विध्वंस कभी नहीं होते हैं... कुम्भ (8)

सोना, चान्दी, स्टील, प्लास्टिक से महान् हिंसा होती है
खुदाई, ढुलाई, गलन, निर्माण हेतु से हिंसा होती है
लोभ, ममत्व, अहंकार भी इससे ज्यादा होते हैं
जिससे चोरी, युद्ध, विध्वंस मिलावट भी होते हैं... कुम्भ (9)

तथापि अज्ञानी, प्रदूषणकारी, अन्धानुकरणकारीजन

हिंसाकारक, स्वास्थ्य हानिप्रद धातु का करे नियोजन
मूढ़मति जन मेरे प्रयोग को माने हैं पिछड़ापन
हिंसाकारक व अशुद्ध परक माने हैं अज्ञानी जन... कुम्भ (10)

विज्ञान से सिद्ध हुआ सुनिश्चित धातुवस्तु हिंसाकारी
पृथ्वी जल वायु शब्द प्रदूषक भूकम्प विध्वंसकारी
ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन छेद व अनावृष्टि अतिवृष्टि
धातु वस्तु निर्माण क्रिया भी होती है कुप्रवृत्ति... कुम्भ (11)

मेरी शुद्धता सफाई की व्यवस्था भी सस्ती भी है अच्छी
पानी के बर्तन को शुद्धता से सुखाना भी सस्ता है
दही मथने के बर्तन को शुद्धता से मांज के सुखाते
भोजन के कण न रहे ऐसी शुद्धता से सुखाते... कुम्भ (12)

अन्ध आधुनिक, प्रदर्शनकारी, मन्यमानाबुद्धिजीवी
सत्य-तथ्य के अनजान लोग न जाने मेरी जीवनी
उनके हितार्थ मेरी आत्मकथा लिखी श्री 'कनकनन्दी'
अहिंसा व स्वास्थ्य, पर्यावरण हिते प्रयोग करो मेरी... कुम्भ (13)
केजड़, दि= 1/6/2011 मध्याह्न 2.30

मधुप मेरा नाम है। (मधुमक्खी की आत्मकथा) (11)

तर्जः-(1.प्यारा हिन्दुस्तान... 2.मेरे अंगने में... 3.भक्ति बेकरार है...)

मधुप मेरा नाम है, मधु संचय काम है।
संगठन के बल पर, करते हम काम हैं।। (टेक)
हमारी मुखिया रानी होती, हम उनकी संतान हैं,....2
फेरमोन की गन्ध से, हमारा नियंत्रण करती है।
एक रानी की हजारों सन्तानें, सदा काम करती हैं,....2
दूर-दूर से मकरन्द लाकर, छत्ते में संचय करती हैं।। मधुप... (1)
हम दूसरों को संकेत देती, विभिन्न नृत्यों से बताती,

कौनसी दिशा कितनी दूरी, फूल खिले हैं मकरन्दकारी।....2
संकेत पाकर हमारी फौज, उसी दिशा में कूच करती,....2
फूलों को क्षति बिन पहूँचाये, हमारी सेना मधु ले आती।। मधुप... (2)
जैन साधु की आहार चर्या, मधुकरवृत्ति से हुई प्रसिद्ध,
आहारदाता की बिना क्षति से, आहार चर्या होती शुद्ध।
मधु मेरा है विशिष्ट युक्त, ताजा रहे चिरकाल तक,....2
मैं भी खाऊँ सन्तान खावें, तो भी मधु न हो विकृत।। मधुप... (3)
चोर लुटेरे लोभी मानव, मेरे भोजन के बनते चोर,....2
धुआँ करके मुझको मारे, अण्डें लार्वाओं का करे संहार।....2
मधु सहित उन्हें निचोड़े, मधु सहित खून भी झरे,....2
स्वयं भी खाये विक्रय करे, चोर होकर साहूकार बने।। मधुप....(4)
इसलिये मेरी कुछ प्रजाति, मानवजाति की बनी दुश्मन,....2
डंक मारकर दूर भगाये, दुष्टमानव को देती कष्ट।....2
मानव स्वयं को महान् माने, क्षुद्र प्राणी से गद्दारी करे,
ऐसा मानव तो नीच से नीच, क्रूरता कीट-पतंग से करे।। मधुप...(5)
हे मानव तू अब तो चेत, हमारे कारण बने हैं खेत,....2
परागण भी हम से होता, जिससे तुम्हारा भोजन होता।....2
वैज्ञानिकों ने सिद्ध है किया, हमारे बिना ना फलेगा फल,....2
इसलिये तू कृतज्ञ बन, हमारी सुरक्षा सदैव कर।। मधुप... (6)
हमसे तू एकता सीख, उद्यमशीलता विज्ञान सीख,....2
अक्षतकारी प्रवृत्ति सीख, परोपकारी वृत्ति सीख।....2
मेरे से कृतज्ञ भाव भी रखो, अन्य जीव प्रति कृतज्ञ बनो,
''कनकनन्दी'' की भावना जानो, मधुकरवृत्ति प्रवृत्ति बनो।। मधुप...(9)

केजड़- 1/6/2011, मध्यान्ह. 4.00

(पक्षी एवं प्रकृत्ति प्रेम की कविता)

कोयल मेरा नाम है! (कोयल की आत्मकथा) (12)

राग :- (1. भोली मेरी माँ है... 2. जीना यहाँ...)

कोयल मेरा नाम है, मधुर मेरा गान है
वसन्त ऋतु के आगमन से, चलता मेरा तान है... (स्थायी/टेक)

''कुहू कुहू'' के विविध राग से मैं करती हूँ गान है
वृक्ष निकुञ्ज के गहन स्थान से मैं हूँ छेड़ती तान है... कोयल... (1)
मेरे गान से मन्त्र मुग्ध हो जाता मानव का मन है
मुझे देखने के लिए विस्फुरित होते मानव नयन है... कोयल... (2)
मेरा शरीर कालाकलूटा तो भी नयन अभिराम है
मेरे संगीत गुण के कारण शरीर दिखे अभिराम है... कोयल... (3)
मेरी महिमा की गाथा गाये मानव प्राचीनकाल से
'कण्ठ कोकिला' 'मधुर वचन' की तुलना मेरे गुण से... कोयल... (4)
तो भी मानव कृतघ्न बनकर काट रहा है मेरा घर
जिससे संकट मेरे साथ ही पशु-पक्षी के चारो ओर... कोयल... (5)
जिससे पर्यावरण को संकट तापवृद्धि से हाहाकार
विषम वृष्टि ग्लेशियर गलन से मानव को संकट अपार... कोयल...(6)
अभी तो मानव क्रिया प्रतिक्रिया का कटुक फल खा रहा
यदि प्रकृति की रक्षा न करेगा स्वयं की रक्षा होगी कहाँ... कोयल... (7)
मैं भी गाना न सुनाऊँगी, प्यारी गिलहरी न फुदकेगी
प्यारी बुलबुल मौन होगी, कलरव ध्वनि न गूँजेगी... कोयल... (8)
तब मानव राजा एकला होगा मशाणिया वैभव भोगेगा
'स्वर्ण अण्डा' मालिक सम होगा प्रकृति बिना कैसे जीयेगा... कोयल... (9)
अब मानव तुम तो जागो, कृतघ्नता भाव को त्यागो
"जीयो और जीने दो" पाठ पढ़कर, तृष्णा की आग शान्त करो...कोयल... (10)
'कनकनन्दी' के माध्यम से कहें, हमारा अधिकार न छीनो भैया

मुझ बिन तेरा विकास नहीं, पर तुझ बिन मैं विकास करूँ भैया... कोयल...(11)

सेमारी (प्रातःतालाब के किनारे जाते समय) प्रातःभ्रमण संस्मरण

दि=10/6/2011 मध्याह्न 3.26

मैं हूँ अकाजकारी गृहणी (गृहणी की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा) (13)

तर्ज :- (ओठों पे सच्चाई...)

मैं हूँ अकाजकारी गृहणी, घर के काम से फुरसत नहीं।
खाना बनाती, बच्चे पालती, तो भी कहें कुछ काम नहीं।।...2 (टेक)
मैं न जाती आफिस क्लब, मिर्टींग व किट्टी पार्टी में,
सद्गृहणी के कर्त्तव्य पालने से, अवकाश नहीं दिनरात में।....2
ब्रह्ममुर्हूर्त में उठकर मैं, नित्यकर्म सदा ही करती हूँ,
प्रभुस्मरण, शौच, स्नान, पूजा-पाठ भी करती हूँ।।...2 मैं... (1)
शुद्धतापूर्वक आहार बनाके, आहारदान मैं करती हूँ
परिवारजन व सास ससुर को, भोजन कराकर खाती हूँ,...2
गृह-पालित गाय भैंस का, भरण पोषण भी करती हूँ,
दूध दुहना, दही जमाना, घी भी मैं बनाती हूँ।।... 2 मैं... (2)
घर की सफाई, रोगी की सेवा, अतिथि सत्कार मैं करती हूँ,
बाग-बगीचा खेता का काम, आटा भी पीसा करती हूँ...2
वस्त्र धोना, घर पोतना, बर्तन मांजना सदा काम है,
पानी लाना, सब्जी लाना, घर संभालना काम है।...2 मैं... (3)
मध्यान्ह बेला में मन्दिर जाकर, साधु से पढ़ना कर्त्तव्य है,
प्रवचन सुनना, समाधान करना, धर्म को जानना कर्त्तव्य है...2
सन्ध्या से पूर्व खाना बनाकर, खिलाना-पिलाना काम है,
बर्तन मांजकर घर सम्हारकर, मन्दिर जाना काम है।।....2 मैं... (4)
आरती, वन्दना, प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नमंच में भाग लेती हूँ,
आर्यिका आदि की वैयावृत्तकर, घर जा शयन करती हूँ...2

दिन-रात में सोलह घंटे भी, मैं हाड़तोड़ काम करती हूँ,
माता, प्रबन्धक, दासी तक, समस्त काम सदा मैं करती हूँ।।...2 मैं...(5)
तो भी मुझे वेतन में, एक भी पैसा नहीं मिलता है।
चतुर्थ श्रेणी के नौकर सम, मुझे न सन्मान मिलता है...2
भारत में तो वह ही महती जो, फर्जी भी डिग्री धारी होती,
फैशन करती, व्यसन करती, नौकरी पार्टी में जाती है।।...2 मैं... (6)
गोगल्स पहनती, लिपिस्टिक लगाती, हिंगिलिस भाषा बोलती है,
हाइहि सेण्डेल पहनकर, फर्राटे में गाड़ी चलाती है...2
भले घर में खाना न बनाती, होटल में खाना खाती है,
धाई के द्धारा बच्चों को पालती, बोतल का दूध पिलाती है।।...2 मैं...(7)
सास-ससुर की आज्ञा न पालती, पति से स्वकाम कराती है,
क्लब पार्टी से देररात आती, सिनेमा व घूमने जाती है...2
तीर्थंकर साधू-साध्वी के बदले, नट-नटी को आदर्श मानती है,
उन्हीं का गाना, पहनना उनका, उनका स्टाइल जो करती है।।...2 मैं...(8)
ब्राह्मी, सुन्दरी, गार्गी, सीता, आउट ऑफ डेट हो गई,
अश्लील, हुल्लड़, नृत्यगानवाली, हीरोइन अप टू डेट हो गई...2
इसलिये तो आज इंडिया देश में, पढ़े-लिखे अधिक भ्रष्ट हुये,
माता, मातृभूमि, मातृभाषा रहित, भारतीय संस्कृति से दूर हुये।।...2 मैं...(9)
जीजाबाई, तीर्थंकर माता, भक्तमीरा क्या कामकाजी थी,
तो भी क्या वे महती न हुई, मेरी अभी क्या कसर हुई...2
अभी हे! भारत नौकरवृत्ति छोड़ो, आत्मगौरव को स्मरण करो,
''कनकनन्दी' के माध्यम से अभी, मेरे महत्व को पहिचानो।।...2 मैं...(10)

सराडा 2/6/2011, मध्यान्ह 2.52

बरगद की आत्मकथा (वटवृक्ष) (14)

तर्ज :- (1. जीवन में कुछ करना है... 2. भक्ति बरकरार है... 3. छोटू मेरा नाम है...)

बरगद मेरा नाम है, विशाल काया धाम है।
छोटे बीज से विशाल वृक्ष, मेरे सम नहीं अन्य है।।...2 (टेक)
पक्षी के मल से मेरा बीज जब, गिरता योग्य स्थान में।
अंकुर होकर विशाल वृक्ष, बनता मेरे बीज से,
बीज से खरबों अरब गुणी, बनती मेरी काया है,
ऐसी विशाल काया मेरी, समाये नन्हें बीज में।। (1) बरगद...
मेरी गोद में अटकली करे, चंचल चपल गिलहरी प्यारी।
तोता मैना कोयल बुलबुल, गाये गाना मनहारी,
बन्दर मामा हुँकार भरे, डाली से डाली छलांग भरे,
तितली रानी की शोभा से मेरी, शोभा की महिमा बढे।। (2) बरगद...
वर्षा ऋतु की अंधेरी रात में, जब हजारों जुगुनु चमके,
दीपक कल्पवृक्ष समान मेरा, शरीर भी जगमग झलके।
हजारों कीट-पतंग तथा, पशु-पक्षी भी मुझमें करे निवास,
किसी से भेद-भाव न करूँ, कभी न करूँ किसे निराश।। (3) बरगद...
मानव भी मेरी छाया में बैठे, गाय-भैंस आराम करे,
मेरी प्राकृतिक कूलर गोद में, बिना प्रदूषण श्रम हरे।
मुझसे नियंत्रण होता प्रदूषण, शब्द वायु व मृदा क्षरण,
मैं हूँ नीलकंठ विषपान कर्ता, मानव से जो हो विसर्जन।। (4) बरगद...
कन्यायें सावन झूला झूलें, हाथी बंधे व भोजन करे,
मेरे विशाल कोटर में, उल्लू आदि विश्राम करे।
मेरी विशाल छाया में थके, पथिक आराम करे,
ग्रीष्म काल में ठंडक पाते, वर्षा शीत से रक्षा करे।। (5) बरगद...
मुझसे मानव शिक्षा न लेता, किन्तु करता विपरीत काम।
दूसरों का न करे उपकार, उपकारियों का करे संहार,

जीवों को संहारे प्रकृति नाशे, प्रदूषणों का भी सर्जन।
जिसके कारण धरती में आज, सर्वत्र फैला अतिदूषण।। (6) बरगद...
हे मानव मेरे समान, स्वशक्ति का यदि करो विकास।
स्व-पर-विश्व का विकास भी हो, अंत में पाओ पूर्ण विकास।।
कनकनन्दी की लेखनी से आज, मैने किया आत्मनिवेदन।
मानव यदि इससे सीखेगा, तब हो सच्चा मूल्यांकन।। (7) बरगद...

सुरखण्ड खेड़ा 3/6/2011, मध्यान्ह, 3.32

"अर्थ (धन) की आत्मकथा" (15)
(अर्थ अनर्थ एवं अर्थ भी है)

तर्जः- (1.छोटू मेरा नाम रे... 2.जीना यहाँ... 3.शांति के सागर अरु...)

अर्थ मेरा नाम है अनर्थ भी काम है,
तो भी मानव मेरे निमित्त करे अनर्थ काम है।। (टेक)
मेरा विश्व में अनेक नाम धन, सम्पत्ति, पैसा भी,
डालर, रूपये, असर्फी, दीनार, भूमी, चाँदी, सोना भी।
दास, दासी, पशु-पक्षी, यान-वाहन घर भी।
टी.वी., कम्प्यूटर, फ्रिज, वस्त्र, गृहोपकरण घर भी।। अर्थ...
जीवन निर्वाह, परिवार, पोषण दान, धर्म सेवा में,
न्याय से उपार्जित मेरा प्रयोग, उचित कहा है ज्ञानी ने।
इससे भिन्न अधिक संग्रह अन्याय अर्जित धन है।
परिग्रह रूपी महापाप कहते आचार्य जन हैं।। अर्थ...
फैशन व्यसन दुरूपयोग में जो खर्च होता अर्थ है।
वह भी अनर्थ-अनर्थ जनक कहे धार्मिक ग्रंथ है।
भ्रष्टाचार, शोषण, मिलावट चोरी अन्याय मार्ग से
जो भी मुझे प्राप्त करे, गिरे पतन के मार्ग में।। अर्थ...
लोभी न कभी सन्तुष्ट होता प्रचुर मेरी प्राप्ति से।
यथा अग्नि न शान्त होती अधिक पेट्रोल प्राप्ति से।।

धनी व गरीब दोनों ही तृष्णावान जो होय।
सुखी न होता तृष्णावान कभी कुबेर सम भी होय।। अर्थ...
पुत्र भी मारे मात-पिता को मेरे निमित्त जान से।
शोषक-शोषित, धनी-गरीब मेरे कारण बने हैं।।
चोरी, डकैति शोषण, मिलावट आक्रमण व युद्ध है,
भ्रष्टाचार आतन्कवाद विश्वयुद्ध तक होय है।। अर्थ...
मेरे कारण पढ़ाई नौकरी कृषि व वाणिज्य होते हैं।
मेरे कारण सेवा शिल्प, उद्योग धन्धे चलते हैं।।
लोभी बापड़ा सब कुछ माने परमेश्वर तक माने हैं।
सर्वगुण कांचनमाश्रयंते ऐसा वह श्रद्धाने है।। अर्थ...
मेरे अभाव उपार्जन, संग्रह, सुरक्षा आदि में दुःखी लालची।
व्यय, दान, धर्म, परोपकार में भी दुःखी होता है लालची।। अर्थ...
मेरा दास सदा दुःखी होता, मेरे हाथ उसके प्राण,
मैं उस मालिक के आधीन जो दान पुण्य करे महान्।।
अच्छे भावों से मेरा उपयोग करे जो दान पुण्य परोपकार में।
मैं उसे मिलता अधिक से अधिक उसके पुण्य प्रभाव से।। अर्थ...
मेरा दास होता पुण्यहीन उसे सदा मैं दुःख ही देता।
धनी, गरीब सदा दुःखी जैसे मलत्याग बिन सुख कहाँ।। अर्थ...
सातिशय पुण्य से तीर्थंकर राजा महाराजा होते।
अर्थ से अनर्थ न करते, अर्थ त्याग साधु होते।।
जिससे आत्मिक अर्थ पाते अन्त मोक्ष धाम पाते।
उनसे सीखो हे मानव जो मुझे त्यागे वो अमृत पाते।। अर्थ...
अर्थ को सर्व अर्थ जो माने उसका अनर्थ होता निदान।
आय, व्यय जो न्याय से करे वह पुण्यवान होता महान्।।
इसलिए मानव मेरे निमित्त, अन्याय कभी न करो निदान।
''कनकनन्दी'' के माध्यम से मैं करूँ अपना आत्म आख्यान।। अर्थ...

झाड़ोल 29/5/2011 मध्यान्ह 2.41

लेखक की आत्मकथा (16)

(सुलेखक-कुलेखक का स्वरूप)

राग :- (जिया बेकरार है...)

लेखक मेरा नाम है लेखन मेरा काम है,
सत्य-तथ्य के आधारों पर चले कलम अविराम/(अभिराम) है...
हो ऽऽऽ महापुरुषों के ज्ञानधान को सञ्चय करना काम है...2
मेरा ज्ञान भी मिश्रित होता ऐसा पावन काम है...2 (1)
हो ऽऽऽ मेरे लेखन के बहुविध रूप, धर्म-दर्शन-विज्ञान हैं...2
कला, वाणिज्य, राजनीतिमय, संगीत तर्क कानून है...2 (2)
हो ऽऽऽ सर्वज्ञ जैसे महापुरुष, सर्वोच्च ज्ञान के धारी हैं...2
गणधर रूपी महालेखक पर, हम सब ही बलिहारी है...2 (3)
हो ऽऽऽ मेरी लेखनी से सञ्चित ज्ञान, चिर स्थायी होता निदान...2
देश-विदेशों में प्रचार होता, ऐसा मेरा काम महान्...2 (4)
हो ऽऽऽ मेरी लेखन के विविध साधन, ताल भोजपत्र शिला हैं...2
धातु पात्र व कागज आदि, कम्प्यूटर/(संगणक) नव माध्यम हैं...2(5)
हो ऽऽऽ विविध क्रान्तियाँ मेरे द्वारा, प्रारम्भ भी होती सर्वत्र...2
संरक्षण व सम्वर्धन या प्रचार-प्रसार हो या सर्वत्र...2 (6)
हो ऽऽऽ धार्मिक सांस्कृतिक राजनैतिक, कला या विज्ञान हो...2
सामिजिक शिक्षा वाणिज्य, क्रान्ति या कानून हो...2 (7)
हो ऽऽऽ ऐसे विविध महान् कार्य, करता रहता हूँ मैं सतत...2
मेरे नाम पर कुछ दुर्जन भी, लिखते लेख विकृत...2 (8)
हो ऽऽऽ मिथ्या, अश्लील, हिंसापूर्ण व भेद-भाव युत लेखन...2
मेरे नाम पर कलंक यह है, यह न जाने दुर्जन...2 (9)
हो ऽऽऽ 'कनकनन्दी' की लेखनी द्वारा, मैं करता हूँ आह्वानन्...2
सुलेख ही लिखे लेखन, कभी न लिखे कुलेखन...2 (10)

टोकर, दि= 19/6/2011, मध्याह्न 3.26

अनुशासन की आत्मकथा (17)

(अनुशासन के विविध रूप, पालन से लाभ तथा भंग से हानि)

राग :- (1. सुनो2 ऐ दुनियाँ वालों... 2. पूजा पाठ रचाऊँ...)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वाले, मेरा नाम है अनुशासन
मेरे सहयोग बिना न कोई, हो सुकार्य जग में जानो... (टेक)

मैं हूँ व्याप्त हर काम में, आध्यात्मिक से लौकिक तक
मेरे सहयोग बिना हर काम, होता असफल निश्चित जान
आत्मानुशासन, मनानुशासन, इन्द्रियशासन, शरीरशासन
समयानुशासन, धनानुशासन, साधनानुशासन विविध नाम (1)

सर्वानुशासन में आत्मानुशासन, सर्वश्रेष्ठ-ज्येष्ठ-क्लिष्ट भी जानो
इसी शासन से सर्वानुशासन, शासित होते निश्चय मानो
यथा ही विद्युत् चालित यंत्र में, विद्युत् होता है प्रमुख जानो
तथावत् ही आत्मानुशासन, हर शासन में प्रधान मानो... (2)

आत्मशासन से साधा जाता, विश्वश्रेष्ठ कार्य मोक्ष निदान
मनानुशासन द्वितीय प्रमुख, जिससे शासित अन्य शासन
इसलिए ही कहा जाता है **''मनएव मनुष्याणां बन्ध मोक्षयो''**
मन वश से इन्द्रियाँ वश, जिससे शरीर भी होता वश (3)

इन्हीं शासनों से समयानुशासन, होता शासित निश्चय जानो
हर समय होता सदुपयोग, जिससे होता है कार्य महान्
''पमायेण एक समय ण मुक्कउ'' ऐसा आदेश वीर प्रभु का
''संयम जीवन असंयम मरण'' ऐसा भी शासन अतिवीर का (4)

धनानुशासन से न्यायोपार्जन, अपरिग्रह भी इससे जानो
सदुपयोग भी इस से होता अन्यथा शोषण-परिग्रह मानो
साधन के अनुशासन से साधनों का होता सदुपयोग
साधना के अनुशासन से साध्य की सिद्धि होती निदान (5)

मेरा आदर जो नहीं करता, मेरा कोप का होता भाजन

उसका कार्य करता नाश, धन जन का भी करूँ विनाश
मेरा शासन अति कठोर, पालनकर्त्ता को करूँ निहाल
भंग जो करे मेरा शासन, कठोर दण्ड से करूँ कंगाल (6)
दुर्घटणा से अपमृत्यु तक, विभिन्न दण्ड से करूँ प्रहार
मेरा दण्ड यदि नहीं चाहते, मेरे शासन का करो आदर
'कनकनन्दी' की लेखनी द्वारा, मेरे स्वरूप का हुआ वर्णन
कार्य सम्पादन सुख शान्ति हेतु, मेरी आज्ञा का करो पालन।। (7)

सेमारी, दि= 13/7/2011, रात्रि 12.28

(1 जुलाई डॉक्टर्स डे के उपलक्ष में)

डॉक्टर (वैद्य) की आत्मकथा (18)

(ईश्वरीय डॉक्टर एवं डाकू सम डॉक्टर)

तर्ज :- (नगरी नगरी...)

मैं हूँ डॉक्टर पृथ्वी का ईश्वर, ऐसा लोग मुझे कहते हैं।
रोग को हरना आरोग्य देना, ऐसा महान् काम है।। (टेक)
रोग न आवे आरोग्य पावे, ऐसा होता मेरा काम है।
रोग के कारण शोध कर मैं, करूँ उसका निवारण है।।
रोगी की सेवा तथा पुण्य कमाना, धन यश का भी लाभ है।
आदर पाना ज्ञान प्राप्त करना, यह सब मेरा लाभ है।।...(1) मैं...
भेद-भाव रहित सेवा सहित, रोगी की करता सेवा मैं।
शोषण रहित दया भाव सहित, निष्पक्ष करता हूँ सेवा मैं।।
सेवा धर्म सेवा कर्म, सेवा व्रत नियम है।
गरीब रोगी की सेवा भी करूँ, धन लाभ बिन शुभ कर्म है।।...(2) मैं...
स्व कर्म हेतु मैं ज्ञानार्जन करूँ, आयुर्वेद तन विज्ञान है।
कर्म सिद्धान्त व जीवविज्ञान, भोजन प्रकृति विज्ञान है।
स्वप्न शकुन न मनोविज्ञान, द्रव्यगुण स्वभाव विज्ञान है।

नवीन-नवीन अविष्कारों द्वारा, प्राप्त जो अद्यतन ज्ञान है।।...(3) मैं...
अतएव मम ज्ञान होता विस्तृत, सूक्ष्म से स्थूल पर्यन्त है।
इहलोक से परलोक सहित, त्रिकाल सम्बन्धी ज्ञान है।।
मेरे समूह में हुए बड़े-बड़े वैद्य, चरक सुश्रुत धन्वन्तरी है।
पूज्यपादाचार्य बागभट्ट माधव, उग्रादित्याचार्य आदि है।।...(4) मैं...
प्राकृतिक चिकित्सा शल्यचिकित्सा, प्राचीन काल से भारत में।
मनोविज्ञान मंत्रचिकित्सा, आयुर्वेद में है सारे।।
विदेशों में भी अनेक सुवैद्य, हुए हैं प्राचीन से आद्यतन।
हिपोक्रिटिश से पाश्चर तक, लुकुमान समान भी वैद्य है।।...(5) मैं...
आधुनिक पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति में, मुझे कहते हैं डॉक्टर।
होमियपैथी व एलोपैथी, पाश्चात्य चिकित्सा के प्रकार।।
हाय! अभी क्या हुआ भारत में, डॉक्टर भी हो गये हैं क्रूर।
दया सेवा व ज्ञान से रहित, करते भ्रष्टाचार हैं।।...(6) मैं...
शोषण करते नकली दवा देते, करते भी यौनाचार हैं।
किडनी चुराते कैंची छोड़ते, समूह करते हड़ताल हैं।।
रोगी दुःखी होते परिवार रोते, इलाज बिना मृत्यु भारी।
डॉक्टर का डाकू सम क्रूराचार, गरीब रोगी है लाचार।।...(7) मैं...
वैद्यराज नमोस्तुभ्यं यमराज सहोदर, यमराज से भी भयंकर प्राण व धन हरण कर।
यमराज प्राण हर तू प्राणधन हर, जीवन्त तू है यमपुर।।
अतएव तुम्हें शीघ्र जगाने हेतु, ''कनकनन्दी'' गुन्थे गान है।
अपनी महानता समझकर शीघ्र कर तू ईश्वरीय काम है।।...(8) मैं...

कुण्डा दि=2/7/2011, रात्रि- 11.17

सेवक की आत्मकथा (19)

(सेवाधर्म की महत्ता एवं उसका फल)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार है... 2. भोली मेरी माँ... 3. जीना यहाँ.)

सेवक मेरा नाम है, सेवा करना काम है,

परोपकार की भावना से, वैयावृत्ति काम है।।... (टेक/स्थायी)
सेवा धर्म तो महान् है, तीर्थंकर जिसका फल है,...2
तप में महान् अन्तरंग तप, बाह्य से अति महान् है।
आहार औषधि वसतिका दान उपकरण ज्ञान दान है...2
शरीर मर्दन, उपसर्ग शमन पीड़ा निवारण काम है।। सेवक...

विनय करण, आसनदान, ऊष्ण-शीत दूरी करण...2
कमण्डल ले साथ गमन, वसतिका भी परिमार्जन।।...
मलमूत्रादि स्वच्छ करण, गुरु आज्ञा का परिपालन...2
नमस्कार पूजन, गुण स्मरण, गुणानुवाद है मेरा काम।। सेवक...

सेवा धर्म में गर्भित होता, वैयावृत्ति जैसा महान् कर्म,...2
सरलता, नम्रता, परोपकार, दान, पूजा, त्याग महान् धर्म...2
उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य प्रभावना अंग भी जान...2
तीर्थंकर प्रकृति बन्ध निमित्त अनेक भावना गर्भित जान।। सेवक...

इसलिए मैं सेवक बनकर स्वयं को मानूँ धन्य महान्...2
मेरे काम को अज्ञानी-अधर्मी, माने दीन गरीब का काम...2
सेवा से ही मेवा मिलता, जो देता सो पाता निदान,
नम्रता से प्रभुता मिलती, प्रभुता से प्रभु दूर ही मान।। सेवक...

दयाभाव से सेवा (दान) करना, दयादत्ति है गुणमहान्...2
गरीब, रोगी, मात-पिता, दुःखी विकलांग दुर्बल जान।...2
यथा योग्य आहार, औषधि ज्ञान उपकार पुण्य महान्...2
वृक्ष, गाय, नदी, उपकार करे, हम क्या उनसे नीच निदान।। सेवक...

नाग-नागणी को मंत्र सुनाकर आदर्श बनाये पार्श्व महान्...2
जीवन्धर ने मंत्र सुनाया, जिससे श्वान बना देव महान्।...2
तीर्थंकर भी दिव्यध्वनि से, पशु-पक्षी को भी देते ज्ञान...2
इससे सिद्ध है मैं भी सेवक बन, नहीं करता हूँ क्षुद्र काम।। सेवक...

कलिकाल में कई महाजन (महापुरुष) सेवक बनकर बने महान्...2
नाइटेंगल, मदरटेरेसा, सुभाष, गान्धी विनोबा भावे जान।...2
बाबा आमटे, मेनका गान्धी, बिलगेट्स व बफेट वॉरेन,...2
रेडक्रॉस, नारायणसेवा, लायन क्लब आदि संस्था भी जान।। सेवक...

मैं सेवक, करूँ मैं सेवा, मुझे मिलती है तृप्ति महान्।...2
उदार, प्रेम, अहिंसा-त्याग, मेरे काम से जागृत जान।।...2
सेवक बने शोषक नहीं, याचक नहीं दाता महान्...2
''कनकनन्दी'' की कविता द्धारा, मेरा निवेदन विश्व को जान।। सेवक...

टोकर दि= 23/6/2011 रात्रि 12.45

मछली की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा (20)

राग :- (1. चन्दा मामा दूर के... 2. जिया बेकरार है...)

मत्स्य मेरा नाम है, पानी मेरा धाम है
पानी की स्वच्छता हेतु, महान् मेरा काम है।... (टेक/स्थायी)

वैदिकधर्म में पहला अवतार, मत्स्य अवतार नाम है
जल प्रलय में जीवों की रक्षा, महान् मेरा काम है... मत्स्य...
तन्दुल से महामत्स्य तक, मेरा विभिन्न आकार है
एक हजार योजन तक, सबसे बड़ा आकार है
जैन धर्म में यह वर्णन, हुआ है अति विस्तार
वज्रवृषभनाराच संहनन, धारी है मेरा शरीर... (1)

मेरा विविध रंग आकार, होता है विचित्र प्रकार
छोटी मछली से व्हेल तक, उपलब्ध समुद्र मझार
कुछ प्रजाति मीठा पानी में, कुछ है समुद्र मझार
कुछ उड़े है मेरी प्रजाति, कुछ करे विद्युत् प्रहार... (2)

कई प्रजाति प्रजनन हेतु, तैरे लाखों मीटर

नयी पीढ़ी भी प्रजनन हेतु, आती है उसी प्रकार
कुछ प्रजाति अण्डे देती, कुछ है शिशु आकार
गलफोड़ द्वारा श्वास प्रक्रिया, होती है पानी के मझार... (3)

कुछ प्रजाति से प्रकाश फैले, गहरे समुद्र के अन्दर
अन्धकार में तैरने हेतु, प्राकृतिक है उपहार
कुछ प्रजाति में अति तीव्र होती, घ्राण श्रवण की शक्ति
मीटरों से सैकड़ों किलो मीटर तक होती है यह शक्ति... (4)

मेरे प्रदर्शन से मानव पाता, मनोरञ्जन व ज्ञान है
इससे भी धन प्राप्त होता, मानव को अपार है
मेरे कारण पानी स्वच्छ रहे, पर्यावरण की सुरक्षा
मैं हूँ बच्चों की मछलीरानी, मेरी नहीं अभी सुरक्षा... (5)

मुझे मारकर मानव राक्षस, करता है अपना आहार
मेरी चर्बी से तेल बनाये, मोमबत्ती विविध प्रकार
मेरे खून से नाखूनों को, रंग रंगे है अपना अधर
नारी होकर सूर्पणखा बनती, खून से सजाये अपना शरीर
नेलपॉलिश लिपिस्टिक जिसे कहते, वह है खून भण्डार
क्रूरता से मुझे मारकर, सजाये अपना शरीर... (6)

ऐसा कोई न अधम प्राणी है, इस संसार के मझार
जो दूसरों के शवों के द्वारा, सजाये अपना शरीर
मेरे निवास स्थान में गिराता, मानव प्रदूषण भण्डार है
जिससे हमारी प्रजाति जन की, होती मृत्यु अपार है... (7)

इससे और अधिक प्रदूषण, होता है जल का भण्डार
इससे मानव को क्षति पहुँचे, यह न जाने मूर्ख पामर
मेरी कमी से समुद्र पानी में, न होता दबाव प्रचुर
जिसके कारण सुनामी प्रकोप, होता है प्रचण्ड प्रकार
इससे लाखों जन हानि होती, धन हानि भी होती अपार

प्रलय से रक्षा करने हेतु, होता है मत्स्य अवतार... (8)

विभिन्न धर्म में मेरी पूजा भी, करता मानव पामर
किन्तु जीवन्त में मुझे मारकर, खाये ऐसा है पापी नर/(पामर)
भले मुझे न पूजा करो, तुम करो न मुझे संहार
मेरी रक्षा से तुम्हारी भी रक्षा, यह है धर्म का सार
'कनकनन्दी' की लेखनी द्वारा, व्यक्त है मेरा विचार
पर्यावरण की सुरक्षा हेतु, करो न मेरा कभी संहार... (9)

टोकर, दि= 25/6/2011, रात्रि 11.36

विद्यार्थी की आत्मकथा (21)

(आध्यात्मिक विद्यार्थी से लौकिक विद्यार्थी तक)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार है... 2. भोली मेरी माँ...)

विद्यार्थी मेरा नाम है, विद्या ग्रहण काम है
अनेक विध गुरुओं के द्वारा ग्रहण करूँ मैं ज्ञान हूँ।।...

जब तक मैं सवर्ज्ञ न बनूँ, तब तक मैं शिष्य हूँ।
चार ज्ञान के धारी गणधर, श्री केवली का शिष्य हूँ।।
सर्वोच्च गणधर से लेकर, शिष्य प्राथमिक स्तर के।
अनके विध है मेरा रूप, विभिन्न योग्यता स्तर के।। विद्यार्थी...
स्वयं में निहित शक्तियों को, जागृत करना काम है।
इसके निमित्त शिक्षार्थी बनना, मेरा सर्वोच्च काम है।।
सर्वोच्च गुरु केवली होते हैं, प्राथमिक गुरु लौकिक।
अनेक गुरु मेरे होते हैं, लोक से लेकर अलोक।। विद्यार्थी...
जल मृदा वायु रश्मि के निमित्त, यथा बीज बने वृक्ष हैं।
विभिन्न गुरुओं की शिक्षा द्वारा, मेरा भी होता विकास है।।
जिज्ञासा विनय पुरुषार्थ व एकता मेरे गुण हैं।
जिसके द्वारा विद्या ग्रहण, करता हूँ निशदिन मैं।। विद्यार्थी...

''**विनय ददाति विद्या**'' यह, प्रथम मेरा काम है।
''विद्या ददाति विनयं'' हय, मेरा द्वितीय काम है।।
एकाग्रता पूर्वक पुरुषार्थ करना, तृतीयतः मम काम है।
प्राप्त ज्ञान का सदुपयोग, यथार्थ शिक्षा का मान है।। विद्यार्थी...

इसे ही कहते मोक्षमार्ग या **''सा विद्या या विमुक्तये''**।
ज्ञानामृत भी इसे ही कहते, कारण है सर्वोदये।।
आत्मविश्वास व आचरण बिना, शिक्षा न होती यथार्थ है
तोता समान रटन्त विद्या ज्ञान, नहीं होता यथार्थ है।। विद्यार्थी...

वर्तमान मेरा विकृत स्वरूप, सर्वत्र हुआ है कुख्यात।
उपरोक्त मेरा समस्त सुगुण आज हुआ है विकृत।
फैशन व्यसन गुण्डा गर्दी, आज बन गये मेरे गुण।
प्रमाद, आलस्य, भ्रष्टाचार, पाप बन गये मेरे प्राण।। विद्यार्थी...

इसलिये आज महान् व्यक्तित्व, नहीं बन रहा है मेरा।
इसलिये विश्वगुरु वाला देश, भ्रष्ट बना है बेचारा।।
इसलिए गुरु ''**कनकनन्दी**'', जगा रहे है हमें सतत।
उठो! जागो! प्राप्त करो! हे लक्ष्य ऐसा ही यत्न सतत।। विद्यार्थी...

टोकर (21/6/2011 रात्रि 10.24)

भोला की आत्मकथा (22)

(सरल स्वभावी का स्वरूप एंव फल)

(सम्यक्त्व प्राप्ति हेतु भद्र परिणामी का स्वरूप)

राग :- (1. भोली मेरी माँ...)

भोला मैं मानव हूँ, अनपढ़ अज्ञान हूँ
गाँव में जन्मा गाँव में पला, गाँव में रहने वाला हूँ
मैं न जानूँ धर्म अधर्म व जानूँ मैं आतमा
न मैं जानूँ पुण्य-पाप व विश्व सृष्टि या खातमा... (टेक/स्थायी)

न जानूँ मैं ज्ञान-विज्ञान राजनीति या कानून
न जानूँ मैं समाज शास्त्र तर्क दर्शन कला पुराण
भेदभाव न करता जानूँ मैं जाति मत परम्परा से
धनी-गरीब ऊँच-नीच का भेद भी नहीं मन में... भोला... (1)
ईर्ष्या-द्वेष व कूट-कपट निन्दा चुगली भी न जानूँ
अपना-पराया शत्रु-मित्र में भेद भाव मैं न मानूँ
दगाबाजी मिलावट चोरी बेईमानी से मैं हूँ अनजान
भ्रष्टाचार बलात्कार फैशन-व्यसन से भी हूँ अनजान... भोला... (2)
अधिक बोलना तर्क करना वाद-विवाद से कोसों दूर
''मुँह में राम बगल में छुरी'' ''बगुला भगत के गुर से दूर''
मन से भी मैं कष्ट न देता आतंकवाद हत्या से दूर
सन्तोषवृत्ति सदा ही पालूँ शोषण जमाखोरी से दूर... भोला... (3)
मुझे कहते हैं **''भोला भण्डारी''** गाय समान स्वभावधारी
''बालक समान मृदुता धारी'' अनजान स्वभावी दुनियाँदारी
मुझे कुछ न फरक पड़ता कोई कहे मुझे अनाड़ी
मान-अपमान हानि-लाभ में मेरा क्या जाये मैं हूँ अनाड़ी... भोला... (4)
आडम्बर व आधुनिकता के बवण्डर से मैं हूँ दूर
मैं तो पिछड़ा असभ्य गँवार अन्धी दौड़ से हूँ मैं दूर
टेन्शन व हार्टअटैक अनिद्रा मुझे करे न प्यार
लड़ाई-झगड़ा, वैर-विरोध आत्महत्या न मेरे यार... भोला... (5)
पार्टी, फंक्शन मीटिंग क्लब राजनीति सम्मान मुझसे नाराज
ढाऊँ-ढाऊँ जहाँ बजे नगाड़ा मेरी तूती का वहाँ क्या काज
भेड़चाल व भेडीया चाल का, चल रहा है आज जमाना
हंसचाल की मन्दगति का, आउट ऑफ है आज जमाना... भोला... (6)
मैंने सुना है सन्त मुख से, मेरी प्रचुरता भोग-भूमि में
मन्द कषायी हो दान देकर आर्य बनकर जाते स्वर्ग में
''स्वभाव मार्दवं'' से स्वर्ग मिले है बिना व्रत व धर्म-कर्म से

किन्तु मानव सरल-सुलभ को महत्व न देता है धर्म-कर्म में...भोला..(7)
मेरी प्रजाति भी ''विलुप्त कगार'' पर, मुझे न बचाता कोई मानव
शिक्षा, राजनीति समाज व्यवस्था, धार्मिक संस्था या विश्व मानव
विलुप्त प्रायः पशु-पक्षी को बचा रहा है आज मानव
मेरी प्रजाति मानव जाति की उपेक्षा करे स्वयं मानव... भोला... (8)
''स्वजाति ही परमवैरी'' यह नीति सही है मेरे ऊपर
मानव ही मेरा परमवैरी कौन दया करे मेरे ऊपर
'कनकनन्दी' के माध्यम से हे! मानव सुनो मेरी गुहार
सुख शान्ति, सम्यक्त्व प्राप्ति हेतु, मेरी प्रजाति का करो उद्धार..भोला..(9)
टोकर, दि=17/6/2011, मध्याह्न 3.26

कुम्भकार की आत्मकथा (23)

राग :- (पूछ मेरा क्या नाम रे...)

कुम्हार मेरा नाम है, कुम्भ बनाना काम है
प्रथम शिल्पी मैं जग में, विज्ञान का भी काम है... (टेक/स्थायी)...

कर्मभूमि के आदिकाल में, मुझसे बना है बर्तन
धातु प्रयोग के पहिले तक, मिट्टी का ही था बर्तन...
मेरे बर्तन से ही खाना-पीना, भोजन बनना होता था
रंक-राव से मुनिराज तक, आहार में प्रयोग होता था...

यह सब वर्णन धर्मग्रन्थ व इतिहास पुराण में मिलता है
हड़प्पा मोहनजोदड़ो से लेकर, चीन की खुदाई में मिलता है...
इसीलिए मुझे प्रजापत भी कहते, प्रजा के हितकारी होने से
मेरे पात्र के माध्यम से मानव, प्रवेश किया निर्माण में...

प्राकृतिक साधन योग्य मिट्टी से, बनाता हूँ मैं बर्तन
चाक, दण्ड, डोरा, आवा द्वारा, करता हूँ मैं सर्जन...

धातु पात्र के लिए मीलों भी, खुदाई होती है जमीन
गलाई से निर्माण तक होता, जीव अधिक हनन...
इसके कारण भी विविध प्रदूषण, होता अधिक निर्माण
जिससे होता ग्लोबल वार्मिंग, भूकम्प सुनामी निर्माण...

ऐसा अनर्थ मेरे काम में, नहीं होता है निर्माण
प्लास्टिक सम मेरा बर्तन न करता प्रदूषण निर्माण...

मेरे बर्तन में बना भोजन, बनता है स्वादिष्ट/(पौष्टिक)
मेरे बर्तन में रखा पानी, बनता है आरोग्य दायक...
मेरे बर्तन में रखा पानी समान, नहीं है फ्रीज वाटर
मेरे बर्तन के समान सस्ता, नहीं है धातु के बर्तन...

मेरे काम में होता समन्वय/(प्रयोजन), भौतिक रसायन विज्ञान
गणित कला ऋतु विज्ञान, चाप ताप का भी ज्ञान...

गुरु कुम्हार कुम्भ शिष्य दोहा में, मेरी तुलना हुई गुरु के साथ
तर्क शास्त्रों में मेरा उदाहरण, आता कर्त्ता निमित्त के साथ...
तो भी मुझे अभी मानव, मानता है कोरा गँवार
कौन है कोरा डिग्रीधारी, मेरा काम/(ज्ञान) में है होशियार...

इसीलिये तो कोरे ज्ञानी की, बन रही है फौज अपार
इसलिए तो विश्वगुरु देश में, बढ़ रहा है भ्रष्टाचार...

मेरे बर्तनों को सही दाम न दे, जिसके कारण मैं आज कंगाल
विदेशी माल को बहुमूल्य मिले, जिससे आज है देश कंगाल...

देशी प्राकृतिक अहिंसक वस्तु का, जब तक देश में न होगा प्रयोग
तक तक विश्व न होगा विकास, मानव न बनेगा सही निरोग...

'कनकनन्दी' की लेखनी द्वारा, मैं कर रहा हूँ मेरा गुहार
विश्व मानव बने प्राकृतिक, जिससे शान्ति का होगा सञ्चार...

टोकर, दि=22/6/2011, मध्याह्न 3.13

शिक्षक की आत्मकथा (24)

(प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षक से वर्तमान के लौकिक शिक्षक तक)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार है... 2. भोली मेरी माँ... 3. पूछ मेरा गाँव रे...)

शिक्षक मेरा नाम है, शिक्षा प्रदान काम है,
इसलिये तो गुरु रूप में, सर्वोच्च स्थान है।। (टेक)
ब्रह्मा विष्णु महेश रूप में, मुझे देते सन्मान हैं...2
साक्षात्परमब्रह्मरूप में, सर्वोच्च मेरा मान है...2
शिष्यों का मैं निर्माण कर्त्ता, इसलिये मैं ब्रह्मा हूँ...2
ज्ञानामृत से पोषण करूँ, इसलिये मैं विष्णु हूँ...2 शिक्षक... (1)
अज्ञान नाशक होने से, मुझको कहते महेश हैं...2
निश्चय से मैं शुद्धात्मा, परमब्रह्म स्वरूप हूँ...2
लौकिक से आध्यात्मिक तक, मेरे अनेक रूप हैं...2
तीर्थंकर से मास्टर तक, मेरे विभिन्न रूप हैं...2 शिक्षक... (2)
तीर्थंकर हैं परम गुरु जो, विश्वविज्ञान के ज्ञाता हैं...2
इसके अनन्तर गणधर स्वामी, चारज्ञान के ज्ञाता हैं...2
आचार्य उपाध्याय ऋषिवर, आध्यातम के ज्ञाता है...2
स्वपर विश्व कल्याण के लिये, सम्यक् ज्ञान प्रदाता हैं...2 शिक्षक...(3)
पाठशाला से गुरुकुल व , विश्वविद्यालय के गुरु हैं...2
नालन्दा तक्षशीला से लेकर, ऑक्सफोर्ड के गुरु हैं...2
मात-पिता व गुणी गणजन, जो भी देते हैं शिक्षण...2
वे भी मेरे विभिन्न रूप, प्रकृति के भी हरकण...2 शिक्षक... (4)
जिससे शिक्षा मिले प्राणी को, वे भी हैं शिक्षक...2
शिक्षा लेने की योग्यता जिसमें, उसके लिये हैं सब शिक्षक...2
दया, वात्सल्य, परोपकार से, मैं देता हूँ ज्ञानदान...2
ज्ञानदान के कारण से मुझे, माना जाता सबसे महान्...2 शिक्षक... (5)

आहार, औषधि अभय का दाता, भी नहीं होता महान् गुरु...2
धन सम्पत्ति वसतिका दाता, भी नहीं होता समान गुरु...2
अन्नदानादि भी महानदाता, जिससे होता है पुण्य महान्...2
ज्ञानदान तो निरवद्यदान, जिससे मिलता केवल ज्ञान...2 शिक्षक... (6)
इसलिये तो पंचगुरु में, अरिहंतो को प्रथम नमन...2
दिव्यध्वनि द्वारा ज्ञानप्रदाता, अतएव वे गुरु महान्...2
विकृत हुआ अभी मेरा रूप, लौकिक से धार्मिक तक...2
स्वार्थपरता संकीर्णता, भौतिकवादी हुये शिक्षक तक...2 शिक्षक... (7)
''ज्ञान बाँटो धन लूटो'', अभी का है सूत्र महान्...2
ज्ञानदान न अभी होता है, जो करता वह पिछड़ा जान...2
धन के लिये धन के द्वारा, धन से ही ज्ञान होता महान्...2
इसलिये ज्ञानदाता गुरुजन, उपेक्षित आज राष्ट्र में जान...2 शिक्षक...(8)
लौकिक शिक्षा शिक्षक शिक्षार्थी, भौतिकता में डूबे आचूल...2
धार्मिकता में भी यह प्रवृत्ति, हो रही है अनेक स्थल...2
अतएव आज विश्वगुरुदेश, बन गया भ्रष्टों का देश...2
आध्यात्मिकता से तो हुये दूर, नैतिकता में भी पिछड़ा देश..2 शिक्षक..(9)
शिक्षा क्षेत्र में भी आज भ्रष्टाचार, फैशन व्यसन में है मशहूर...2
जिसके कारण भारत में है, आज शिक्षा का क्षेत्र कमजोर...2
इसलिये आज ''कनकनन्दी'' के, माध्यम से मैं करूँ आह्वान...2
अपनी गरिमा को जागृत करके, करो देश को पुनः महान्...2 शिक्षक...(10)
टोकर, दि= 21/6/2011, मध्याह्न-2.20

पुष्प की आत्मकथा (25)

(पुष्प के विविध गुणधर्म)

राग :- (छोटू मेरा नाम है...)

पुष्प मेरा नाम है, पुष्पित होना काम है
फल मकरन्द सुगन्धी भी, उत्पन्न करना काम है...(स्थायी)

मेरा शरीर है अति सुकोमल, सुन्दरता का धाम है
इसलिए मेरा प्रयोग होता, हर मांगलिक काम में
भोगभूमि के प्रारम्भ से ही, मैं पुष्पित होता आया हूँ
फल आदि को उत्पन्न करके, परोपकार करते आया हूँ...

मुझसे आकर्षित होकर आते, मधुप आदि प्राणिगण
मकरन्द खाकर पराग लेकर, बसते अन्य है पुष्पगण
जिससे धान्य फलादि होते, जिससे प्राणियों का होता पोषण
सुरभि सुन्दरता से मानव प्रमुदित, दूर भी होता वायु दूषण...

पूजा समर्पण स्वागत शोभा में, मानव करता मेरा प्रयोग
मेरी सुगन्धी व इत्र आदि से, दूर होते हैं अनेक रोग
मेरा उपयोग विविध प्रकार, हर देश-जाति में होता प्रचुर
मेरा गुणगान कवि करता, चित्र बनाता है चित्रकार...

बहुमूल्य धातु पत्थर आदि से, मेरे रूप का होता निर्माण
कल्पवृक्ष तथा वनस्पति में, मेरे स्वरूप का होता निर्माण

गुणग्राही मानव मुझसे शिक्षा ले, बन जाता है मृदु स्वभावी
जिससे कीर्ति रूपी सुरभि फैले, प्रमुदित होते मृदु स्वभावी...

'कनकनन्दी' की लेखनी द्धारा, मैं करता हूँ मेरा बखान
जीव जगत् भी प्रमुदित होकर, खिलखिलाये निशियाम...

टोकर, दि=22/6/2011, रात्रि 10.35

रूपये की आत्मकथा (26)

(अर्थ से अनर्थ एवं सार्थक काम)

तर्ज :- (जय जिनवाणी महिमा न्यारी...)

मैं हूँ रूपया सबसे निराला, सबसे निराली मेरी शान/(जान)
मेरी जान से ही जीवित होता, लोभी बापड़ा का जीवन जान।।... (स्थायी)

मैं लोभ का नहीं ग्यारहवाँ प्राण, मैं तो उसका सर्वस्व जान।
मेरे बिना वह जीवित न रहेगा, संसार उसका शून्य जान।। मैं हूँ... (1)

मैं ही लोभी के माता-पिता, भाई, बन्धु, गुरु, पुत्र भी जान।
भूत भविष्य व वर्तमान काल, स्वर्ग, मोक्ष व भगवान् जान।। मैं हूँ... (2)

इसलिए तो मेरे लिए वह, करता रहता है समस्त काम।
न्याय-अन्याय शोषण मिलावट, भ्रष्टाचार या पुण्य का काम।। मैं हूँ... (3)

मेरा विभिन्न रूप जग में, रूपया पैसा सम्पत्ति जान।
धन धान्य व नौकर, जमीन, फैक्ट्री सोना, चान्दी वाहन।। मैं हूँ... (4)

धन ही धर्म, धन ही काम, धन ही भोग, धन ही मोक्ष।
अर्थ सहित सब सार्थक, समस्त काम ही अर्थ सापेक्ष।। (5)

इसलिए वह मुझे ही पूजे, मुझे ही भजे, मुझे ही चाहे।
मेरे लाभ बिना कुछ न चाहे, प्राण जाये पर मुझे ही चाहे।। मैं हूँ... (6)

मुझे प्राप्त कर संचय करे, दान न करे न भोग भी करे।
चोर ले जाये या विनाश हुए, मेरे कारण वह नरक भी जाये।। मैं हूँ... (7)

न्याय से मुझे जो अर्जन करे, दान देकर भोग भी करे।
पुण्य से मुझे अधिक पाये, दान देकर स्वर्ग भी जाये।। मैं हूँ... (8)

पुनः स्वर्ग से मानव बन कर, वैभवशाली बन त्याग करे।
साधु बनकर साधना करे, अन्त में सार्थक मोक्ष को वरे।। मैं हूँ... (9)

मेरे लोभ से पतन जानो, पाप का बाप लोभ ही जानो।
त्याग से स्वर्ग मोक्ष भी पाये, तीर्थंकर देव यह बताये।। मैं हूँ... (10)

''कनकनन्दी'' की लेखनी द्धारा, मेरा वर्णन हुआ मेरे ही द्धारा।
मेरा मोह त्यागे संसार सारा, शान्ति को पाये त्याग के द्धारा।। मैं हूँ... (11)

टोकर, दि= 23/6/2011 रात्रि 1.35

नेता की आत्मकथा (27)

(विविध प्रकार के नेता का स्वरूप)

तर्ज :- (1. नाम तिहारा... 2. भोली मेरी माँ... 3. जीना यहाँ... 4. नगरी-नगरी...)

नेता मेरा नाम है, नेतृत्व मेरा काम है।
स्वपर के हित साधने, होता मेरा काम है।... (टेक)

कर्मभूमि के प्रारंभ में ''**कुलंकर**'' मेरा नाम है।
मानवों के हित करने से '**मनु**' मेरा नाम है।।

आदि महानेता ऋषभ हुए ''**आदिनाथ**'' शुभ नाम है।
शिक्षा संस्कृति राजनीति के आद्य प्रवर्तन काम है।।...(1) नेता मेरा...

उनके पुत्र भरत हुए प्रथम चक्री अभिराम है।
जिनके नाम पर आर्यावर्त का भारत हुआ नाम है।।

और भी तेईस तीर्थंकर जो धर्म साम्राज्य के नेता हैं।
और भी ग्यारह चक्रवर्ती राज्यशासन के नेता हैं।।...(2) नेता मेरा...

और भी अनेक अद्धचर्की हुए राजा व महाराजा हैं।
राज्यशासन के नेता हुए पाले अपनी प्रजा है।।

प्राचीनकाल में भारत में हुए लोक तंत्रात्मक नेता हैं।
लिच्छीवि आदि गणतंत्र के प्रजापालक नेता हैं।।...(3) नेता मेरा...

नेतृत्व द्धारा मानव जाति को आगे बढ़ावे सो नेता है।
सामाजिक से आध्यात्म तक होते विभिन्न नेता हैं।।

धर्म, अर्थ, काम मय राज्य होता राज्य शासन में।
धर्म मोक्ष मूलक, शासन होता है आत्मिक शासन में।।...(4) नेता मेरा...

भारत में जब राजतंत्र में न रहा सही नेतृत्व।

दीर्घकाल तक गुलाम रहा भारत जैसा प्रभुत्व।।

राणा प्रताप शिवाजी तथा लक्ष्मीबाई के नेतृत्व।
मंगलपाण्डे खुदीराम बोस सुभाष चन्द्र प्रभुत्व।।...(5) नेता मेरा...

विवेकानन्द अरविन्द दयानन्द प्रभुत्व।
लाल-बाल पाल गाँधी सावरकर के नेतृत्व।।

भारत पुनः आजाद हुआ, तोड़ पराधीन बन्धन।
ऐसा है मेरा काम काटे जो सबका बन्धन।।...(6) नेता मेरा...

मेरा भी जन्म विदेशों में होता विविध रंग रूप में।
कन्फूसियस, कार्लमॉर्क्स, वासिंगटन आदि रूप में।।

लिंकन, आब्राहिम, लथुरकिंग, मंडेला आंग सानसू हैं।
लोकतंत्र व समाजवाद, इनकी महान् देन है।।...(7) नेता मेरा...

मेरे नाम पे आज कलंक, लगाये इण्डियन नेता हैं।
लोक सेवक बनके आज, बने तानाशाही नेता हैं।।

भ्रष्टाचार व स्वार्थसिद्धि के, आज पुरोधा नेता हैं।
देश बेचकर आज बने हैं राष्ट्र के सर्वोच्च नेता हैं।।...(8) नेता मेरा...

''कनकनन्दी'' तो काव्य द्वारा, जगाये भारतीय आत्मा को।
भारत जगकर विश्वगुरु बने, दे नेतृत्व विश्व को।।...(9) नेता मेरा...

टोकर 20/6/2011 मध्यान्ह 3.28

मृत्यु की आत्मकथा (28)

(मृत्यु की विभिन्न अवस्था तथा अमृतावस्था)

राग :- (शायद मेरी शादी...)

तर्ज :- (1. जय जिनवाणी महिमा न्यारी... 2. जय हनुमान ज्ञान गुण...)

मैं हूँ मृत्यु सबसे निराली, सबसे निराली मेरी शान (ज़ान)।

संसारी का अन्तिम सत्य, परलोक गमने या मोक्ष प्रयाण।।...

जब जन्म का प्रारंभ होता, तत्काल मेरा होता जनम।
प्रति समय मेरा होता जनम, जिसे कहते हैं आवित्चीमरण।।...(1) मैं हूँ...

समस्त आयुकर्म नाश पर, तब होता है तद्भवमरण।
तद्भवमरण भी दो प्रकार है, सकाल मरण या अकाल मरण।।...(2) मैं हूँ...
देव-नारकी भोगभूमिज व चरम-उत्तम शरीर धारी।
इनके अकाल मरण न होता, दोनों मरण सर्व संसारी।।...(3) मैं हूँ...

विष वेदना व रक्तक्षय या भय संक्लेश हो शस्त्र प्रहार।
श्वासरोध या अनाहार से, संभव होता मरण अकाल।।...(4) मैं हूँ...

भुज्यमान आयुकर्म नाश से, समय पे हो सो सकाल मरण।
विषादि कारण समय पहले, जो हो सो है अकाल मरण।।...(5) मैं हूँ...

हर समय एक निषेक क्षय से, जो मरण हो सो सकाल मरण।
एक समय में विषादि कारण, सर्वायु नशे सो अकाल मरण।।...(6) मैं हूँ...

मरणान्तर कर्मानुसार भावी गति का होता है जनम।
जनम के साथ मरण प्रारंभ, जिसे कहते हैं संसार भ्रमण।।...(7) मैं हूँ...

मेरे वश में समस्त संसारी, भयाकुल रहे सुर असुर।
स्वकर्मानुसार मुझे बुलाते, मेरा इसमें क्या है कसूर।।...(8) मैं हूँ...

जैसे बोयेंगे वैसा पायेंगे, मेरा शासन है कर्मानुसार।
रोने, धोने गाली देने से मेरे दिल में न कुछ होता संचार।।...(9) मैं हूँ...

टोना टोटका बलिदान से भी, मुझमें न होता दया संचार।
निर्भीक, संयमी वीतरागी से मुझमें होता है भय संचार।।...(10) मैं हूँ...

मेरे भय से अस्तित्त्व में आये, अस्त्र अग्नि व अंग रक्षक।
ढाल दुर्गादि शिस्त्राण व कवच सैनिक यान वाहन (वाहक)।।...(11) मैं हूँ...

पूजा पाठादि यंत्र मंत्रादि, दान धर्म व यज्ञ विधान।

औषध, रसायन, प्राणायाम, योगासन, यम नियम, व ध्यान विधान।।...(12) मैं हूँ...

भोगभूमि में यह सब नहीं थे, मेरे भय से थे वे अनजान।
असि, मसि, कृषि, वाणिज्य शिल्पादि, मेरे भय से भी उपज जान।।...(13) मैं हूँ...

मेरे भय से या जन्म लोभ से, अप्रभावी जो आध्यात्म वीर।
स्व आत्मा में ही निवास जिनका, उनको न कर सकूँ प्रहार।।...(14) मैं हूँ...

उनके अन्तिम मरण से वे हो जाते हैं अजरामर।
जिसे कहते हैं अमृतावस्था, जन्म-मरण से परे संसार।।...(15) मैं हूँ...

अक्षय अव्यय ज्ञानानन्दमय, अनन्त वीर्य का होता भण्डार।
''कनकनन्दी'' द्वारा बखान किया, वहाँ न होता मेरा संचार।।...(16) मैं हूँ...
टोकर, दि= 25/6/2011, मध्यान्ह 1.56

आत्मानुभवी की आत्मकथा (29)

(मेरा लक्ष्य एवं अनुभव संसार की प्रवृत्ति) (आत्मानुभव की महिमा)

राग :- (1. ज्योति कलश छलके... 2. वन्द्य चरण जिनके...)

धन्य धन्य अनुभव!... धन्य धन्य स्वानुभव!...
मैं ही मेरे रूप/(सुख) को पाऊँ, मैं ही मेरे गुण गाऊँ ऽऽऽ... (टेक/स्थायी)

आत्मानुभव की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का दर्शन/(आनन्द) पाऊँ
क्षण क्षण है निज के ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (1)

स्व-पर भेद-विज्ञान को पाऊँ, आत्मिक सुख का रस जो पाऊँ
समतामय निज के ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव (2)

आत्मानुभव से मोह को काटूँ, क्रोध मान माया लोभ को छाटूँ
विभाव भाव के ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (3)

सर्वजीव में जिनेन्द्र दर्शन, किसी के प्रति न क्रूर प्रदर्शन
समतामय सब में ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (4)

बाह्य वस्तु में ममत्व अभाव, शुद्धात्मा में भाव का प्रभाव
भेद-विज्ञान भाव में ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (5)

दुर्गुणों का परिज्ञान तो होता, दुर्गुणी से घृणा भाव न होता
भेद विज्ञान बल से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (6)

सधर्मी विधर्मी कुधर्मी जानूँ, अधर्म का पूर्ण विनाश चाहूँ
भावात्मक स्तर के ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (7)

अनात्म वस्तु का प्रयोग भी करूँ, साधन स्वरूप ग्रहण भी करूँ
अनासक्ति भाव से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव (8)

आवश्यकता से प्रवृत्ति करूँ हूँ, निवृत्ति निमित्त प्रवृत्ति करूँ हूँ
नय सापेक्ष दृष्टि से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव (9)

निश्चय-व्यवहार नयों को भी मानूँ, चारों निक्षेपों की स्वीकारूँ
अनेकान्तमय से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (10)

शरीर सापेक्ष व्यवहार करूँ, चतुः आयाम समन्वय करूँ
आत्म साधन हित में ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (11)

गुरु-शिष्य सहयोग निभाऊँ, विश्वशान्ति की भावना भाऊँ
आध्यात्मिक भाव से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (12)

ख्याति-पूजा से दूर ही रहूँ, लौकिक लाभ को कभी न चाहूँ
हो सहज भाव से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (13)

उपकार दृष्टि से मैं समझाऊँ, जग न समझे कैसे बताऊँ?
स्वार्थदृष्टि जग में ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (14)

मेरी भावना को अन्य न जाने, भौतिक लाभ को सब कुछ माने
जाना हूँ अनुभव से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (15)

इसलिये मेरी निष्पृह वृत्ति, जग को लगे अजीब प्रवृत्ति
जाना हूँ अनुभव से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (16)

मेरा ही भाव मैं नित/(सदा) चाहूँ, 'कनकनन्दी' मैं भावना भाऊँ
भाव पवित्र से ऽऽऽ...2... धन्य धन्य अनुभव! (17)

टोकर, दि=23/6/2011, मध्याह्न प्रायः 3.00

भूख की आत्मकथा (30)

(भूख का स्वरूप एवं उसकी शान्ति के सत्-असत् उपाय)

राग :- (1. शायद मेरी शादी का सवाल... 2. जय जिणवाणी महिमा न्यारी... 3. जय हनुमान ज्ञानगुणसागर...)

मैं हूँ भूख सबसे निराली, सबसे निराली मेरी शान/(जान)
प्राणी जगत् के प्रेरक शक्ति जिससे संचालित उनकी जान। (टेक)

चारों संज्ञा में मैं प्रधान, मेरी शान्ति हेतु प्रयत्नवान्।
असिमसिकृषिवाणिज्य शिल्पादि, मेरे हेतु जनम जान।। (1)

भ्रूण से ही मेरी शान्ति हेतु जीव करता है यत्न महान्।
जिससे आहार ग्रहण के द्वारा, पोषण करता अपना प्राण।। (2)

कवल, लेपओजादि भेद से, मेरा रूप है दश प्रकार।
निगोदिया से देवपर्यन्त, सब के अन्दर मेरा संचार/(संसार) (3)

भोजन व्यञ्जन मिष्टान्न आदि का, मेरे निमित्त से हुआ इज़हार,
वर्तन चूल्हा से पाकशास्त्र तक, मेरे संसार का हुआ विस्तार।। (4)

गृहरसोई से होटल तक मेरे, साम्राज्य का हुआ विस्तार।
गृहबगिया से कृषि उद्योग भी, मेरी आपूर्ति से होते संचार।। (5)

भूखे भजन न होय गोपाल, ले तो अपनी कंठीमाल।
सामान्य प्राणी से साधुसंत भी, मेरी शान्ति हेतु यत्नाचार।। (6)

खाने के लिए अज्ञानी जीये हैं, नैतिक खाये (है) जीने के लिए।
साधना हेतु भोजन करे, आत्मसाधन हेतु जीवन जीए।। (7)

''बुभुक्षु किं न करोति पापं'' मेरे कुप्रभाव से हुआ जनम।
मेरी तृप्ति हेतु अनेक जीव, करते रहते है कुकरम।। (8)

मानव भी मेरी संतुष्टि हेतु, करते है तामसिक भोजन।
भक्ष्य अभक्ष्य का ज्ञान बिना वे करते हैं अण्डा-मांस भक्षण।। (9)

जिससे वे पापी रोगी होकर, जीवन को बरबाद करे (है)।
मृत्यु अनन्तर नकर में जाकर, भुख प्यासमय जीवन जीये (है)।। (10)

इसलिए मानव! सात्विक शाकाहार, करो है न्याय से अर्जित कर।
अन्याय अर्जित शाकाहार भी, मांसाहार सम नरक द्धार।। (11)

यथा भोजन तथा विचार, यथा विचार तथा आचार।
इसलिए मेरी तृप्ति हेतु भी, कभी न करो पापाचार।। (12)

कनकनन्दी की लेखनी द्धारा, मैंने वर्णन किया मेरे विचार।
पेट को पापी मत बनाओ, पावन बन करो अमृताहार।। (13)

टोकर, दि= 25/6/2011, सायं 5.55

न्यायाधीश की आत्मकथा (31)

(योग्य न्यायमूर्ति एवं अयोग्य न्यायमूर्ति का स्वरूप)

राग :- (1. नगरी-नगरी... 2. शायद मेरी... 3. पावन है...)

मैं हूँ न्यायमूर्ति न्याय करना है मेरी सहज वृत्ति
अपना-पराया, धनी-गरीब बिन मम सहज प्रवृत्ति... (टेक/स्थायी)

कर्मभूमि के प्रथम चरण में मेरा पहला जन्म हुआ
'**मनु**' रूप में मेरा सम्बोधन सबसे पहले प्रसिद्ध हुआ
'**हा**' '**मा**' '**धिक**' रूप में वाचनिक, दण्ड से प्रारम्भ हुआ
दोषानुरूप से दण्ड विधान, चिकित्सा समान प्रयोग किया... (1)

प्रथम श्रेष्ठ न्यायाधिपति में 'ऋषभ' रूप में प्रसिद्ध हुआ

भरत चक्री रूप में ऋषभ के पुत्र स्वरूप में प्रगट हुआ
तभी से अभी तक मैं करोड़ों, न्यायमूर्ति रूप न्याय दिया
राजतन्त्र से लोकतन्त्र तक, देश-विदेश में न्याय किया... (2)

राजतन्त्र में स्वयं राजा ही, मुख्य न्यायाधीश होता था
मन्त्री, पुरोहित, न्यायमूर्ति सह, निर्णय स्वयं ही लेता था
अभयकुमार, विक्रमादित्य आदि, मेरा श्रेष्ठ न्यायिक रूप है
सत्यनिष्ठ निष्पक्ष रूप से निर्भयता से न्याय स्वरूप है... (3)

न्यायानुसार स्वयं को या स्वजन को भी दण्ड मैं देता हूँ
लोभ, राग, द्वेष, ईर्ष्या मोहवश पक्षपात मैं न करता हूँ
इसलिए मुझे धर्मराज, न्यायाधीश न्यायमूर्ति कहते
दण्डाधिकारी, न्यायाधिपति या न्यायकर्त्ता भी मुझे कहते... (4)

मेरे कारण भी समाज राष्ट्र में, न्याय-नीति रक्षा होती
सुख समृद्धि सदाचार शान्ति समता निर्भयता होती
मेरे बिना ये सम्भव न होंगे, 'मत्स्य न्याय' का होगा प्रसार
जंगली राज्य का विस्तार होगा, दुर्बल सज्जन का होगा संहार... (5)

हाय रे! दुर्भाग्य मेरे नाम पर, कुछ पापी होते हैं न्यायधीश
न्याय के नाम पर अन्याय करते, मेरी शुचिता का करते विनाश
धन, मान, प्रसिद्धि के हेतु अथवा स्वार्थ या पक्षपात से
राग-द्वेष या मोह अज्ञान से अथवा दबाव रूढ़ कानून से... (6)

करते जो फैसला अविवेकी, सत्य-तथ्य- न्याय से विपरीत
सच्चे न्याय की हत्या करके, करते निर्दोष को दण्डित
स्वतन्त्र भारत में अभी भी चलते, विदेशी शासक/(गुलाम भारत) के कानून
वकील प्रायोजित झूठे साक्षी भी, आधारित फैसला हेतु कानून... (7)

इसलिए तो फैसला भी अति देरी से होता है भारत में
मुकदमों का पहाड़ लगा है आध्यात्मिक भारत में

कर्त्तव्यनिष्ठा से न्यायालय यदि सक्रिय होता है कभी-कभी
प्रभावशाली दोषी आरोप लगाते हैं न्यायालय न होता ऐसा कभी.. (8)

विधायिका व कार्यपालिका में, चलता अभी है जंगली राज
सत्य-न्याय व समता बिना भारत में चलता बल का राज/(मत्स्य का राज)
इसलिए मेरा सत्य रूप का अति आवश्यक इस देश में
मम स्वरूप बताने हेतु 'कनकनन्दी' का प्रयास इस रूप में... (9)

सेमारी, दि= 20/7/2011, प्रातः 8.25

(वर्तमान के बच्चों की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा)
स्व माता-पिता से बच्चों की करुण प्रार्थना (32)

(स्व माता-पिता के अत्याचार से स्व-रक्षा के लिए बच्चों की उनसे ही प्रार्थना)

राग :- (बाबुल की दुआएँ लेती जा...)

हे मेरे मात-पिता मुझे सुख शान्ति से जीने देना।
बनूँ या न बनूँ मैं धन्ना सेठ मुझे अच्छा तो बनने देना।... स्थायी...

मेरे पूर्व के कर्मानुसार तुम्हारे घर में मैं आया।
संयोग बना आपका मुझसे अब सत् विकास करने देना।
माता तो ममतामयी होती पिता जो करे पावन जीवन।
सुख दुःख में जो साथ देते वे ही कहलाते कुटुम्बी जन।
उभयकुल दीपिका सुपुत्री बनकर जब मैं गर्भ में आई।
गर्भ में ही मुझे तुम क्यों मारो ऐसी मेरी क्या गलती हुई।
दैवात् यदि जन्म भी मेरा हुआ पुत्र या पुत्री के रूप में।
अबोध शिशु वय में ही क्यों दबाव डालते हो मुझमें।
शिरीष कुसुम सम अति कोमल मेरा है यह छोटा तन।
मक्खन से भी अति कोमल है मेरा यह नन्हा भोला मन।
दो वरष की वय में ही मुझे, क्यों भेजते हो पाठशाला।
तुम्हारे सानिध्य बिना वह, लगे है जैसे ही बन्दीशाला।

पानी के बिना यथा मत्स्य, तड़प-तड़प कर मरता है।
तुम्हारे बिना मैं भी स्कूल में जीते जी ही मरता हूँ।
मास्टर की है डाँट पड़ती, रसविहीन भी पढ़ूँ है पाठ।
गृहकार्य की घानी में सदा, पीसता रहूँ दिन व रात।
आपकी स्वार्थाकांक्षा के बन्दीगृह में सदा मैं कैद हूँ।
पिञ्जराबद्ध पक्षी के सम, मुक्त भाव से रहित हूँ।
वह है बन्दीगृह आपका मैं बनूँ सबसे टॉपर।
परीक्षा में भी अब्बल रहूँ, प्रतियोगिता में रहूँ सुपर।
नाच व गाना में रहूँ टॉपर, वाद-विवाद व मॉडल में।
हीरो-हीरोईन सम बनूँ मैं सदा, आगे ही रहूँ सब में।
इसी बन्दीशाला के अति योग्य, जब मैं न बन पाता हूँ।
प्रताड़ना, निन्दा, उपेक्षा द्वारा, विभिन्न दण्ड सहता हूँ।
जिससे मैं भारी डिप्रेशन, व टेन्शन सदा भोगता हूँ।
असहनीय होने पर मैं आत्महत्या कर छूटता हूँ।
गत दशक में बारह प्रतिशत (12%) तक मेरी आत्महत्या बढ़ी।
विकसित पूर्व किशोर कली की आत्महत्या है बढी।
दशलाख किशोरों में हाय! नौ आत्महत्या करते हैं।
तीन वर्ष में सोलह हजार छात्र आत्महत्या करते हैं।
अहिंसक देश भारत के आज विद्यार्थी ये कृत्य करते हैं।
जिस देश के बच्चे भी देखो!, आध्यात्मिक ऊँचाई पाते थे।
मैं हूँ विशाल वृक्ष के अंकुर, स्वेच्छा से विकसित होने दो।
स्वार्थ के संकीर्ण गमला के मध्ये मुझे नहीं रोपने दो।
मैं हूँ कोमल सुवास कली, मुझे ही स्वयं खिलने दो।
खिलने से पहले मसलकर, निर्दयता से मरने न दो।
'कनकनन्दी' के लेखन द्वारा, प्रकटा यह मेरा निवेदन।
मेरे माता-पिता कृपा करके, स्वीकार करो मेरा आवेदन।

सेमारी, दि=2/8/2011, रात्रि 12.30

परिशिष्ट

स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर संभव

(आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संघ की नियमावली)

1. संघ में चातुर्मास, केशलोंच, (दीक्षा जयन्ती, आचार्य पद जयन्ती, जन्म-जयन्ती आदि नहीं मनेगी) की आमंत्रण पत्रिका नहीं छपेगी। वैसे गुरुदेव इन पत्रिकाओं को पहले से ही छपवाने के पक्ष में नहीं थे, अगर श्रावक अपनी स्वेच्छा व भक्ति से चातुर्मास की पत्रिका छपवाते भी हैं तो गुरुदेव संघस्थ उनको नहीं भेजेंगे, श्रावक ही भेजेंगे। इसलिए सूचना हेतु सामान्य व कम मात्रा में ही श्रावक पत्रिकाएँ छपाये। संगोष्ठी, शिविर, दीक्षा-महोत्सव आदि विशेष कार्यक्रम की पत्रिका के लिए उपर्युक्त प्रावधान नहीं है।

2. प्रवचन-विधान/पंचकल्याणक/मठ-मन्दिर-मूर्ति निर्माण/वेदी प्रतिष्ठा/शिविर/संगोष्ठी/साहित्य प्रकाशन/देश-विदेश में धर्म प्रचार कार्य/विश्व-विद्यालयों में शोधकार्य/विश्व-विद्यालयों में आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना इत्यादि कार्य पहले से ही स्वेच्छा, सहजता-सरलता से होते थे तथा आगे भी होंगे।

3. जिससे श्रावक पर अधिक आर्थिक बोझ पडता हो ऐसे कार्य स्वयं श्रावक अपनी शक्ति-भक्ति स्वेच्छा से करते हैं तो स्वयं करें, संघ ऐसे कार्यों को करने हेतु दबाव नहीं डालेगा।

4. आचार्य भगवन् की अनुमति के बिना संघ के कोई भी सदस्य (साधु/साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी-श्रावक) किसी भी प्रकार की वस्तु श्रावक से नहीं माँगेंगे और न आदेश देंगे।

5. किसी भी प्रकार की बोली हेतु संघ दबाव नहीं डालेगा।

6. संस्था के विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आवश्यकता के बिना संघ में नहीं संस्था में ही रहेंगे।

7. संकीर्ण पंथवादी, अर्थलोलुपी, अयोग्य, अनुशासनविहीन, अविनयी, गृहस्थ, विद्वान, पंडित, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी, साध्वी, साधु (स्व या परसंघ) के लिए भी संघ में अनुमति नहीं है। उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्ति से लेकर साधुओं को संघ में स्वीकार्य करने का कार्य आचार्य गुरुदेव के निर्णय पर ही होगा।

8. संघ में संकीर्ण मतवाद, पंथवाद, परम्परावाद, संतवाद, ग्रन्थवाद, जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे उदार सहिष्णु, सनम्रसत्यग्राही, अनेकान्तमय वैज्ञानिक पद्धति से स्व-पर-विश्वकल्याणकारी विचार-व्यवहार-कथन लेखन-अनुसंधान-प्रचार-प्रसार को ही महत्व दिया जा रहा है, आगे भी दिया जायेगा।

9. जिस द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, परिस्थिति, समाज में उपर्युक्त उद्देश्य एवं कार्य सम्पन्न होंगे ऐसे क्षेत्रादि विशेषतः योग्य ग्रामादि, शहरादि में ही संघ का विहार निवास, चातुर्मास अधिक से अधिक होगा।

10. संघ के सभी सदस्य स्वावलम्बी बनेंगे यानि अपना कार्य स्वयं करेंगे तथा स्वानुशासी यानि संघ के नियम-कानून-अनुशासन का पालन करेंगे एवं प्रत्येक कर्त्तव्य समय पर करेंगे।

11. स्वास्थ्य की विशेष समस्या के कारण अपवाद से जो उपचार के रूप में पंखादि, औषधि आदि का प्रयोग होता है उस समस्या का समाधान होने के बाद उसका प्रयोग नहीं करना।

12. संघस्थ सभी सदस्य परस्पर में वात्सल्य, सेवा, सहयोग, स्थितिकारण, उपगूहन से युक्त होंगे।

I आहार सम्बन्धी नियम-

1. रसोई गैस से बना भोजन-पानी-दूध का त्याग-

करोड़ों त्रस जीवों के शरीर से निर्मित, असंख्य स्थावर जीवों के हिंसाकारक,विस्फोट से घर के जलने से लेकर अनेक नर-नारियों के मृत्यु के कारक तथा अनेक रोगों के कारणभूत गैस से निर्मित भोजन आदि का त्याग का नियम है। विस्तृत विवरण आचार्य कनकनन्दी के साहित्यों से प्राप्त करें।

2. मटर, टमाटर, ग्वारफली, बेसन, उड़द, मसूरदाल, तुन्दरू (टिंडूरी,टोंडले), सेंगरी (मोगरी), तरबूज, खरबूज, सेमफली, लाल मिर्च तेल आदि का त्याग।

3. शक्कर, नमक आदि का कम प्रयोग।

4. अधकच्चा-अधपका भोजन अभक्ष एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने से त्याग।

5. कच्चा खट्ट फल, खट्ट दही-मट्ठ आदि त्याग।

II योग्य निवास- स्वास्थ्य रक्षा, ध्यान, अध्ययन, अध्यापन, साहित्य-लेख-कविता आदि लेखन, धार्मिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी, देश-विदेश में धर्म की प्रभावना, विश्राम-शयन, आहार क्रिया आदि के योग्य स्थान-ग्राम-नगर में आचार्य श्री कनकनन्दी ससंघ का विहार, प्रवास, चातुर्मास आदि होंगे।

III शौच क्रिया योग्य स्थान- साधुओं के मूलगुण स्वरूप प्रतिष्ठान समिति (शौचक्रिया), प्रातः- सन्ध्या भ्रमण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान आदि के लिए योग्य प्रदूषणों से रहित-शान्त-स्वच्छ स्थान (निवास स्थान से 2-3 कि.मी. दूर तक) सहित ग्राम-नगरादि में श्री संघ सहित आचार्य श्री निवास-चातुर्मास आदि करेंगे।

IV आचार्य कनकनन्दी की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याः-

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव की विदग्ध अम्लपित्त (हाईपर एसिडिटी) शारीरिक गर्मी, एलर्जी के कारण उपरोक्त योग्य भोजन, निवास

स्थान आदि की आवश्यकता है अन्यथा आचार्य श्री की स्वास्थ्य समस्याएँ (वमन (उल्टी-कै) चक्कर, बेहोशी, हैजा, पीलिया, सुस्ती आदि) हो जाती है। आचार्य श्री शीत-ऋतु को छोडकर अन्य समय में गरम करके ठंडा किया हुआ पानी, दूध, भोजन आदि आहार में लेते हैं।

V विविध ज्ञानार्जन के नियमः-

अनुशासन, समयानुबद्धता, समय की कमी के कारण धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, भाषा, व्याकरण, नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान, प्रूफ रीडिंग, प्रबन्धन आदि का अध्ययन-अध्यापन-प्रशिक्षण, चर्चा, शंका समाधान आदि सामुहिक रूप से कक्षा, शिविर, संगोष्ठी आदि में संघ में होता है। विशेष परिज्ञान आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं।

VI स्वास्थ्य सम्बन्धी सामुहिक प्रशिक्षण के नियमः-

स्वास्थ्य रक्षा के नियम, रोग दूर करने के उपायभूत आदर्श आहार, विचार, दैनिकचर्या, प्राणायाम, योगासन, ध्यान आदि का प्रशिक्षण संघ में सामूहिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी में ही दिया जाता है तथा आचार्य श्री के विभिन्न साहित्यों में भी वर्णित है किन्तु व्यक्तिगत नहीं दिया जाता है अतः कक्षा आदि से लाभान्वित हों परन्तु व्यक्तिगत न चाहें, न ही पूछें न ही कुछ मांगे। विशेष परिज्ञान आचार्यश्री के साहित्यों से प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसा ही अन्यान्य समस्या/शंका-समाधान सम्बन्धी जान लेना चाहिए।

आचार्य श्री कनकनन्दी- साहित्य कक्ष की सूची

भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में साहित्य कक्ष की स्थापना अभी तक हो चुकी है, आगे प्रायः 100 वि.वि. में स्थापना होगी। विश्व विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर साहित्य स्थापित होने की सूची-

1. श्री दि. जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, कविनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
2. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, शास्त्रीनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
3. श्री दि. जैन मन्दिर, दादरी गाजियाबाद (उ.प्र.)
4. श्री दि. जैन मन्दिर, ऐल्लकजी, माण्डोला, गाजियाबाद (उ.प्र.) (श्री विज्ञान सागर द्वारा स्थापित)
5. श्री दि. जैन मन्दिर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
6. प.पू. मुनिश्री विहर्षसागर जी
7. श्री सिद्धान्त तीर्थक्षेत्र, शिकोहपुर, गुडगाँव (हरियाणा)
8. श्री दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, वसुन्धरा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
9. श्री दि. जैन मन्दिर, शंकरपुर, शाहदरा, दिल्ली
10. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, वहलना, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
11. डॉ. (पं.) ताराचन्द्र पाटनी ज्योतिषाचार्य, 1132, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)
12. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, गोरेगाँव, मुम्बई (महा.)
13. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाइब्रेरी, सेक्शन-16, फरीदाबाद (हरियाणा)
14. श्री एल.डी.जैन, अनिल जैन, श्री महावीर भगवान् दि. जैन मन्दिर, हरिनगर, घण्टाघर, दिल्ली
15. ऋषभाञ्चल जैन मन्दिर, ध्यान केन्द्र, मोरटा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

16. श्री वासुपूज्य पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर, कांधला, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
17. श्री दि. जैन मन्दिर, सासनी, अलीगढ़ (उ.प्र.)
18. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा, शाहदरा, दिल्ली
19. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-2, शाहदरा, दिल्ली
20. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-12, शाहदरा, दिल्ली
21. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा
22. श्री दि. जैन मन्दिर, रघुबरपुरा, दिल्ली
23. श्रमती कुंकुम जैन, श्री विनोद कुमार जैन 1-3/9 कृष्णानगर, दिल्ली
24. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
25. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
26. श्री रूप कुमार जैन, ए-236, सूरजमल विहार, दिल्ली
27. श्री अनिल कुमार अग्रवाल जैन, दिलशाद गार्डन मन्दिर दिल्ली
28. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, घण्टाघर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
29. श्री दि. जैन मन्दिर, त्रिलोकधाम तीर्थ, बड़ागाँव, बागपत (उ.प्र.)
30. श्री चन्द्रवती जैन महिलाश्रम, बड़ागाँव , बागतपत (उ.प्र.)
31. श्री दि. जैन मन्दिर, सञ्जयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
32. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, मुनीम कॉलोनी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
33. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, पंचायती मन्दिर, अनुपुरा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
34. श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पुराना मन्दिर, हस्तिनापुर, मेरठ (उ.प्र.)
35. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, जनरलगंज, कानपुर (उ.प्र.)
36. श्री दि. जैन मन्दिर, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)
37. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, अशोकनगर फेज-1, नई दिल्ली
38. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली

39. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, N-10 ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली
40. श्री दि. जैन मन्दिर, नोएडा सेक्टर 29, नोएडा (उ.प्र.)
41. श्री दि. जैन मन्दिर, सेक्टर 7, अहिंसा विहार, नई दिल्ली (रोहिणी)
42. उत्तर प्रदेश भवन लाइब्रेरी, शिखरजी, जि. गिरीडीह (झारखण्ड)
43. श्री दि. जैन मन्दिर, मुंगाणा, जि. उदयपुर (राज.)
44. श्री दि. जैन मन्दिर, श्री महावीर जी पुस्तकालय, श्री महावीरजी (राज.)
45. श्री दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, चूलगिरी, जयपुर, राजस्थान
46. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, सेठी कॉलोनी, जयपुर, (राज.)
47. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, साहिबाबाद, गाजियाबाद
48. श्री दि. जैन मन्दिर, जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर, मेरठ (आ. ज्ञानमती माता जी)
49. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, जैन मोहल्ला, पानीपत (हरियाणा)
50. श्री दि. जैन मन्दिर, अहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)
51. श्री दि. जैन मन्दिर, मुन्नालाल कागजी धर्मशाला, लखनऊ (उ.प्र.)
52. श्री दि. जैन मन्दिर, विवेक विहार, शाहदरा, दिल्ली
53. श्री रतनलाल जैन लाईब्रेरी, यूसूफ सराय, नई दिल्ली
54. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर (पुराना), बड़ागाँव, बागपत
55. श्री दि. जैन मन्दिर, देवलगाँव राजा (महाराष्ट्र)
56. श्री दि. जैन मन्दिर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
57. श्री दि. जैन मन्दिर, समनेवाडी (कर्नाटक)
58. श्री दि. जैन धर्मतीर्थ (महाराष्ट्र) कचनेर के पास
59. कन्थुगिरि, आलते, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
60. अभिनन्दन साधना केन्द्र, त्रिमूर्ति, शेषपुर मोड, जिला-उदयपुर (राज.)